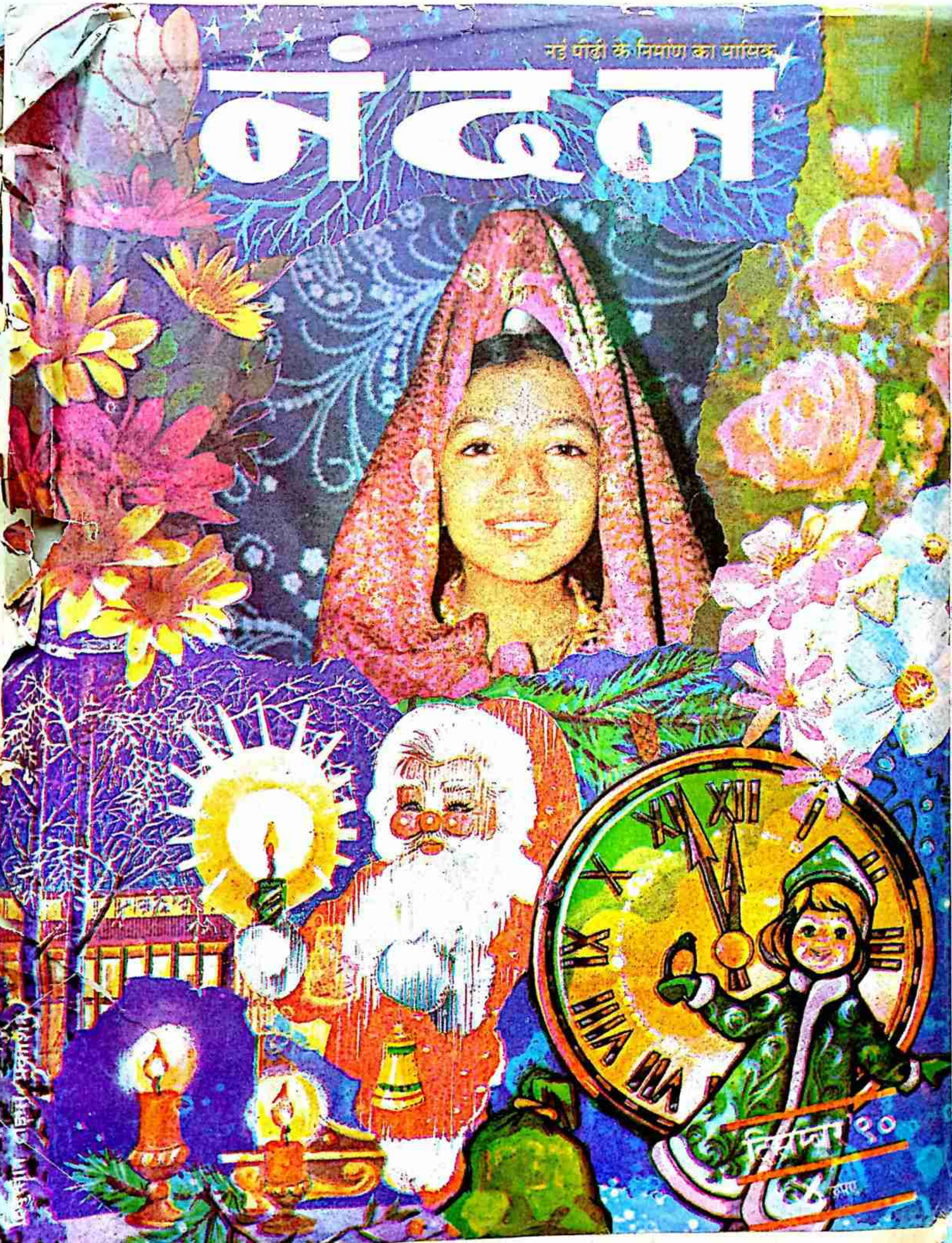

नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
दिसम्बर ९०
४ रुपए



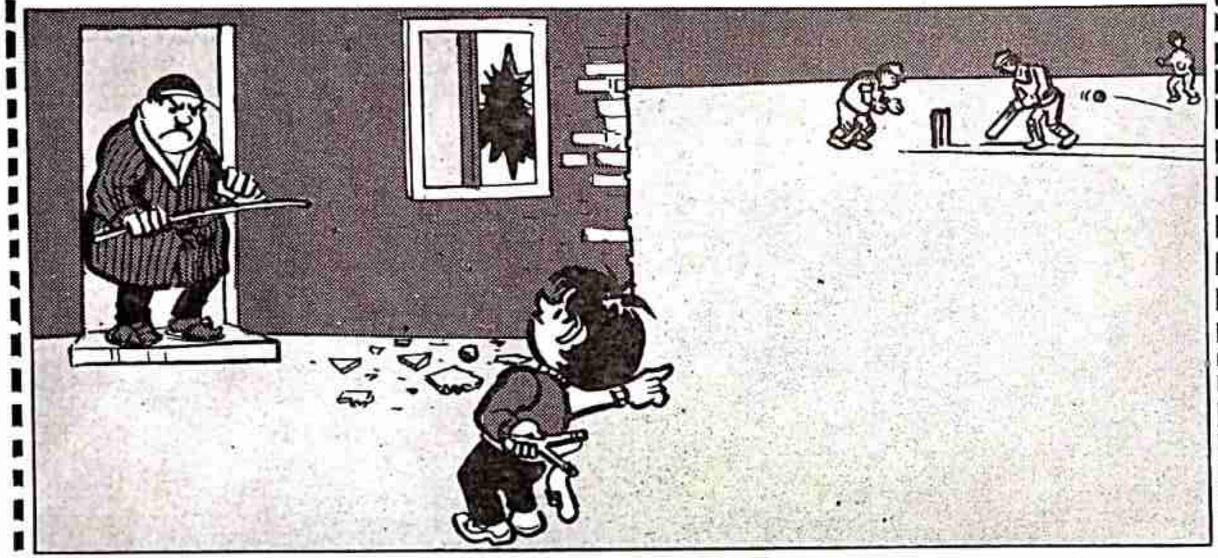
Scanned with CamScanner

डायमंड कामिक्स पेश करते हैं

"कार्टून शीर्षक प्रतियोगिता"

नीचे बने कार्टून के लिए शीर्षक लिखिए
और जीतिए 100/- रुपये का प्रथम पुरस्कार और
फैण्टम डाइजेस्ट नं. 8 के 10 मुफ्त पुरस्कार

शीर्षक के लिए जगह



नाम ________________

पता ________________

________ पिन कोड ________

अधिक से अधिक 10 शब्दों में
शीर्षक लिखें और इनाम भी जीतिए।
अपना प्रवेश पत्र 30.11.90 तक भेजें।
सम्पादक का निर्णय अन्तिम व
मान्य होगा।

परिणाम के लिए जनवरी, '91 का अंक देखें

नये डायमंड कामिक्स



डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002



इण्डाना सुपर बच्चे
अब
सुपर तेज़ बच्चों
के लिये
सुपर शक्ति
RUBIK'S CLOCK
अमित पॉल (१५ वर्ष)
रुबिक क्लॉक पज़ल का जादूगर
दीया बोहरा (८ वर्ष)
जूनियर तैराकी चैम्पियन
दिल्ली प्रदेश
सुहेल मल्होत्रा (१२ वर्ष)
जूनियर राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी
INDANA
SUPER GLUCOSE
BISCUITS
100g
INDANA
स्वाद भरे और कुरकुरे बिस्कुट
सुपर बच्चों के लिये एक सुपर बिस्कुट। सुपर ग्लूकोज़। ग्लूकोज़ के प्राकृतिक गुण... व शक्ति-स्फूर्ति से भरपूर। बच्चे इनको खाते जाते, और हमेशा आगे बढ़ते जाते।
इण्डाना सुपर ग्लूकोज़। आपके चैम्पियन के लिये।
MEGACORP 262/90 HIN

बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्भुत नॉलिज बैंक

बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले हजारों अनबूझे **'क्यों और कैसे'** किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

(छः खण्डों में)



आकर्षक गिफ्ट बॉक्स में

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जैसे ही बच्चा सोचना-समझना शुरू करता है उसमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। उसके मस्तिष्क में हजारों **'क्यों और कैसे'** किस्म के प्रश्न घुमड़ने लगते हैं। यदि उसे उचित समय पर इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं तो उसका मानसिक विकास तेजी से होता है। इसके विपरीत उचित समय पर प्रश्नों के उत्तर न मिलने पर वह विषयों को समझने के बजाय उन्हें रटने लगता है। इससे उसका मानसिक विकास रुक जाता है और वह न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी पिछड़ जाता है।

प्रश्नों में से कुछ की झलक
☐ महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? ☐ क्या दैत्याकार मनुष्य भी पृथ्वी पर रहते हैं? ☐ शनि के छल्ले क्या हैं? ☐ क्या अन्य ग्रहों से लोग पृथ्वी पर आते हैं? ☐ क्या संसार में नरभक्षी लोग भी रहते हैं? ☐ आकाश नीला क्यों दिखाई देता है? ☐ हाइड्रोजन बम क्या है? ☐ हमारे मुंहासे क्यों हो जाते हैं?

विशेषताएं

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसंद
- प्रायः सभी विद्यालयों में पुरस्कार के रूप में वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपने आप में स्वतंत्र
- सभी लाइब्रेरियों की पसंद
- प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित

विषय-वस्तु, साज-सज्जा और छपाई की दृष्टि से निश्चय ही ये पुस्तकें बालकों के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होंगी।
डॉ. सैयद असद अली, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मैं इन पुस्तकों को बाल साहित्य के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व योगदान मानता हूं। इनकी न केवल विषय-वस्तु अपितु चित्र-सज्जा भी प्रशंसनीय है।
प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.।

आधारभूत विषय

■ पृथ्वी एवं ब्रह्मांड ■ आधुनिक विज्ञान, वनस्पति एवं पशु-पक्षी जगत ■ आविष्कार एवं खोजें ■ खेल एवं खिलाड़ी ■ आश्चर्य एवं रहस्य ■ सामान्य ज्ञान ■ मानव शरीर ■ भौतिक-रसायन एवं जीव विज्ञान आदि

6 खण्डों की इस शृंखला में हैं....

- 1300 से भी अधिक बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5,00,000 से भी अधिक शब्दों की पाठ्य-सामग्री
- 1050 जिज्ञासा भरे प्रश्नों के सुबोध उत्तर



अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

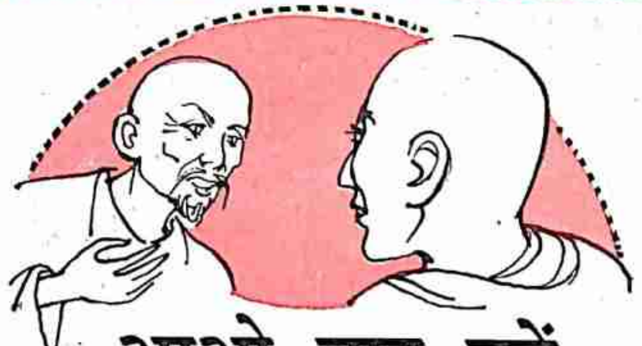
मूल्य:
पेपरबैक विद्यार्थी संस्करण : 28/-
डाकखर्च : 6/- प्रत्येक

पूरा सैट : 168/- डाकखर्च माफ

अपने निकट के बुकस्टॉल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टॉलों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता :–

पुस्तक महल,
खारी बावली, दिल्ली-110006
शो रूम : 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-2.

VAN/PM/47/88



आओ बात करें

स्वामी रामतीर्थ का नाम किसने नहीं सुना । एक बार वह जापान गए । समंदर में जिस जहाज पर यात्रा कर रहे थे, उसी पर एक जापानी बूढ़ा भी सवार था । वह काफी बूढ़ा था, कमजोर था । आंखों से कम दिखाई देता था । हाथ-पैर भी कांपते थे । लेकिन वह बूढ़ा अपना अधिकतर समय चीनी भाषा सीखने में गुजारता था ।

चीनी भाषा दुनिया की सबसे कठिन भाषा है । उसे सीखने के लिए दस-बारह साल का समय तो चाहिए ही । अच्छा अभ्यास करना हो, तो पंद्रह-सोलह बरस लग सकते हैं ।

स्वामी रामतीर्थ उस बूढ़े को देखते । देखकर सोचने लगते—'यह कब तक चीनी भाषा सीख पाएगा । खींच-खांचकर सीख भी ली, तो उसका उपयोग कब करेगा ?'

बूढ़ा बिना किसी की परवाह किए, सुबह से शाम तक चीनी भाषा सीखने में लगा रहता । रामतीर्थ उसे देख-देखकर हैरान होते । जब उनसे रहा नहीं गया, तो उसके निकट गए । कुछ देर वह खड़े रहे । बूढ़ा तो अपनी धुन में रमा हुआ था ।

बूढ़ा खांसने लगा, तभी उसकी निगाह स्वामी रामतीर्थ पर पड़ी । स्वामी जी ने उससे पूछा—"कितनी उम्र होगी आपकी, शायद नब्बे बरस ।"

बूढ़ा बोला—"तुम ठीक कहते हो मेरे भारतीय मित्र ! मैं इसी बरस, दिसम्बर में अपना इक्यानवां जन्म दिन मनाऊंगा ।"

स्वामी रामतीर्थ ने उससे कहा—"आप चीनी भाषा सीख रहे हैं शायद, जो कि बहुत कठिन है । कितने बरस इसको सीखने में लगाएंगे । आठ-दस साल में सीख भी ली, तो इसका उपयोग कब करेंगे, कैसे करेंगे ?"

बूढ़े का झुर्रियों वाला चेहरा खिल उठा । स्वामी जी से पूछने लगा—"आपकी कितनी उम्र है ?"

"करीब तीस बरस ।"—उत्तर मिला ।

बूढ़ा खिलखिलाकर हंसा, फिर चुप हो गया । कहने लगा—"तुम मेरे पोते की उम्र के हो । पर लगता है, जैसे बूढ़े होने लगे हो । मैं जब तक जिंदा हूं, कुछ न कुछ सीखता ही रहूंगा । जीते-जी एक-एक दिन का उपयोग न करूं, तो मरा ही समझो । कुछ न कुछ नया सीखते जाने का आनंद ही अनोखा है । मैं उस आनंद को छोड़ नहीं सकता ।"

स्वामी रामतीर्थ के मन में आया कि बूढ़े के पांव छू लें । पर वह संन्यासी थे। बूढ़े के चरणों में झुके, तो उसने बाहों में भर लिया । बूढ़े ने कहा—"साधु महाराज, जानने को इतना कुछ है कि उसका कोई ओर-छोर नहीं । जो नई-नई चीजें सीखता जाता है, वह युवा है ।"

बीत गया एक और बरस । हमने क्या सीखा, क्या नहीं सीखा । चारों तरफ अंधेरा अधिक है, रोशनी कम । सूर्य को हम अर्घ्य दें । रोशनी की किरणों को पकड़ने की कोशिश करें ।

'नंदन' का लोक-कथा विशेषांक बहुत पसंद किया गया । पत्र इतने आए कि सबका उत्तर देना भी कठिन । पाठकों के लिए अनोखी प्रतियोगिता इस अंक में भी है । आज ही कुछ सोचो, बनाओ और भेज दो ।

— तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती



नंदन दिसम्बर'९०
वर्ष:२७ अंक:२

कहां क्या है

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : मंजुला; एलबम : पंकज शर्मा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

तुरिया बाबा

—कविराज ओमप्रकाश

सुखदेव वैद्य का नाम मशहूर था । अभी उम्र भी कम थी, परंतु अच्छा नाम कमा लिया था । विनम्र, कुशल और दयालु । बातचीत में इतनी मिठास कि सामने वाले का मन जीत लेते ।

साधु-संतों पर उनकी अपार श्रद्धा थी । तुरिया बाबा पर वह बहुत आस्था रखते थे । तुरिया बाबा नदी तट पर धूनी रमाए बैठे रहते । कुछ दिन वहां टिकते, फिर बिना बताए कहीं चले जाते । उनके भक्त उन्हें खोजते रहते । कुछ समय बाद फिर एक दिन बाबा धूनी के सामने बैठे नजर आते ।

सुखदेव नियम से तुरिया बाबा के पास जाते । तुरिया बाबा की भी उन पर विशेष कृपा थी । एक दिन सुखदेव ने देखा, बाबा दो विदेशियों से उनकी भाषा में बात कर रहे हैं । विदेशियों के जाने के बाद सुखदेव ने पूछा— "बाबा, कुछ अपने बारे में भी बताइए ?"

बाबा कहने लगे—"मैं सरकार में ऊंचा अफसर था । कई भाषाएं जानता हूं । पिता शादी के लिए कहते, तो मैं मना कर देता । जब उन्होंने बहुत कहा, तो मैं घर छोड़कर भगवान की शरण में आ गया । तब से ऐसे ही रहता हूं ।"

—"बाबा, आपने भगवान के दर्शन किए हैं ?"

तुरिया बाबा ने कहा—"सुखदेव, तुम सड़क पर खड़े हो । यह क्यों जानना चाहते हो कि इस पर तुमसे पहले कौन-कौन चला है ? चाहो, तो चल पड़ो । मंजिल मिल ही जाएगी ।" कहकर बाबा समाधि में लीन हो गए । सुखदेव समझ गए कि बाबा ने संकेत से ही मार्ग दिखा दिया था ।

कुछ दिन बाद सुखदेव नए मकान में रहने चले गए । दो दिन बाद ही घर में चोर घुसे । सारा सामान चोरी चला गया । सुखदेव अपनी पत्नी के साथ उस रात कहीं गए हुए थे । पत्नी बहुत दुखी हुईं । वह उन्हें समझाते रहे । फिर औषधालय में आकर बैठ गए । सोच रहे थे—'अब कैसे चलेगा ? यहां से तो इतनी आय है नहीं ।' जेब में दो-चार रुपयों के अतिरिक्त और कुछ था नहीं ।

मन शांत न हुआ, तो उठकर तुरिया बाबा के पास जा पहुंचे । नमस्कार करके बैठ गए ।

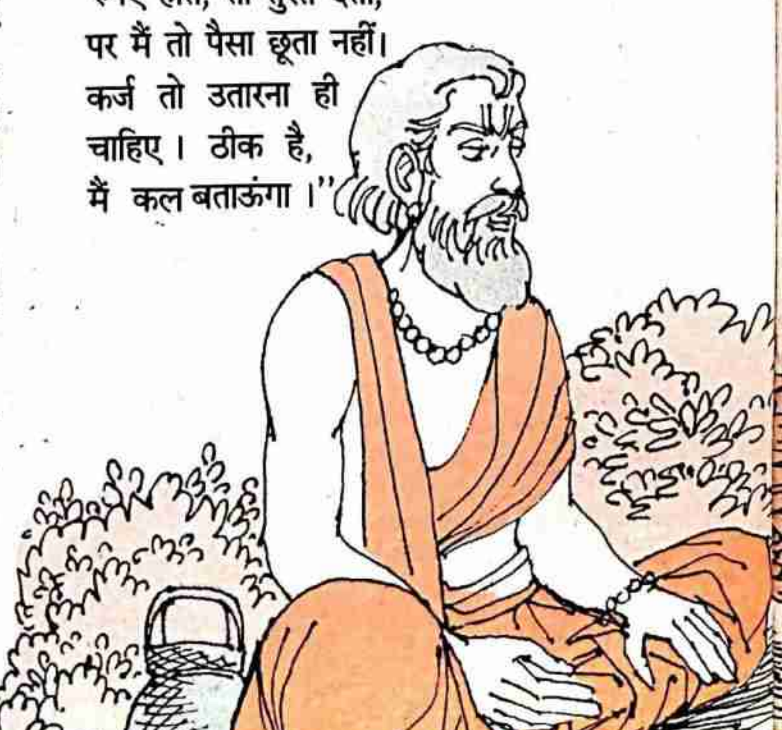
बाबा ने कहा—"रोज तेरा चेहरा ताजगी से भरा रहता है । आज रह-रहकर एक छाया आ जाती है । बता, क्या बात है ?"

अब सुखदेव चुप न रह सके । उन्होंने पूरी घटना सुना दी । बोले—"बाबा, पत्नी कुछ ज्यादा परेशान हैं । मैं उन्हें समझा-समझाकर हार गया । शायद उन्हीं की परेशानी का प्रभाव मेरे चेहरे पर भी झलक आया है ।"

बाबा ने कहा—"बात इतनी नहीं, चिंता तुझे भी है । तेरे मन पर भी बोझ है । बता, कितना पैसा देना है ?"

सुखदेव फिर चौंक गए । बाबा ने ठीक पहचाना था । उन्हें बाजार के नौ सौ रुपए देने थे । आज से ५० वर्ष पहले यह काफी बड़ी राशि थी । औषधालय से मामूली आय थी । इसीलिए यही चिंता थी कि कर्ज कैसे उतरेगा ?

उन्होंने तुरिया बाबा को सारी बात सच-सच बता दी । तुरिया बाबा बोले—"तू मेरा भक्त है । मेरे पास रुपए होते, तो तुरंत देता, पर मैं तो पैसा छूता नहीं। कर्ज तो उतारना ही चाहिए । ठीक है, मैं कल बताऊंगा ।"



सुखदेव थके-थके कदमों से लौट आए। बाबा की बात समझ में नहीं आ रही थी। रात भर सोचते रहे—'भला, बाबा क्या उपाय बताएंगे ?'

अगली सुबह सुखदेव तुरिया बाबा के पास गए। बाबा ने कहा—"मिल गया।"

"क्या मिल गया ?"—सुखदेव ने पूछा।

—"वही जिसे मैं तेरे लिए ढूंढ़ रहा था। अब ध्यान से सुन ! दो दिन बाद शाम को ठीक छह बजे तेरे पास एक व्यक्ति आएगा। क्या तू उससे नौ सौ पैंतीस रुपए मांग सकेगा ?

—"बाबा, मैं तो किसी से कुछ नहीं लूंगा।"

—"अरे पगले, वह तुझे ही ढूंढ़ता हुआ आएगा। बस, तुझे मुंह से कहना है और रुपए मिल जाएंगे।"

"बाबा, पूरी बात बताइए ?"—सुखदेव ने उत्सुक होकर कहा।

—"वह आदमी दवा के लिए आएगा। और तुझे दवा का मूल्य ९३५ रुपए मांगना होगा।"

—"बाबा, मैं एक दिन की दवा का एक रुपया लेता हूं। भला, इतनी बड़ी रकम मैं क्यों मांगूंगा। और कोई देगा भी क्यों ?"

—"इसलिए कि वह तुझे यह रकम देने के लिए बहुत दूर से आएगा।"

सुखदेव ने कहा—"बाबा, वह कौन व्यक्ति है। मैं उसे पहचानूंगा कैसे ?"

बाबा आंख बंद करके बोलने लगे—"एक लम्बे कद का आदमी। उसके दाएं गाल पर चोट का निशान है। नीचे का होंठ बहुत मोटा है। उसके साथ एक औरत है। वह दाएं पैर से लंगड़ाती है। आदमी की गोद में एक वर्ष का बच्चा है। वे एक कार से परसों शाम छह बजे औषधालय आएंगे।"



सुखदेव जितना सोचते, उलझते जाते। दो दिन बेहद उत्तेजना में बीते। तीसरे सुबह ही तुरिया बाबा की कुटिया पर जा पहुंचे। उन्हें देखकर बाबा हंस पड़े—"ज्यादा बेचैनी है ?"

"अब आपसे क्या छिपाना है ? मन चंचल हो रहा है। इसीलिए आ गया हूं।"—कहकर सुखदेव ने चरण छुए और बैठ गए।

शाम होने लगी, तो बाबा ने कहा-"चल !" दोनों रिक्शा में बैठकर औषधालय आ गए। दरवाजे के सामने चिक पड़ी थी। सुखदेव की नजरें वहीं टिकी थीं। बीच-बीच में घड़ी की ओर भी देख लेते।

राम-राम करके छह बजे। सुखदेव का हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। उसी समय एक कार दरवाजे के बाहर आकर रुकी। चिक हटाकर लम्बे कद का एक आदमी अंदर आया। उसे देखते ही सुखदेव चौंक गए। वही हुलिया—दाएं गाल पर चोट का निशान, निचला होंठ मोटा। वह गोद में एक नन्हे-मुन्ने को उठाए हुए था। तभी पीछे-पीछे एक औरत अंदर आ गई। वह दाएं पैर से लंगड़ा रही थी।

सुखदेव तो अभिभूत हो गए। तुरिया बाबा की ओर देखा—वह आंखें मूंदे बैठे थे। उन्होंने आगंतुक से कहा—"आइए।"

"आप ही वैद्य सुखदेव हैं।"—उस व्यक्ति ने पूछा।

—"हां।"

—"मैं आपसे मिलने के लिए ही टांगानिका से चला आ रहा हूं।"

"इतनी दूर से !"—सुखदेव ने आश्चर्य से पूछा।

—"हां, आना ही पड़ा। और कोई चारा न था। मैं अपने बेटे के इलाज के लिए आया हूं। पहले इसे देखकर दवा दीजिए। बाकी बातें बाद में करूंगा।"

सुखदेव बच्चे की जांच करने लगे। अब उन्होंने देखा कि तुरिया बाबा वहां नहीं हैं। न जाने कब कहां चले गए थे। वह चक्कर में पड़ गए, पर कुछ कहने का

समय नहीं था। उन्होंने औषधि घोलकर बच्चे को पिला दी। फिर नुस्खा लिखने लगे।

"यह ठीक तो हो जाएगा।"-उस औरत ने घबराए स्वर में पूछा।

"हां, हां, चिंता की कोई बात नहीं है। आपको एक सप्ताह इलाज के लिए रुकना होगा। बच्चा जल्दी ही स्वस्थ हो जाएगा।"—सुखदेव ने दिलासा दिया। फिर पूछा—"अब बताएं, पूरी बात।"

उस व्यक्ति ने कहा—"मेरा नाम लक्ष्मण है। अफ्रीका के टांगानिका में व्यापार करता हूं। कुछ समय पहले मेरा बेटा बीमार हो गया। कई डाक्टरों को दिखाया, पर कोई फायदा न हुआ। हम परेशान हो उठे।"

तभी स्त्री कह उठी—"एक रात मैं सो रही थी, तो सपने में मुझे एक साधु दिखाई दिए। वह कह रहे थे—'बच्चे को इलाज के लिए भारत ले जाओ। वहां दिल्ली में सुखदेव नामक वैद्य रहता है। उसके इलाज से तुम्हारा बच्चा ठीक हो जाएगा।' उन्होंने आपके औषधालय का पता भी बताया। इसके बाद मेरी नींद खुल गई। देखा, तो बच्चे के पिता पास खड़े थे।"

वह व्यक्ति बोला—"आप आश्चर्य करेंगे। पर मुझे भी हूबहू वैसा ही सपना दिखाई दिया था। मैं पत्नी को यही बताने आया था। दोनों को एक ही समय, एक-सा सपना दिखाई दिया। उसके बाद दो बार वही साधु फिर सपने में दिखाई दिए। तब हमने निश्चय किया कि भारत चलना चाहिए। बस, इस समय विमान से उतरकर पूछते हुए चले आ रहे हैं।"

कमरे में मौन छा गया। सुखदेव का दिमाग चक्कर खा रहा था। बात समझ से परे थी। उन्होंने दवा बनाकर लक्ष्मण को थमा दी। उसने पूछा—"कितने रुपए दूं?"

सुखदेव को कुछ भी कहते संकोच हुआ, पर कानों में आवाज आ रही थी—'९३५' सुखदेव सोच रहे थे—'इस दवा के मैं दस रुपए से अधिक नहीं ले सकता।' पर अपने को रोकते-रोकते भी उनके मुंह से निकल गया-"९३५ रुपए दे दीजिए।"

लक्ष्मण ने तुरंत रुपए गिनकर मेज पर रख दिए। बोला—"आपकी दवा से इतनी-सी देर में बच्चे को आराम मालूम देने लगा है। धन्यवाद।"

"कल इसे दिखाने ले आएं।"—सुखदेव ने कहा। लक्ष्मण और उसकी पत्नी नमस्कार करके बाहर निकल गए। फिर कार चली गई। तभी आवाज आई—"काम बन गया?"

सुखदेव बुरी तरह चौंक पड़े। देखा, तुरिया बाबा अपनी जगह बैठे हैं। "बाबा, अभी तो आप थे नहीं। कब कहां से....." उन्होंने आश्चर्य से कहा।

"अरे, मैं तो यहीं था, पर उसके सामने जाना ठीक नहीं था, नहीं तो मेरे पीछे पड़ जाता। फिर तुझे ९३५ रुपए कैसे मिलते? इसीलिए आड़ में हो गया था।"—कहकर बाबा जोर से हंस पड़े।

"लेकिन औषधालय के कमरे में कोई छिपने का तो स्थान था नहीं फिर..."

"तुरंत जाकर लेनदारों के ९०० रुपए दे आओ।"—बाबा बोले।

—"बाबा, मेरे एक बार मांगते ही उसने पैसे दे दिए।"

"हां, मुझे पता था, वह देगा। भारत में तो इस समय एक सप्ताह की दवा के इतने पैसे देने वाले कम ही हैं। खैर, तुम यह चर्चा छोड़ो। मैं जा रहा हूं।"—कहकर तुरिया बाबा बाहर चले गए।

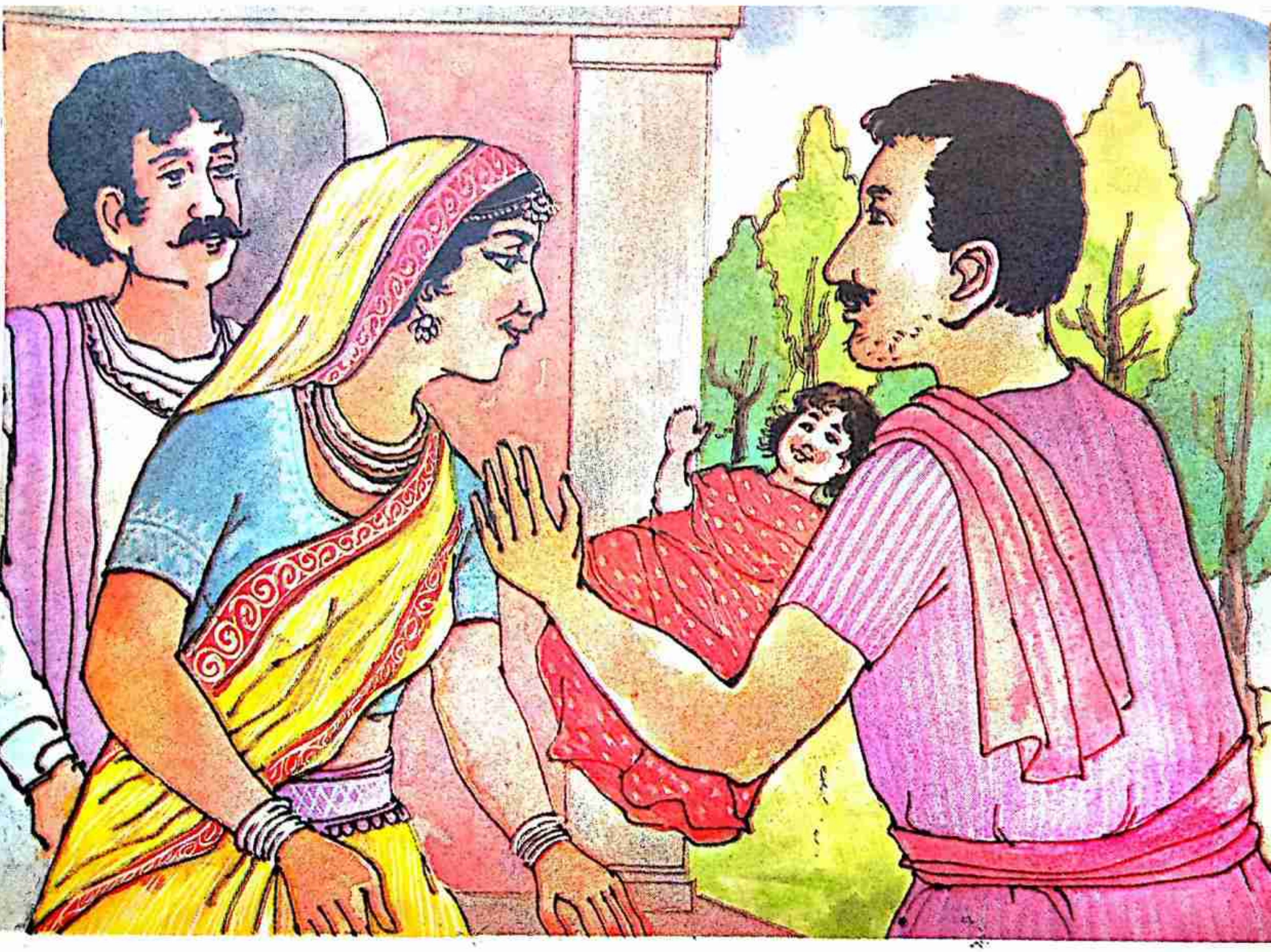
सुखदेव अपनी कुर्सी पर बैठे रहे। रुपए सामने पड़े थे। यह सच था, पर बात फिर भी समझ से परे थी। एकाएक मन में आया—'तो क्या लक्ष्मण और उसकी पत्नी को सपने में दिखाई देने वाले तुरिया बाबा ही थे? वे लोग उन्हें पहचान न लें, इसीलिए यहां बैठे-बैठे भी बाबा अदृश्य हो गए थे।'

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए सुखदेव बेचैन हो उठे। वह तुरंत तुरिया बाबा की कुटिया की तरफ चल दिए। वहां पहुंचे, तो अंधेरा हो चुका था। कुटिया सूनी पड़ी थी। वहां कोई नहीं था। उसके बाद सुखदेव जब-जब कुटिया पर गए, उन्हें तुरिया बाबा न मिले। न जाने कहां चले गए थे। ●



एशियाड में पहला स्वर्ण पदक

विजेता भारतीय कबड्डी टीम



डिबिया के भीतर

—टी. पक्षिराजन

प्राचीन काल में पूम्पुहार प्रसिद्ध बंदरगाह था । वहां के व्यापारी दूर-दूर तक यात्राएं करते । वे जहाजों में भरकर सामान विदेशों में ले जाते । वहां से अकूत धन और हीरे-जवाहरात साथ लाते । इन्हीं व्यापारियों में तिरुवेणकाडर भी थे । वह शिवजी के भक्त थे ।

तिरुवेणकाडर और उनकी पत्नी शिवकलै को बस एक ही दुःख था । उनके कोई संतान नहीं थी । इतनी धन-समृद्धि होने पर भी उनकी उदासी छिप नहीं पाती थी । एक रात तिरुवेणकाडर को अजीब सपना आया । भगवान शिव कह रहे थे—'कल एक निर्धन व्यक्ति और उसकी पत्नी, एक सुंदर-स्वस्थ शिशु को लेकर आएंगे । शिशु को तुम पालना । बदले में उन्हें शिशु के भार के बराबर सोना दे देना ।'

तुरंत तिरुवेणकाडर की नींद खुल गई । पूरी रात वह जागते रहे । मन में हैरानी थी—'क्या यह सपना सच होगा ?' उन्होंने पत्नी शिवकलै को उठाकर सब कुछ कह सुनाया ।

लेकिन सुबह उन्हें विश्वास करना ही पड़ा । पति-पत्नी आंगन में बैठे थे। तभी दूर से उन्होंने एक निर्धन व्यक्ति को आते देख लिया । साथ में एक स्त्री थी । उसकी गोद में अत्यंत सुंदर शिशु था । शिवकलै ने प्रसन्नता से उस शिशु को उठाकर चूम लिया । तिरुवेणकाडर ने शिशु को सोने से तोलने का आदेश दिया । एक पलड़े में सोने का ढेर लगा दिया गया, फिर भी शिशु वाला पलड़ा अभी तक भारी था । अंत में अनमोल रत्न, हीरे भी रख दिए गए । तब कहीं दोनों पलड़े बराबर हुए ।

शिशु के मां-बाप ने कहा—"हमें सोना और रत्न नहीं चाहिएं। हमारा बेटा आपके पास रहकर अच्छी तरह पलेगा। पढ़-लिखकर योग्य हो जाएगा। इससे बढ़कर हमारे लिए कुछ और नहीं है।" लेकिन तिरुवेणकाडर ने बहुत जोर दिया, तो उन्होंने यह कहकर धन स्वीकार किया कि इसे हम गरीबों की सेवा में खर्च करेंगे।

तिरुवेणकाडर ने अगले दिन बहुत बड़ा समारोह किया। सभी मित्रों और रिश्तेदारों को अपने अद्‌भुत स्वप्न के बारे में बताया। शिशु का नाम मरुदवाणर रखा गया।

जैसे-जैसे मरुदवाणर बढ़ रहा था, तिरुवेणकाडर की खुशी भी बढ़ती जाती। बच्चा अत्यंत कुशाग्र बुद्धि था। धीरे-धीरे मरुदवाणर किशोर हो गया। एक दिन उसने पिता से कहा—"पिता जी, मैं भी व्यापार करना चाहता हूं। जहाज में सामान लेकर विदेश जाऊंगा।"

तिरुवेणकाडर ने समझाया— "नहीं बेटा, हमारे पास इतना धन है कि कई पीढ़ियों तक काम आएगा। तुम्हें विदेश जाने की आवश्यकता नहीं।" पर मरुदवाणर जिद पर अड़ा रहा। बार-बार यही कहता—"यात्रा करने से मैं नई-नई बातें सीखूंगा। फिर मैं अकेला तो जा नहीं रहा। दोस्त भी साथ में हैं।"

आखिर तिरुवेणकाडर को बेटे की बात माननी पड़ी। उन्होंने मरुदवाणर की विदेश यात्रा के लिए तैयारी करने का आदेश दिया। विदेश में बेचने के लिए बहुत-सी कीमती वस्तुएं और बढ़िया सामान खरीदा गया। यात्रा प्रारम्भ हुई। कई दिनों बाद जहाज एक छोटे-से द्वीप में पहुंचा। वहां मरुदवाणर और उसके मित्र उतरे। उन्होंने जहाज से सामान निकाला। द्वीप निवासियों ने उनका स्वागत किया। कुछ ही दिनों में सारा सामान बिक गया। अब मरुदवाणर के मित्रों ने वहां से अपने देश में ले जाने के लिए बढ़िया, बेशकीमती चीजें और रत्न खरीदे। वे बहुत खुश थे। लेकिन मरुदवाणर अपनी ही धुन में था। जिस दिन जहाज चलने को था, उसने गोबर के उपलों के बोरे जहाज में चढ़ाने के लिए कहा। यह सुनकर मरुदवाणर के दोस्त चौंके। लेकिन मरुदवाणर से किसी ने कुछ नहीं कहा। उपलों के अनेक बोरे जहाज में भर लिए गए।

जब जहाज लौटकर पूम्पुहार पहुंचा, मरुदवाणर के दोस्त जल्दी से उतरकर तिरुवेणकाडर के पास गए। बोले— "बड़े दुःख की खबर है। आपका बेटा पागल हो गया है। हम सभी विदेश से रत्न लेकर लौटे हैं और वह कई बोरे उपले लाया है।"

सुनकर तिरुवेणकाडर को धक्का लगा। फौरन बंदरगाह पर पहुंचे। वहां उपलों से भरे बोरे नीचे रखे थे। मरुदवाणर कहीं नजर नहीं आ रहा था। तिरुवेणकाडर क्रोध से आगबबूला हो उठे। सामने पड़े बोरों में से एक उपले को उठाया और जमीन पर दे मारा। आश्चर्य! उपले के टूटते ही सब ओर रत्न ही रत्न बिखर गए। इतने अनमोल रत्न पूम्पुहार में आज तक किसी ने न देखे थे। अब तो वहां भीड़ लग गई।

तिरुवेणकाडर ने रत्न संभाले। बोरों को घर ले जाने का आदेश दिया। घर पहुंचकर शिवकलै से बोले —"अरे, देखो तो! कितने अनमोल रत्न लाया है हमारा बेटा।"



शिवकलै भी प्रसन्न थी। अचानक तिरुवेणकाडर को याद आया। बोले—"मरुदवाणर कहीं नहीं नजर आ रहा। कहां चला गया ?" शिवकलै ने बताया—"अभी-अभी घर आया था। यह डिबिया देकर कहीं चला गया है।"

तिरुवेणकाडर ने उत्सुकता से डिबिया खोली। सोच रहे थे—'शायद इसमें भी कोई दुर्लभ रत्न होगा।' लेकिन यह क्या ! डिबिया के अंदर एक सूई रखी थी, जिसका छेद वाला हिस्सा टूटा हुआ था। एक कागज पर लिखा था— 'यह टूटी हुई सूई किसी काम की नहीं है।'

पढ़ते ही तिरुवेणकाडर को लगा, जैसे आंख के आगे से परदा हट गया है। उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि उन्हें ज्ञान देने के लिए शिव ही मरुदवाणर के रूप में आए थे। मन ही मन कहा —'मरुदवाणर चुपके से बता गया, ज्ञान के बिना यह सारी दौलत बेकार है।'

उसी समय तिरुवेणकाडर ने संन्यासी होने का निश्चय कर लिया। शिवकलै के पास गए। वह बोली —"जो आपकी इच्छा, वही मेरी इच्छा समझ लीजिए। आपकी राह में रोड़ा नहीं बनूंगी।"

अब तिरुवेणकाडर अपनी बूढ़ी मां के पास गए। उनको यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। बोलीं— "तुम संन्यासी हो गए, तो मेरा अंतिम संस्कार कौन करेगा ?"

"मां, मैं अंतिम संस्कार करने के लिए अवश्य पहुंच जाऊंगा।" —तिरुवेणकाडर ने कहा और घर से चल पड़े। उन्होंने बहुत-सा धन गरीबों में बांट दिया। उसी दिन उन्होंने नया नाम रखा— पट्टिनाथर।

पट्टिनाथर तीर्थों में घूमने लगे। कभी-कभी गांवों में, किसानों के बीच बैठकर बातें करते। बच्चों को छोटी-छोटी कहानियां सुनाते। एक दिन उन्हें लगा, मां धीमे स्वर में कह रही है—"मेरा अंतिम समय आ गया है। जा रही हूं बेटा, अपना वायदा याद रखना।" बस पट्टिनाथर तुरंत लौट पड़े। मां की मृत्यु हो चुकी थी। उनका अंतिम संस्कार किया।

उसके बाद पट्टिनाथर फिर यात्रा पर निकल पड़े। कभी मंदिरों की परिक्रमा करते, कभी तीर्थों पर जाते। हर वक्त होंठों पर शिवजी का नाम रहता। अपनी देह तक की उन्हें सुध नहीं रहती थी। एक बार मंदिर में बैठे थे। अचानक घोड़ों पर सवार कुछ डाकू आए। उन्होंने सोने का एक हार मंदिर में फेंका। वह पट्टिनाथर के गले में जा पड़ा। पट्टिनाथर की समझ में कुछ नहीं आया। वह कुछ सोचते, इससे पहले ही राजदरबार के सैनिकों ने आकर उन्हें पकड़ लिया। कहा— "यह हार महल से चोरी हुआ है। तुम्हें दंड मिलेगा।"

पट्टिनाथर को हथकड़ी पहनाकर ले जाया गया। राजा भद्रहरि को जब पता चला कि हार पट्टिनाथर के गले में पड़ा हुआ था, तो उसने उन्हें सूली पर लटकाने का आदेश दे दिया। सूली के पास पहुंचते ही पट्टिनाथर ने एक भजन गाना शुरू कर दिया। जैसे ही भजन समाप्त हुआ, सूली में से आग प्रकट हुई। फिर क्षण भर में सूली जलकर खाक हो गई। सैनिक देखकर भौंचक्के रह गए। वे दौड़े-दौड़े राजा के पास गए।

राजा भद्रहरि ने सुना, तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। वह भी वहां जा पहुंचा, जहां पट्टिनाथर को सूली पर लटकाया जाना था। देखा, सूली की जगह राख पड़ी थी। राजा तुरंत पट्टिनाथर के पैरों में गिर पड़ा। कहा—"आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।"

तभी डाकुओं का सरदार भी वहां आ गया। बोला—" हमने ही गणेश जी की मूर्ति पर हार फेंका था। वह गलती से इन बाबा के गले में पड़ गया। चोरी हमने की है। दंड हमें मिलना चाहिए।"

बस, राजा भद्रहरि उसी क्षण राजपाट छोड़, पट्टिनाथर के साथ चल पड़े। वह संन्यासी हो गए थे। गुरु-शिष्य दोनों घूमते हुए तिरुविदैमरुतुर मंदिर में पहुंचे। उसके एक द्वार पर भद्रहरि बैठे, दूसरे पर पट्टिनाथर। भद्रहरि के पास एक कटोरा था। भक्त जो कुछ उस कटोरे में डाल जाते, उसे गुरु-शिष्य मिलकर

खा लेते ।

एक दिन भगवान शिव वेश बदलकर पट्टिनाथर के पास आए । उनसे भिक्षा मांगी । पट्टिनाथर ने कहा—"भाई, मेरे पास तो कुछ नहीं है । दूसरे द्वार पर एक गृहस्थ बैठा है । उसी से कुछ मांग लो ।"

भिक्षुक बने शिव तुरंत भद्रहरि के पास गए । पट्टिनाथर ने जो कुछ कहा था, वह बता दिया । भद्रहरि समझ गए, गुरु उनका उपहास कर रहे हैं । भद्रहरि के पास एक कुत्ता नित्य आकर बैठ जाता था । कटोरा भी उनके पास था । इसीलिए पट्टिनाथर ने उनका उपहास किया था । यह सोचकर भद्रहरि ने तुरंत अपना कटोरा दूर फेंक दिया । कटोरा कुत्ते को जाकर लगा । अचानक शिव ने अपना वास्तविक रूप दिखा दिया । बस, उसी क्षण भद्रहरि मुक्ति पाकर शिवलोक चले गए । कुत्ता भी मुक्त हो गया ।

पट्टिनाथर को यह पता चला, तो उनके आनंद का ठिकाना न रहा । वह सोचते—'धन्य हूं मैं । स्वयं शिव चलकर मेरे पास आए ।'

एक दिन पट्टिनाथर मंदिर छोड़कर चल पड़े । रास्ते में कुछ बच्चे खेल रहे थे । पट्टिनाथर उनसे बातें करने लगे । फिर बोले—"मैं भी तुम्हारे साथ खेलूंगा । आओ, तुम्हें जादू का खेल दिखाऊं ।"

वह एक ओर बैठ गए । पास ही एक टोकरा पड़ा था । बच्चों से कहा— "मेरे ऊपर यह टोकरा रख दो ।" बच्चों ने पट्टिनाथर पर टोकरा रखा । थोड़ी देर बाद हटाया, तो देखा, पट्टिनाथर तो वहां हैं ही नहीं । इतने में सामने से हंसते हुए पट्टिनाथर आ गए । बोले—"लो, मैं आ गया ।"

काफी देर तक बच्चों और पट्टिनाथर का यह अजब खेल चलता रहा । फिर एक बार बच्चों ने पट्टिनाथर पर टोकरा ढककर हटाया, तो देखा, वहां एक शिवलिंग पड़ा है । पट्टिनाथर कहीं नजर नहीं आए ।

बच्चों ने दौड़कर अपने-अपने घर में यह बताया । देखते ही देखते असंख्य लोग वहां जमा हो गए । शिव लिंग की पूजा की गई । सभी पट्टिनाथर की महिमा का गायन कर रहे थे ।

घोड़ा हिनहिनाया

—देवेन्द्र सत्यार्थी

सिकंदर वीर और साहसी था, कला प्रेमी भी कम न था । घोड़े की सवारी का तो बेहद शौक था उसे ।

एक बार की बात है, सिकंदर अभी किशोर ही था । उसके पिता सम्राट फिलिप्स के पास घोड़ों का एक सौदागर आया । वह अपने साथ खूब ऊंचा, शानदार एक सफेद घोड़ा लाया था, जिस पर हल्की काली धारियां थीं । गर्दन पर झूलते बड़े-बड़े बाल । कद-काठी भी खूब अच्छी थी । घोड़ा राजसी शान से खड़ा था ।

फिलिप्स देखते ही समझ गया, घोड़ा मामूली नहीं है, हजारों में एक है । उसने सौदागर से दाम बताने के लिए कहा ।

सौदागर मुसकराया । बोला—"महाराज, इसका दाम तो है एक हजार स्वर्ण मुद्राएं, लेकिन...."

"लेकिन क्या ?"—राजा ने हैरान होकर पूछा ।

"अभी इसे सिखाने-सधाने का समय नहीं मिला मुझे । इसलिए काफी उद्दंड है । इस पर सवारी करना आसान नहीं है । आप कहें, तो मैं इसे सधा कर ले आऊं । तब इसका मूल्य दो हजार स्वर्ण मुद्राएं होगा ।"—सौदागर बोला ।

"नहीं-नहीं, रहने दो । हमारे यहां एक से एक योग्य कोचवान, सरदार, सिपहसालार हैं । उनके लिए एक घोड़े को सिखाना क्या मुश्किल है !"—कहकर राजा ने अपने काबिल सरदारों को हुक्म दिया—"घोड़े पर सवारी करके इसकी परख की जाए ।"

एक नौजवान सरदार ने जैसे ही घोड़े पर सवार होने की कोशिश की, घोड़े ने उछलकर जोर से पैरों को झटका दिया । नौजवान मुंह के बल गिरा । फिर तो जितने सरदारों ने कोशिश की, सभी का बुरा हाल हुआ । घोड़े की ठीक से सवारी करना तो दूर, कोई उस पर चढ़ने में भी कामयाब नहीं हो सका ।

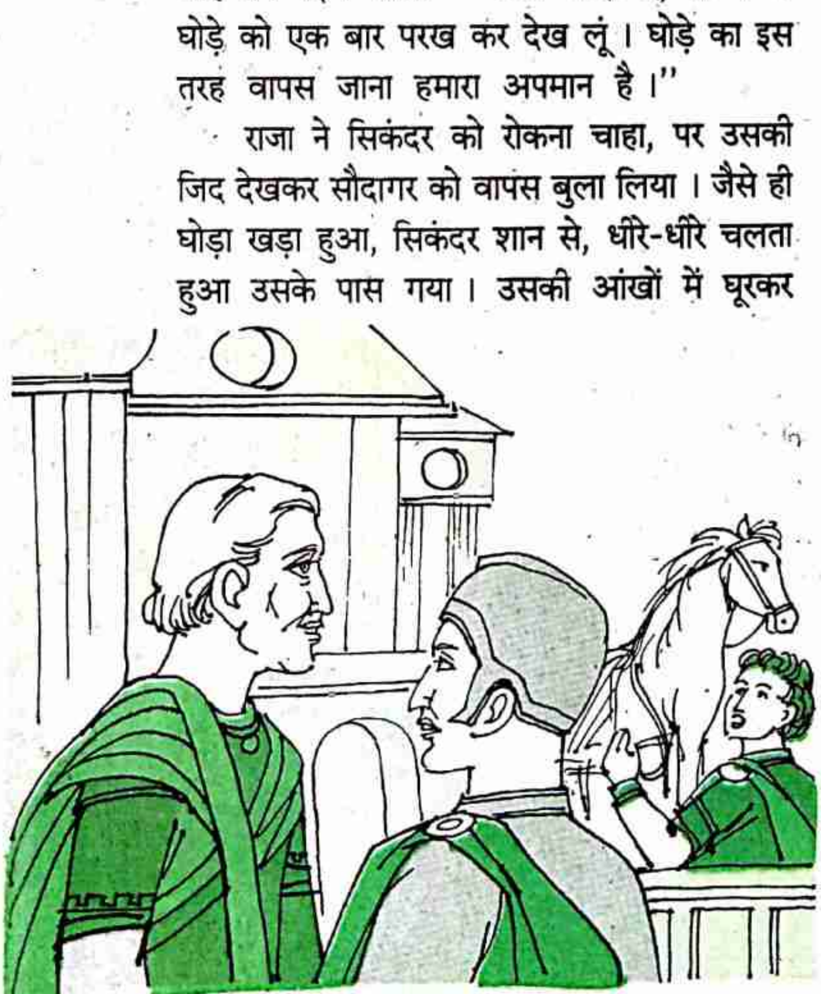
राजा को क्रोध आ गया। उसने खुद सवारी करनी चाही। पर अड़ियल घोड़े ने राजा की भी अच्छी गत बना दी। आगबबूला होकर राजा ने कहा—"ले जाओ इसे। मैं इस नालायक घोड़े की शक्ल भी नहीं देखना चाहता।"

सौदागर क्या कहता ? मन ही मन अपनी गलती पर पछता रहा था। सोच रहा था—'अनाड़ी घोड़े को भला इस तरह राजदरबार में लाने की जरूरत ही क्या थी ?' सिर झुकाकर वह वापस जाने के लिए तैयार हुआ।

तभी घूमता हुआ, सिकंदर वहां आया। उसने दूर से ही घोड़े पर एक नजर डाली। पहचान लिया, इतनी अच्छी कद-काठी वाला यह घोड़ा असाधारण है। पिता से पूछा—"घोड़े को वापस क्यों ले जाया जा रहा है ?"

राजा ने सारी कहानी कह सुनाई। सिकंदर की भौंहें तन गईं। बोला—"आप आज्ञा दें, तो मैं भी घोड़े को एक बार परख कर देख लूं। घोड़े का इस तरह वापस जाना हमारा अपमान है।"

राजा ने सिकंदर को रोकना चाहा, पर उसकी जिद देखकर सौदागर को वापस बुला लिया। जैसे ही घोड़ा खड़ा हुआ, सिकंदर शान से, धीरे-धीरे चलता हुआ उसके पास गया। उसकी आंखों में घूरकर



देखा। फिर घोड़े के तीन चक्कर लगाए। उसके बाद उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। एड़ लगाते ही घोड़ा सरपट भागा। राजा, दरबारी, सिपहसालार—सबके चेहरे फक पड़ गए। एक अनजानी आशंका से वे कांप उठे— 'कहीं घोड़ा सिकंदर को गिरा न दे !' लेकिन सिकंदर घोड़े को जितनी तेज दौड़ा सकता था, दौड़ाता गया। पूरे दिन जंगल, घाटियों का चक्कर लगाने के बाद शाम को वह वापस आया। तब तक घोड़े का अड़ियलपन गायब हो चुका था। वह चुपचाप सिकंदर की आज्ञा का पालन करता रहा। घोड़े की पीठ से उतरकर सिकंदर ने प्यार से घोड़े को सहलाया। घोड़े की आंखों में भी प्रशंसा का भाव था। मानो कह रहा हो—'मैं चाहता था, कोई सूरमां ही मुझ पर सवारी करे।'

सौदागर को पैसे देकर विदा कर दिया गया। अब सिकंदर खुद घोड़े को अस्तबल में लेकर गया। उसकी विशेष सार-संभाल करने का आदेश दिया। अस्तबल में उसे सबसे अलग बांधा जाता। दो सेवक रात-दिन उसका ख्याल रखते। फिर भी न घोड़े को सिकंदर के बिना चैन था, न सिकंदर को घोड़े के बिना। एक बार घोड़े पर बैठ, शहर का चक्कर न लगा लेता, तब तक सिकंदर को कुछ भी अच्छा न लगता। उसके मित्र मजाक में कहते—'तुम्हारा असली मित्र तो यह घोड़ा ही है न !' और सिकंदर मुसकरा देता।

कुछ दिन बाद दूर के गांव से एक चित्रकार दरबार में आया। बोला—"मेरा नाम मूरिस है। आपका कला प्रेम सुनकर आया हूं। अपने बनाए कुछ चित्र दिखाऊंगा। यदि आपको वे भा जाएं, तो मुझे अपना राज चित्रकार बना लीजिए।"

"लेकिन तुम्हारी विशेषता क्या है ? हमारे यहां पहले ही एक से बढ़कर एक कलाकार हैं।"—राजा ने कहा।

"महाराज, मैं किसी भी आदमी का हू-ब-हू चित्र बना सकता हूं, जैसे अभी बोल पड़ेगा। चित्र देखकर आपको असली आदमी का धोखा हो जाएगा।"—चित्रकार बोला।

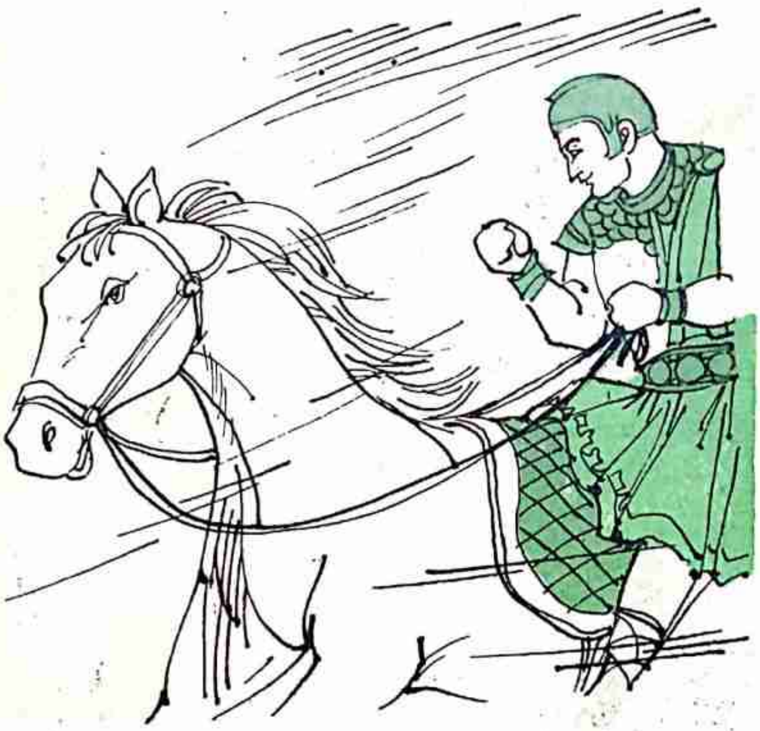
राजा ने कहा—"ठीक है। एक चित्र प्रतियोगिता होगी। उसमें जिसका चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसी को राज चित्रकार बनाया जाएगा।" प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी सिकंदर पर डाली गई।

पूरे राज्य में चित्र प्रतियोगिता का ढिंढोरा पीट दिया गया। जिस दिन प्रतियोगिता होनी थी, सैकड़ों चित्रकार वहां आ गए। सभी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि उन्हें किस विषय पर चित्र बनाने के लिए कहा जाएगा। तभी अपना घोड़ा लेकर सिकंदर वहां आया। मंच पर घोड़े को ला खड़ा किया। सभी हैरान थे—भला चित्र-प्रतियोगिता में घोड़े का क्या काम? लेकिन इससे भी बड़ा अचरज तब हुआ, जब सिकंदर ने घोषणा की—"आप लोग इस घोड़े का चित्र बनाइए। जिसका चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे इनाम मिलेगा, राज चित्रकार का पद भी। सर्वश्रेष्ठ चित्र का निर्णय भी यह घोड़ा ही करेगा।"

बहुत से चित्रकारों को यह अपना अपमान लगा। घोड़ा तो बोल भी नहीं सकता। वह भला कैसे बताएगा, सर्वश्रेष्ठ चित्र कौन-सा है? गुस्से में आकर वे सभा से चले गए। बाकी चित्रकार एकाग्र होकर घोड़े का चित्र बनाने में जुट गए। दोपहर तक सभी ने चित्र बना लिए थे। इस बीच घोड़ा भी एक जगह खड़ा-खड़ा परेशान हो गया था।

अब सिकंदर ने अपने सेवक को बुलाकर कहा—"ये चित्र एक-एक करके घोड़े के आगे लाए जाएं।"

सिकंदर की आज्ञा का तुरंत पालन किया गया। एक-एक कर चित्र घोड़े के आगे लाए गए। घोड़ा उन चित्रों पर उचटती नजर डालता, फिर दूसरी ओर देखने लगता। जब सभी चित्र दिखाए जा चुके, तब अंत में मूरिस को कहा गया। वह भी अपना चित्र लेकर आया। लकड़ी के बहुत बड़े कैनवास पर उसने चित्र बनाया था, बिलकुल घोड़े के ही आकार का। घोड़े का मुंह, गर्दन, पीठ, पैर, यहां तक कि उसकी आंखों की चमक को भी उसने रंगों में साकार कर दिया था। देखने से लगता था, जैसे घोड़ा अभी-अभी हिनहिना



पड़ेगा। उसके शरीर की एक-एक रेखा ज्यों की त्यों उभर आई थी।

घोड़े ने चित्र देखा, तो उसकी आंखें देर तक चित्र पर टंगी रहीं। थोड़ी ही देर में वह खुशी से भरकर हिनहिना उठा। देर तक घोड़े की प्रसन्नता भरी हिनहिनाहट हवा में गूंजती रही। अब चित्रकारों की समझ में सारी बात आ गई थी।

सिकंदर मुसकराया। बोला—"निर्णय हो गया। घोड़े ने सही चित्र पसंद कर लिया, जो हूबहू उसी जैसा है। इसी चित्र को पुरस्कार मिलेगा। शाही महल में इसे टांगा जाएगा ताकि मैं हर वक्त अपने प्यारे घोड़े को देखता रह सकूं।"

मूरिस को इनाम में हीरे-जवाहरात और हाथी दांत का बना राजचिह्न भेंट किया गया। उसे राज कलाकार का पद भी मिला।

कुछ समय बाद सिकंदर ने राजगद्दी संभाली। अपनी विशाल सेना के साथ वह विश्व विजय के लिए निकला। कहते हैं, तब भी वह उसी घोड़े पर सवार था। रास्ते में नदी पार करते समय पत्थर की ठोकर खाने से, घोड़े की मृत्यु हो गई। लेकिन सिकंदर को उसने बचा लिया। तब सिकंदर फूट-फूट कर रोया था। पूरे दिन उसने शोक मनाया। सेना भी वहीं डेरा डाले पड़ी रही। उसी स्थान पर घोड़े की समाधि बनाई गई। ●

उलटी चाल

—मनोजकुमार सिन्हा

श्याम नगर के राजा थे अजितसिंह । बड़े ही योग्य और गुणवान । हर वक्त अपनी प्रजा की भलाई की बात सोचते । राज्य में सब ओर सुख-समृद्धि थी ।

एक बार की बात है । राजा अजितसिंह को पड़ोसी राज्य सुंदर नगर के राजा विक्रमसिंह ने चौसर खेलने के लिए आमंत्रित किया । राजा अजितसिंह चौसर के अच्छे खिलाड़ी थे । वह खुशी-खुशी मान गए ।

निश्चित दिन राजा अजितसिंह पड़ोसी राज्य सुंदर नगर में चौसर खेलने गए । पड़ोसी राजा विक्रम सिंह ने उनका आदर-सत्कार किया । फिर वह क्रीड़ा भवन में पहुंचे । चौसर बिछी । राजा विक्रमसिंह बोला— "अजितसिंह, दांव पर क्या लगाते हो ? मेरी ओर से सारा राज्य है, परंतु तुम्हारी ओर से ?"

—"मैं अपनी तलवार रखता हूं । चौसर में हार गया, तो कभी तलवार नहीं उठाऊंगा ।"

इस तरह उन्हें चौसर खेलते एक पखवाड़ा बीत गया । परंतु दोनों में से कोई किसी को मात न दे सका ।

एक दिन राजा अजितसिंह चौसर खेलने बैठे ही थे, तभी उनके राज्य के महामंत्री ललितदेव वहां आ पहुंचे । उन्होंने अजितसिंह के कान में कुछ कहा । महामंत्री की बात सुनकर राजा अजितसिंह क्रोध में फुफकार उठे । बोले— "मैं दो दिन राज्य से बाहर क्या आया, राज्य में शांति ही खत्म हो गई ?"

राजा अजितसिंह की डांट-फटकार सुन, महामंत्री लौट गए । पर राजा अजितसिंह कुछ उखड़-से गए । अब चौसर खेलने में उनका मन नहीं लग रहा था । परिणाम यह हुआ कि अजितसिंह चौसर में हार गए । शर्त के अनुसार उन्हें अपनी तलवार राजा विक्रमसिंह को देनी पड़ी । फिर परकटे पक्षी के समान राजा अजितसिंह अपने राज्य में लौट आए । परंतु वह चौसर में हार की चिंता से नहीं उबर पाए ।

इधर जब आसपास के राजाओं ने यह सुना कि अजितसिंह अब तलवार नहीं उठाएंगे, तो वे सब मिलकर श्याम नगर पर आक्रमण करने की तैयारी में लग गए । महामंत्री ललितदेव घबराए । वह दौड़े-दौड़े अजितसिंह के पास पहुंचे ।

सारी बात सुनकर राजा ने कहा— "जिस प्रजा ने मेरे पीछे मेरी इज्जत का ख्याल नहीं किया । उस पर विपत्ति आती है, तो आने दो । वैसे भी मैं अपनी तलवार हार चुका हूं ।"

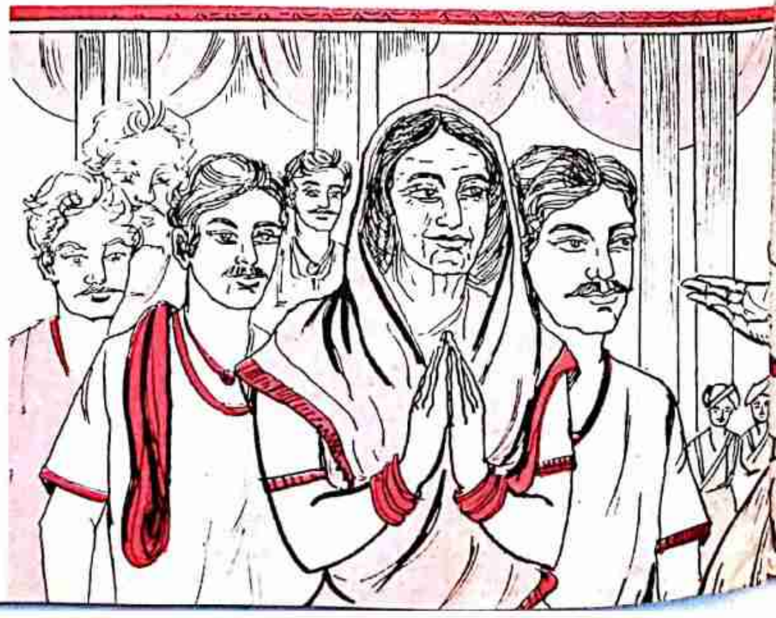
महामंत्री ललितदेव हताश होकर उस बुढ़िया की तलाश में निकले, जिसकी शिकायत सुनकर वह सुंदर नगर दौड़े गए थे । बुढ़िया की झोंपड़ी के पास पहुंचकर भीतर झांका । देखा, बुढ़िया चारपाई पर बैठी है और उसके पांचों बेटे भी पास ही हैं ।

महामंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने सोचा— 'उस दिन तो ये सब एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे । आज क्या हो गया ? इतने में बड़ा लड़का बोला— "अम्मां, यह तो बड़ा अनर्थ हुआ । अब हमारे राज्य पर आक्रमण होगा ।"

—"अरे, बेटा तू चिंता क्यों करता है ? इस राज्य पर विपत्ति आ भी गई, तो क्या ? पड़ोसी राज्य सुंदर नगर किसलिए है ? और यहां भी तो विक्रमसिंह ही राज करेंगे । उन्हें तो इनाम भी देना पड़ेगा । आखिर हमने मदद किसलिए की है ?"

अब महामंत्री सारी बात समझ गए । उन्होंने राजमहल में आकर राजा अजितसिंह को सूचना दी ।

अजितसिंह आग-बबूला हो उठे । उन्होंने कहा— "उस बुढ़िया और उसके लड़कों को मेरे सामने तुरंत



हाजिर किया जाए।"

बुढ़िया के आने पर राजा ने पूछा— "क्यों अम्मां, तुम पर क्या अनर्थ हुआ था ?"

"महाराज ! मेरे बेटे हर समय लड़ते-झगड़ते रहते हैं।" —बुढ़िया ने कहा।

—"क्यों ? क्या मेरे राज्य में इन्हें कोई कष्ट है ?"

"नहीं, महाराज ! कारण यह है कि मेरे पास एक सोने की थाली है। उस दिन ये पांचों उसी थाली के लिए खून-खराबे पर उतर आए थे।"

"ठीक है, पहले वह सोने की थाली यहां ले आओ।"— अजितसिंह बोले।

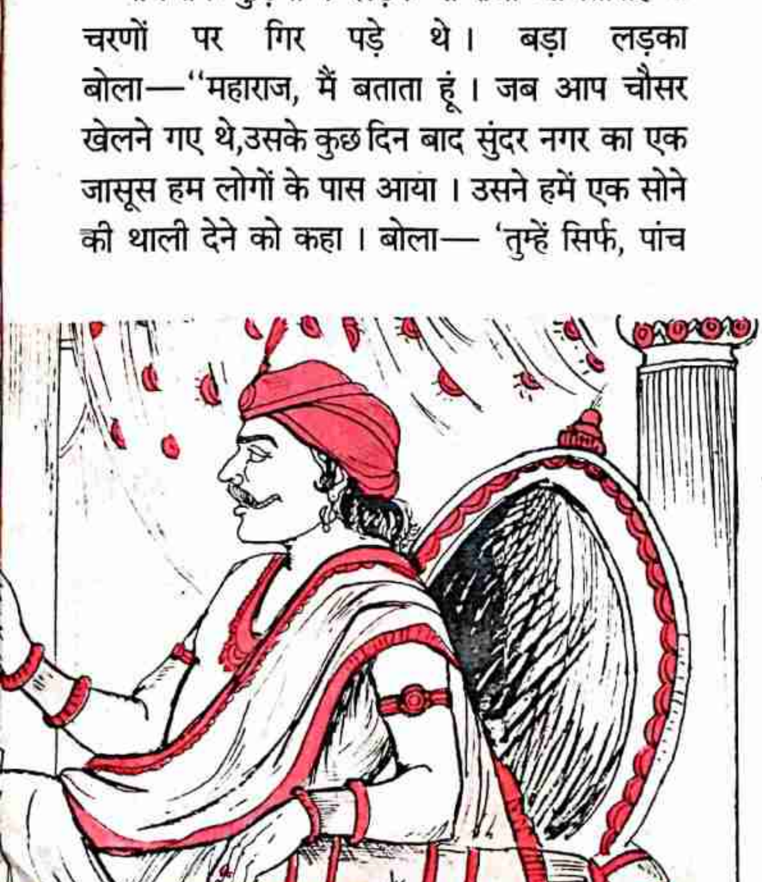
इस पर बुढ़िया हड़बड़ा गई। बोली— "महाराज, वह थाली अभी यहां नहीं है।"

—"तो कहां है ? जल्दी मेरे सामने लाओ, नहीं तो तुम सबको फांसी दे दी जाएगी।"

राजा को क्रोध में देख, बुढ़िया थर-थर कांपने लगी। बोली— "महाराज, मैंने आपसे झूठ बोला था। मेरे पास कोई सोने की थाली नहीं है।"

—"फिर तुमने फरियादी घंटा क्यों बजाया ?"

तब तक बुढ़िया के लड़के भी राजा अजितसिंह के चरणों पर गिर पड़े थे। बड़ा लड़का बोला—"महाराज, मैं बताता हूं। जब आप चौसर खेलने गए थे,उसके कुछ दिन बाद सुंदर नगर का एक जासूस हम लोगों के पास आया। उसने हमें एक सोने की थाली देने को कहा। बोला— 'तुम्हें सिर्फ, पांच दिन बाद न्याय का घंटा बजाकर फरियाद करनी होगी।' सोने के लालच ने हमें यह नाटक करने पर मजबूर कर दिया। कुछ दिन बाद वह जासूस सोने की थाली लेकर आएगा।"



अब अजितसिंह सारा रहस्य समझ गए। मन ही मन कहा— 'अच्छा, तो यह विक्रमसिंह की चाल थी।'

क्रोध में आकर उन्होंने विक्रमसिंह को पत्र लिखा। दूत वह पत्र लेकर राजा विक्रमसिंह के पास गया।

पत्र पढ़ते ही विक्रमसिंह क्रोध से फुफकार उठा। बोला— "हम गीदड़ भभकी से नहीं डरते।"

विक्रमसिंह का उत्तर सुन, अजितसिंह ने तुरंत सुंदर नगर पर चढ़ाई कर दी। विक्रमसिंह सोच रहा था कि आसपास के राजा उसकी मदद करेंगे। पर जब उन राजाओं को पता चला कि युद्ध में स्वयं अजितसिंह है, तो वे विक्रमसिंह की मदद करने से साफ-साफ मुकर गए।

युद्ध हुआ, तो अजितसिंह ने विक्रमसिंह के छक्के छुड़ा दिए। उसे अजितसिंह के आगे हथियार डालने पड़े।

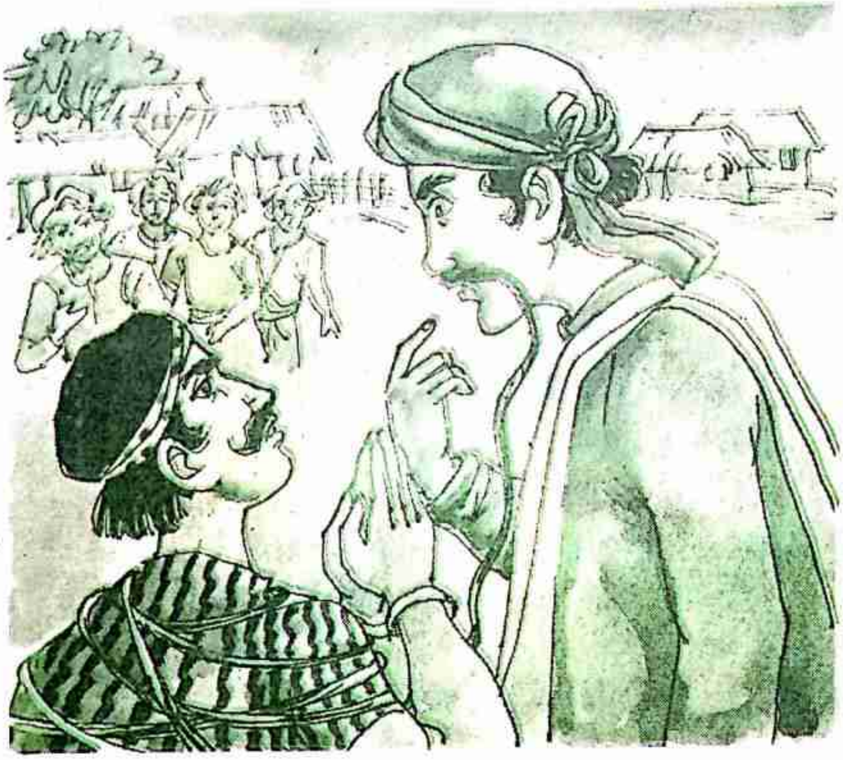
"क्यों विक्रमसिंह, तुमने सोचा था, तुम हमेशा के लिए श्याम नगर पर अधिकार कर लोगे। यही न !" —अजितसिंह ने पूछा।

विक्रमसिंह बोला— "आपने अपने वचन की लाज नहीं रखी। तलवार हारकर फिर तलवार उठा ली। यह कौन-सी बहादुरी है ?"

"और तुमने खेल को खेल भावना से न खेलकर, उसे रणनीति का अखाड़ा बना दिया। क्या यह ठीक था ?" —कहकर उन्होंने सुंदर नगर के जासूस को सामने खड़ा कर दिया।

अजितसिंह मुसकराकर बोले— "मुझे तुम्हारा राज्य नहीं चाहिए विक्रमसिंह ! परंतु याद रखना, मैं फिर चौसर खेलने आऊंगा और इस बार हार कर नहीं, तुम्हें हराकर लौटूंगा।"

सुंदर नगर की प्रजा अजितसिंह का जय-जयकार कर उठी। विक्रमसिंह भी आगे बढ़कर अजितसिंह के गले लग गए। ●



दादा जादूगर

—कृष्णा त्रिपाठी

एक था जादूगर । वह अपने जादू का प्रयोग हमेशा अच्छे काम के लिए करता था । इस कारण सब उसे चाहते थे । बच्चे उसे प्यार से जादूगर दादा कहते थे ।

जादूगर हमेशा इधर-उधर घूमता रहता । नए-नए शहरों में पहुंच जाता । वहां जिस किसी को मुसीबत में फंसा देखता, तत्काल मदद करने को तैयार हो जाता । जादूगर जब चाहे अपनी मूंछें लम्बी कर सकता था । इन्हीं मूंछों के बल पर तमाम कारनामे कर दिखाता था ।

एक बार की बात है । जादूगर घूमते-घूमते एक अजनबी गांव में पहुंचा । शाम हो चुकी थी । उसने सोचा-'क्यों न आज इसी गांव में डेरा डाला जाए ?' लेकिन तभी उसे लोगों के जोर-जोर से रोने की आवाजें सुनाई दीं । वह उसी दिशा की ओर बढ़ने लगा, जहां से आवाजें आ रहीं थीं ।

वहां पहुंचकर उसने लोगों से रोने का कारण पूछा । वे बोले—"हमारा अनाज मंगल डाकू लूटकर ले गया है । वह हर बार इसी प्रकार गांव आकर बारी-बारी से हर एक के घर में डाका डालता है । विरोध करने पर अपने साथियों से पिटवाता है ।"

जादूगर बोला—"तुम में से कोई बता सकता है कि वे किस ओर गए हैं ?"

एक आदमी ने कहा—"उस ओर, जहां पर तालाब है ।"

बस, फिर क्या था ? जादूगर ने उन डाकुओं का पूरा हुलिया पता लगाया । फिर अपनी बाईं ओर की मूंछ को आदेश दिया—'चल भई मूंछ !' मूंछ बढ़ने लगी । शुरू-शुरू में वह एक पतले, काले धागे की तरह बढ़ती गई, बढ़ती गई । जब मूंछ डाकुओं के अड्डे पर पहुंच गई, तो उसका बढ़ना रुक गया ।

वहां कुछ लोग एक ऊंचे टीले पर बैठे आदमी से कह रहे थे—"लो सरकार, इस महीने का अनाज तो ले आए ।"

टीले पर बैठा आदमी ही डाकुओं का सरदार था । मूंछ धीरे-धीरे और आगे बढ़ी और फिर जाकर सरदार के पैर के नीचे चिपक गई । सरदार ने समझा, कोई कांटा चुभ गया है । ज्यों ही उसने पतली मूंछ को हटाने के लिए अपने हाथ से उसे छुआ, वैसे ही मूंछ उसके हाथ पर भी चिपक गई । फिर वह लम्बी और घनी होती चली गई । धीरे-धीरे उसने डाकू को अच्छी तरह लपेट लिया ।

डाकू को मूंछ में कैद करते ही, जादूगर ने मूंछ की लम्बाई घटानी शुरू कर दी । इस प्रकार मूंछ के छोटा होते ही डाकू खिंचता हुआ जादूगर के पास पहुंच गया ।

जादूगर गुस्से में आकर बोला—"क्यों सरदार, किसलिए इन किसानों को तंग करते हो ? अगर कहो, तो अभी तुम्हारा काम तमाम कर दूं ।"

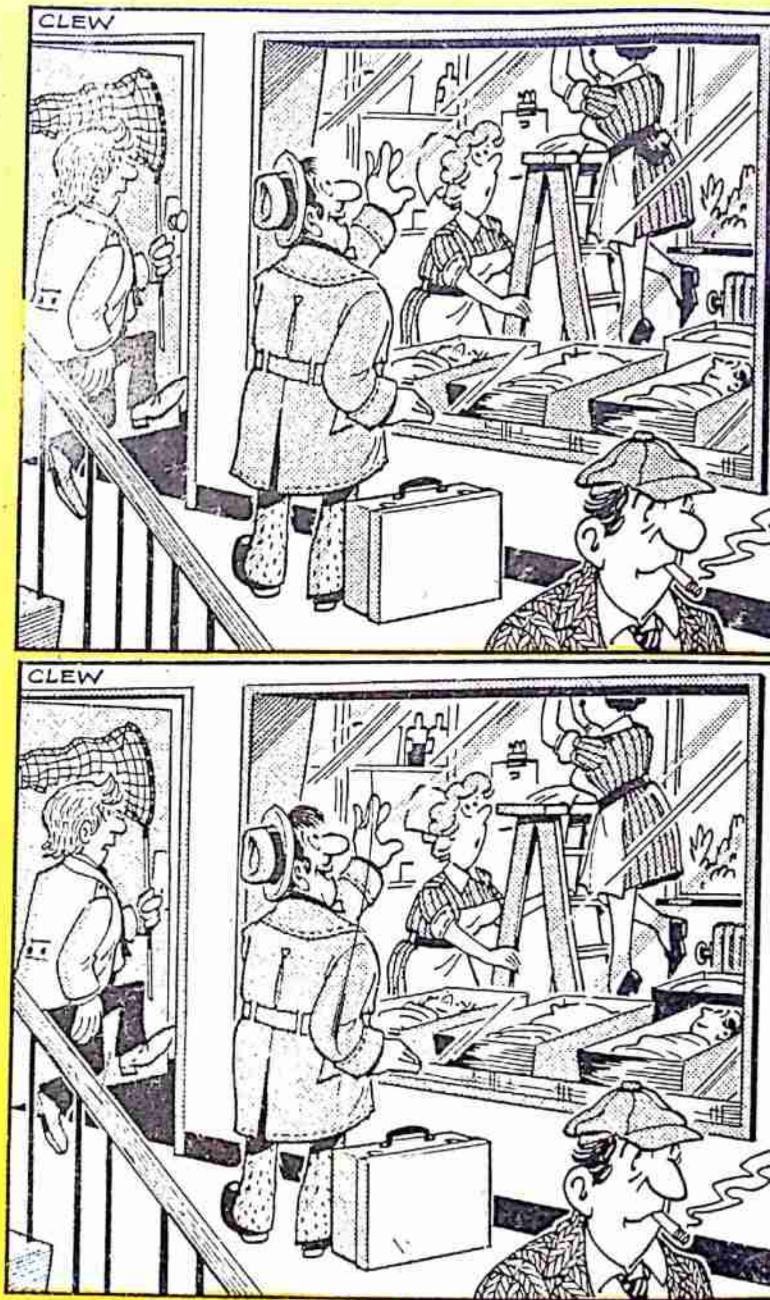
डाकू थर-थर कांपने लगा । जादूगर बोला—"ठीक है, आज तुम्हें छोड़ देता हूं । पर आगे से यह गलती कभी न हो ।"

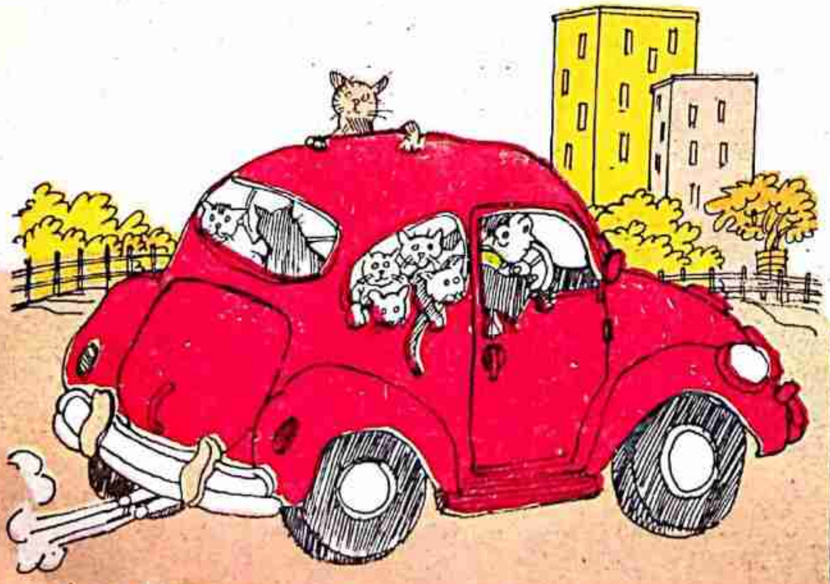
इसके बाद डाकुओं ने जादूगर के सामने ही लूट का सारा सामान किसानों को वापस कर दिया । गांव वालों को वचन दिया कि वे फिर कभी लूटपाट नहीं करेंगे । ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट ।**



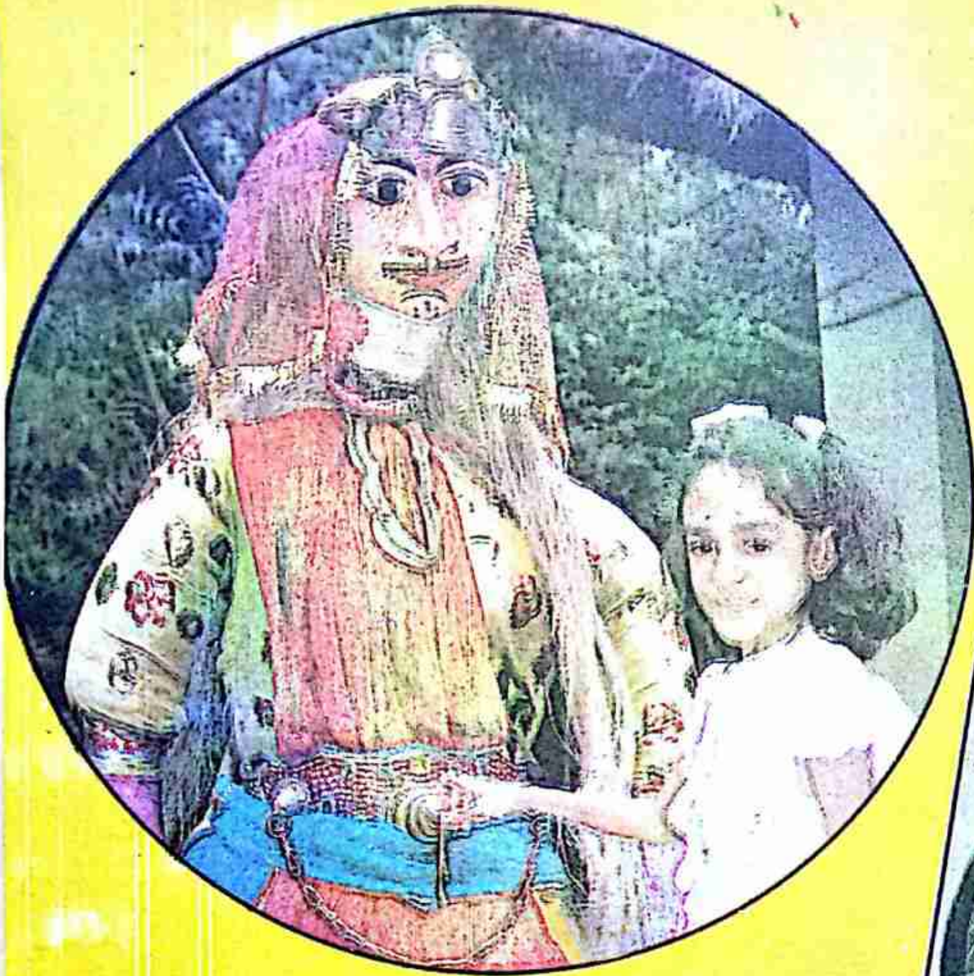


कहानी लिखो : ८५

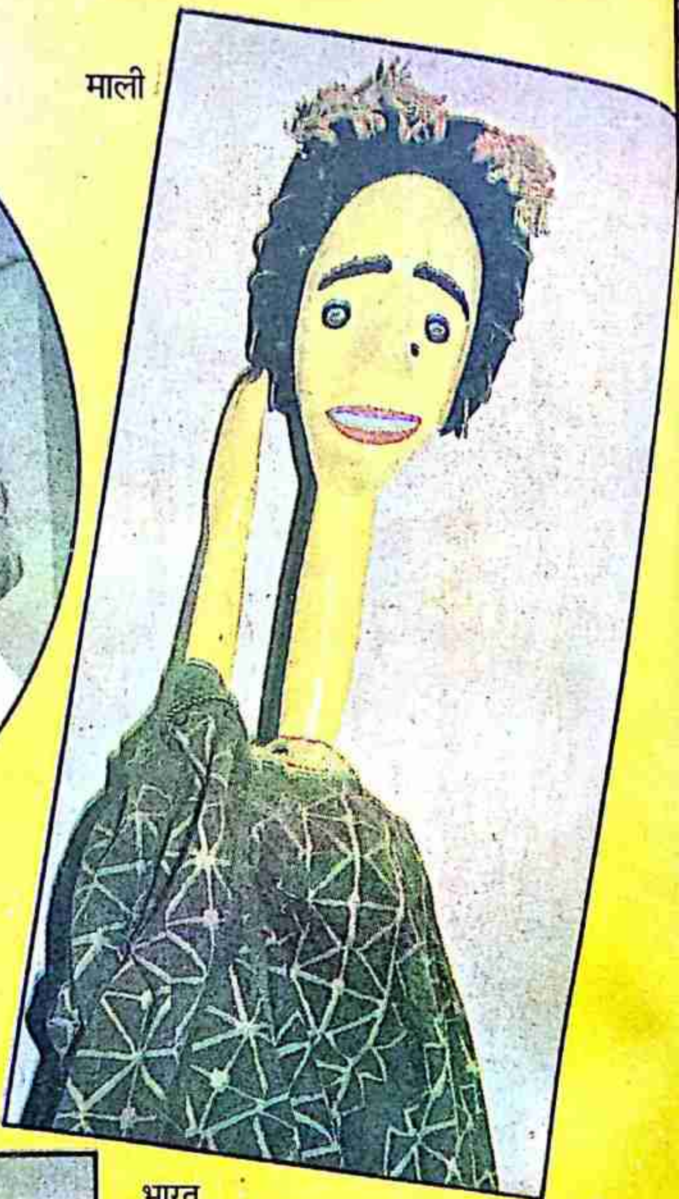
सामने प्रकाशित चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए । उसे १० दिसम्बर '९० तक **सम्पादक 'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाऊस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली – १** के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा । उसे प्रकाशित भी किया जाएगा ।**परिणाम—फरवरी'९१**

चित्र पहेली : ८५

'कबड्डी' विषय पर रंगीन चित्र बनाकर १० दिसम्बर '९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें । चित्र पेंसिल से नहीं, चटख रंगों में बनाकर भेजें ।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा । **परिणाम—मार्च' १९९१**



माली



देश-देश से आईं पुतलियां

जापान



जिम्बाबवे



भारत





तुर्की



बलगारिया

कनाडा





ब्रिटेन

चित्र : राजेन्द्रकुमार वधवा
प्रदीप सोनी



विश्व की महान कृतियां : फ्रांस

दो भाई

—अज्ञात

फ्रांस का राजा शार्लेमान बूढ़ा हो गया था। उसके दो बेटे थे। शार्लेमान ने सोचा—'राजकाज बेटों को सौंपकर अब आराम करना चाहिए।' राजा ने उत्तराधिकारी का फैसला करने के लिए विशेष दरबार बुलाया।

शार्लेमान के सारे सामंत, जागीरदार दरबार में पधारे। उनके सामने राजा ने अपनी योजना रखी। राजा का झुकाव अपने बेटे शार्लो की तरफ था। लेकिन ज्यादातर सामंत शार्लो को नहीं चाहते थे। क्योंकि उसके संबंध कुछ दुष्ट लोगों से थे।

अब क्या हो ! तभी जागीरदार एमरी उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—"शार्लो को राजपाट सौंपने से पहले, उसे एक जागीर का शासन सौंपा जाए। वह जागीर गुइन की है। वहां के जागीरदार गुइन की मृत्यु हो चुकी है।"

असल में एमरी की गुइन से शत्रुता थी। उसकी मृत्यु के बाद वह उसके परिवार से बदला लेना चाहता था। गुइन के दो बेटे थे—हून और गेरार्ड। अपने पिता की मृत्यु के बाद ये शार्लेमान को नजराना देने पेरिस नहीं आ सके थे। बस, एमरी ने इसी बात पर शार्लेमान के कान भर दिए। कहा—"हुजूर, गुइन के बेटे आपका अपमान करना चाहते हैं। वे आपको कुछ नहीं समझते, इसीलिए अब तक यहां नहीं आए हैं।"

एमरी की बात सुनकर राजा भड़क उठा। उसने कहा—"गुइन के दोनों बेटों को तुरंत पेरिस लाया जाए।" सैनिक गुइन की पत्नी से मिले। उसने संदेशवाहकों का खूब सम्मान किया। फिर हून तथा गेरार्ड को उनके साथ पेरिस भेज दिया। बताया कि बीमार होने के कारण ही दोनों भाई अब तक पेरिस नहीं

जा सके थे ।

हून और गेरार्ड सैनिकों के साथ चल दिए । रास्ते में ये अपने चाचा से मिले । वह भी उनके साथ पेरिस चल दिया । उसे मालूम था कि शार्लेमान के दरबार में गुइन के विरोधी उसके भतीजों को परेशान कर सकते हैं ।

चाचा का अनुमान गलत नहीं था । एमरी ने दोनों भाइयों की हत्या का षड्यंत्र रच लिया था । वह राजकुमार शार्लों को अपने साथ लेकर आया । और उस रास्ते पर छिप गया जहां से हून और गेरार्ड गुजरने वाले थे । एमरी ने शार्लों से कहा था—'गुइन के बेटों की मृत्यु के बाद जागीर तुम्हारी होगी । उसके बाद पूरे राज्य पर कब्जा जमाना आसान हो जाएगा ।'

शार्लों हाथ में तलवार लेकर झाड़ियों में घात लगाए बैठा था । उसने मुंह पर नकाब लगा रखी थी, ताकि कोई पहचान न सके । एमरी रास्ते पर नजर रखे हुए था । जैसे ही उसने हून और गेरार्ड को आते देखा, शार्लों को इशारा कर दिया ।

शार्लों हून पर टूट पड़ा । हून तलवार चलाने में बहुत होशियार था । शार्लों को उसकी शक्ति का अनुमान नहीं था । हून ने पहले अपना बचाव किया, फिर ऐसा वार किया कि शार्लों जमीन पर गिर पड़ा । उसकी मृत्यु हो गई ।

एमरी की योजना उलट पलट गई । उसने शोर मचाया—'गुइन के लड़के ने हमारे राजकुमार को मार डाला ।'

यह खबर बात की बात में पेरिस पहुंच गई । शार्लेमान तो सकते में आ गया । उसे पता नहीं था कि सचाई क्या है ?

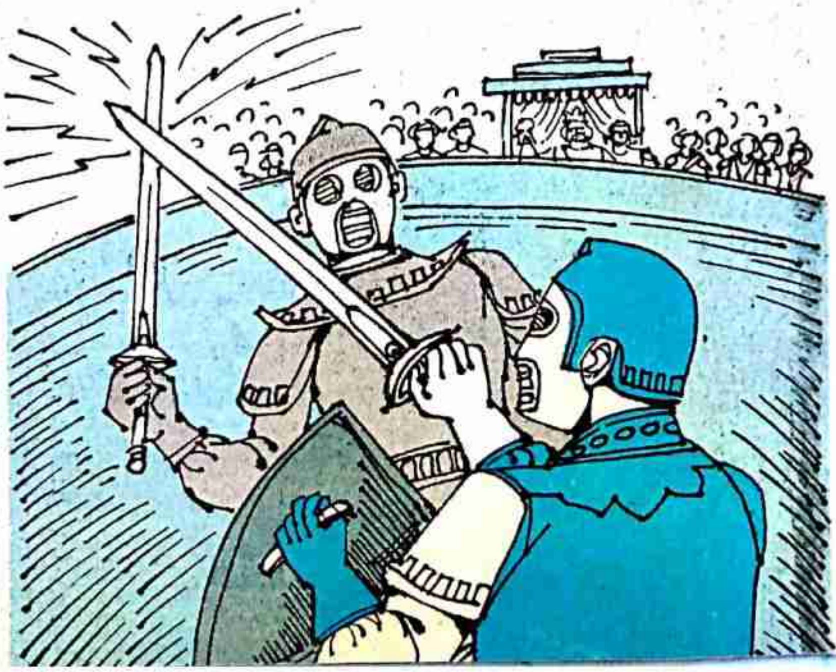
हून और गेरार्ड पेरिस पहुंचे, तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । हून का अपराध बहुत बड़ा था । उसने फ्रांस के भावी राजा को ही मार डाला था । विशेष दरबार लगा । उसमें हून को अपराधी घोषित किया गया । वहां बैठा हर आदमी सोच रहा था—'अब इस युवक को मृत्यु दंड मिलेगा ।'

हून ने साहस नहीं छोड़ा । उसने शार्लेमान से कहा—''महाराज, आप चाहे मुझे जो भी दंड दें, पर मैं सच बोल रहा हूं । मैंने पहला वार नहीं किया । मैं झाड़ी के पास से गुजरा, तो एक नकाबपोश ने मुझ पर हमला बोल दिया । मुझे पता नहीं चला कि वह कौन था ? अगर मैं बचाव न करता, तो मारा जाता । इसीलिए मुझे तलवार चलानी पड़ी । यह तो मुझे बाद में पता चला कि वह राजकुमार शार्लों थे । न जाने उन्होंने इस तरह छिपकर मुझ पर हमला क्यों किया ?''

और कई लोगों ने भी हून की बात का समर्थन किया, उसे निर्दोष बताया । पर भला शार्लेमान क्यों मानने वाला था । वह मन ही मन हून को दंड देने के लिए बेचैन हो रहा था, पर साथ ही यह भी दिखाना चाहता था कि वह न्याय करता है ।

आखिर बहुत सोच-विचार कर उसने कहा—''एमरी और तुम्हारे बीच तलवार युद्ध होगा ।'' यह भी शार्लेमान ने एमरी के संकेत पर कहा था । क्योंकि एमरी हून को मार डालना चाहता था ताकि शार्लों की मौत का बदला चुक जाए ।

हून और एमरी मैदान में आ गए । चारों ओर भीड़ जमा हो गई । दोनों के बीच तलवार युद्ध शुरू हुआ । हून ने दिखा दिया कि वह कितनी अच्छी तलवार चलाता है । एमरी की सारी शेखी हवा हो गई । वह समझ गया कि प्राण संकट में हैं । लेकिन बीच में लड़ाई रोकी नहीं जा सकती थी । एमरी को हून से युद्ध करना ही था । हून के शरीर पर जगह-जगह



घाव लग गए । खून बह चला । देखने वालों को लगा कि अब एमरी इस अनजान युवक को मार डालेगा, पर वे भ्रम में थे । हून ने एमरी को थका दिया, फिर ऐसा वार किया कि वह नीचे गिर पड़ा ।

लेकिन मरने से पहले उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया । उसने शार्लेमान से कहा—"महाराज, यह लड़का निर्दोष है । जो कुछ हुआ, उसका दोषी मैं हूं । मैं ही राजकुमार शार्लो को अपने साथ ले गया था । मेरे कहने पर ही उन्होंने हून तथा इसके भाई पर हमला कियां था । इसे मुक्त कर दीजिए ।"

सब जान गए कि सच क्या है । लेकिन शार्लेमान के मन में हून के प्रति अब भी क्रोध था । वह मैदान से उठकर चला गया ।

अगले दिन शार्लेमान ने हून को बुलाया । उससे कहा—"हून, मैंने सुना है, तुम बहुत वीर हो । मैं तुम्हें एक काम सौंपना चाहता हूं । तुम्हें बेबीलोन जाना है । मैं चाहता हूं, तुम बेबीलोन के राजा की दाढ़ी के बाल और दो दांत मुझे लाकर दो । मैं जानता हूं, तुम यह काम कर सकते हो ।"

हून चुप खड़ा रह गया । वह जान गया कि शार्लेमान उसे मौत के मुंह में भेज रहा है । भला बेबीलोन के राजा की दाढ़ी के बाल और दो दांत वह कैसे लाएगा ! लेकिन उसने कहा—"महाराज, मुझे आपकी शर्त मंजूर है ।"

—"मुझे उम्मीद है, तुम मैदान छोड़कर नहीं भागोगे ?"

"कभी नहीं महाराज!"–हून ने कहा और नमस्कार करके बाहर आ गया । उसने यात्रा की तैयारी करने के बाद, अपने छोटे भाई गेरार्ड से कहा—"भैया, मैं जा तो रहा हूं, पर पता नहीं, जीवित लौट भी पाऊंगा या नहीं । मेरी अनुपस्थिति में जागीर की देखभाल तुम करना । और देखना, मां को कोई कष्ट न होने पाए, क्योंकि अब उनके अतिरिक्त हमारा कोई नहीं है ।"

गेरार्ड ने कहा—"भैया,तुम जरा भी चिंता मत करो । मैं सब संभाल लूंगा । तुम निश्चिंत होकर जाओ ।"

हून अनजान यात्रा पर निकल पड़ा । उसे क्या पता था कि गेरार्ड ही उससे धोखा करने की सोच रहा है । गेरार्ड ने सोच लिया था—'अब मैं ही सारी जागीर का मालिक हूं । हून तो शायद ही लौट पाए । और अगर लौटा भी, तो मैं उसे अपने इलाके में कदम नहीं रखने दूंगा ।'

हून चल दिया । अपनी मां से भी मिलने का समय नहीं था । वह उदास था । सोच रहा था—'आखिर मैंने क्या बुरा किया था, जो मुझे इस तरह देश निकाला दिया गया है । साक्षात मौत के मुंह में भेजा जा रहा हूं ।'

जंगल, पहाड़ पार करता हुआ हून आगे बढ़ता रहा । उसे जगह-जगह समस्याओं से जूझना पड़ा । पर हर जगह उसे ऐसे लोग मिले, जिन्होंने हर स्थिति में उसका साथ निभाया ।

जेरामिस नामक एक साधु हून का मित्र बन गया । वह हून के साथ ही यात्रा करता था । बेबीलोन के राजा से सब डरते थे । हून भी समझ गया कि उसके लिए शार्लेमान की शर्त पूरी कर पाना असम्भव होगा, पर तभी भाग्य ने उसका साथ दिया । अरब के खलीफा ने बेबीलोन के राजा को मार डाला । उस समय हून वहीं था । उसने बेबीलोन के राजा के कटे सिर से दाढ़ी के बाल और दो दांत ले लिए ।

शार्लेमान का सोचा यहां भी पूरा नहीं हुआ । उसने तो अपनी तरफ से हून को मृत्यु दंड ही दिया था । पर उसे क्या मालूम था कि हून को कुछ कहने से पहले ही बेबीलोन का राजा मौत के घाट उतार दिया जाएगा ।

बेबीलोन में अपना काम पूरा करने के बाद हून लौटा। जेरामिस भी उसके साथ था । दोनों एक घने वन से गुजर रहे थे । तभी उसने जंगल में एक बौने को देखा । बौने के सिर पर हीरे-मोती जड़ा, चमचमाता मुकुट था । वह बौनों का राजा ओबरान था । हून ओबरान की तरफ बढ़ा । वह उससे बात करना चाहता था । अब तक उसने बौनों के बारे में अनेक विचित्र

बातें सुनी थीं, पर ऐसे किसी जीव को देखा पहली बार था।

जेरामिस ने हून से कहा—"तुम बौने से बोलने की भूल न करना। मैंने सुना है, जो बौने से एक बार बात कर लेता है, वह स्वयं भी बौना बन जाता है। और फिर हमेशा वैसा ही रहता है।"

लेकिन हून इन सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करने को तैयार नहीं था। उसने जेरामिस से कहा—"मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता। अगर बौने के पास जादू है, तो मेरे पास भी तलवार है। मैं यों डरकर पीठ नहीं दिखा सकता।"

यह कहकर वह बौने की तरफ चल दिया।

बौनों का राजा हून को अपनी तरफ आता देखता रहा। आज तक किसी मनुष्य ने इतना साहस नहीं दिखाया था। हून ओबरान के पास जा खड़ा हुआ। फिर उससे बातें करने लगा। दोनों ने एक-दूसरे को अपना परिचय दिया। हून ने बताया कि वह क्यों अपने घर से इतनी दूर भटक रहा है।

ओबरान हून की बातों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा—"हून, आज से हम दोनों दोस्त बन गए। लो, मेरी ओर से ये भेंट स्वीकार करो।"

उसने हून को दो चीजें दीं—एक प्याला, जो हर समय भरा रहता था। लेकिन जब कोई बुरा आदमी उसे हाथ में लेता, तो वह एकदम खाली हो जाता था। इस तरह प्याले से किसी की अच्छाई-बुराई का पता लगाया जा सकता था। दूसरा उपहार था एक बिगुल। उसे बजाकर हून संकट के समय ओबरान को बुला सकता था।

इसके बाद बौनों का राजा ओबरान वहां से चला गया। हून ने बिगुल की परीक्षा लेने के लिए उसे बजाया, तो ओबरान तुरंत प्रकट हो गया। उसने हून से कहा—"मित्र, इसे बार-बार बिना कारण मत बजाओ। इससे जादू का प्रभाव कम होता है।"

इसके बाद अनेक विघ्न-बाधाओं को पार करके हून पेरिस लौट आया। उसने शार्लेमान की शर्त पूरी कर दी थी, पर बूढ़ा राजा हून से अब भी नाराज था। दूसरी तरफ हून का छोटा भाई गेरार्ड पूरी सम्पत्ति पर कब्जा जमाए बैठा था। वह बड़े भाई को इतनी कठिन यात्रा से जीवित लौटा देखकर खुश नहीं था।

हून दुखी हो गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर अब शार्लेमान को उससे क्या शिकायत थी। सबसे अधिक दुःख तो उसे अपने छोटे भाई के व्यवहार से था। क्या धन-दौलत के कारण गेरार्ड को उससे धोखा करना चाहिए था? उसने छोटे भाई को बहुत समझाया, पर वह समझौते के लिए तैयार न हुआ। उधर शार्लेमान भी हून के खून का प्यासा हो रहा था।

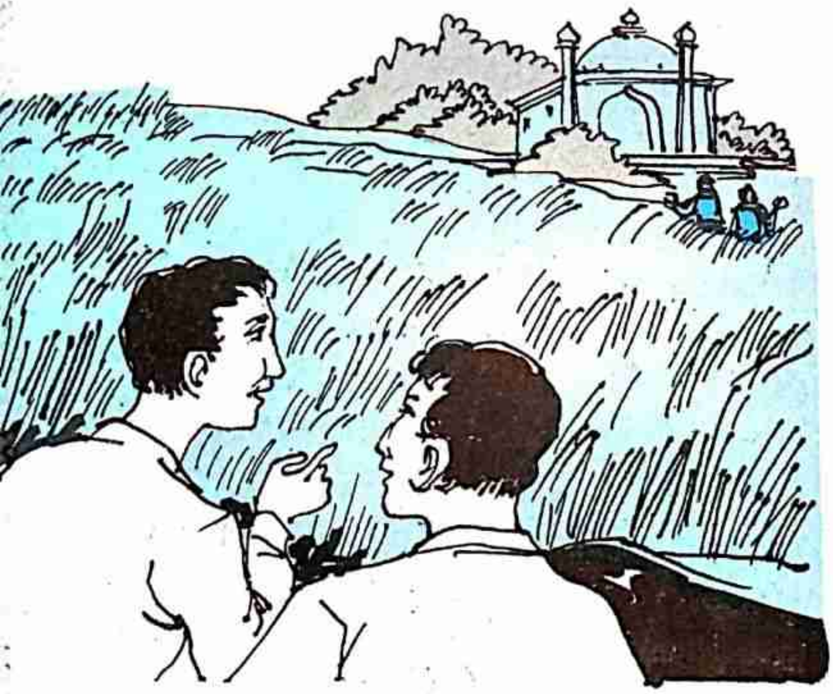
हून क्या करे, कुछ समझ न पाया। ऐसे में उसे बौनों के राजा ओबरान की याद आई। उसने बिगुल बजाया, तो ओबरान तुरंत प्रकट हो गया। उसे देखकर शार्लेमान घबरा गया। वह कहने लगा—"मुझे हून से कोई शिकायत नहीं है।"

अब ओबरान ने कहा—"मैं तुम्हारे साथ धोखा करने के आरोप में गेरार्ड को ऐसा दंड दूंगा कि देखने वाले थर्रा जाएंगे।" यह कहकर उसने अपना जादुई भाला गेरार्ड की ओर तान दिया। उसमें से आग की लपटें निकलने लगीं। यह देख, गेरार्ड चीखकर क्षमा मांगने लगा। राजा शार्लेमान भी बुरी तरह घबरा गया।

तभी हून ओबरान के सामने जा खड़ा हुआ। उसने कहा—"अपने भाई को दंड देकर मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। वह बुरा है, पर फिर भी मेरा छोटा भाई है। मैं इसे क्षमा करता हूं।"

इस पर ओबरान हंस पड़ा। उसने कहा—"जब तुमने अपराधी को क्षमा कर दिया, तो फिर मैं कैसे दंड दे सकता हूं उसे?" यह कहकर उसने शार्लेमान की ओर देखा। बूढ़ा राजा थर-थर कांप रहा था। वह बोला—"मुझे भी हून से कोई शिकायत नहीं।"

ओबरान के सामने ही गुइन की सम्पत्ति दोनों भाइयों में आधी-आधी बांट दी गई। गेरार्ड ने हून से अपने बुरे व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। फिर ओबरान अदृश्य हो गया। ●



सात घड़े

—सुनीति

दो दोस्त थे— मुरारी और सुभाष। दोनों नदी के किनारे घूम रहे थे। नदी किनारे बहुत-से खेत थे। उनमें चने और गेहूं की फसल खड़ी थी। खेतों के बीच में एक टूटा-फूटा मकबरा था।

मुरारी प्रायः वहां रोज ही आता। उसके पिता ने बताया था कि यह मकबरा फिरोजशाह के किसी अफसर ने अपनी बीवी की याद में बनवाया था। नूरपुर गांव में ऐसे मकबरे और भी कई थे। इसलिए लोगों का ध्यान उसकी ओर बहुत कम जाता था। उस दिन मुरारी ने वहां दो अजनबियों को घूमते देखा। उसने सुभाष से कहा— "देख तो सुभाष, लगते तो ये विदेशी हैं। भला यहां क्यों आए होंगे ?"

सुभाष ने उन्हें देखा। फुसफुसाया— "लगते तो दोनों पाकिस्तानी हैं। पुलिस को खबर देनी चाहिए।"

दोनों जल्दी-जल्दी थाने पहुंचे। थानेदार से सारी बात कही। तुरंत दो सिपाहियों को भेजा गया कि उन दोनों को पकड़कर ले आएं।

दोनों अजनबी युवक थे। सीधे-सपाट चेहरे वाले। सिपाही उन्हें पकड़कर थाने लाए, तो उन्होंने अपने पासपोर्ट दिखाकर कहा— "हम यहीं के रहने वाले थे। हमारे अब्बा यहीं से पाकिस्तान गए थे। हमने उनसे इस जगह की इतनी कहानियां सुनीं कि हमसे यहां आए बिना नहीं रहा गया। मेहरबानी करके आठ-दस रोज हमें यहां रहने दीजिए। हम किसी का कोई नुकसान नहीं करेंगे।"

उन्हें कुछ दिन रहने की इजाजत मिल गई। पर दो सिपाही दिन-रात उनकी निगरानी पर तैनात कर दिए गए।

सिपाही रोज थाने में रिपोर्ट देते कि दोनों पाकिस्तानी युवक आज कहां-कहां गए, उन्होंने क्या-क्या किया। लगभग रोज ही वे दोनों नदी किनारे खेतों के आसपास घूमते रहते थे। किंतु एक दिन सिपाहियों ने देखा कि उस दिन वे अपने साथ कुदाल, फावड़े लाए थे।

सिपाहियों को संदेह हुआ, तो युवकों को रोककर पूछताछ की। उनमें से एक बोला— "दीवान जी, यह मकबरा मेरे पड़दादा मरहूम ने बनवाया था। अपनी तमाम दौलत उन्होंने यहां एक तहखाने में छिपा दी थी। हम उसी खजाने की खोज में आए हैं।"

"पर यह जमीन तो अब भारत की है। इसके अंदर की सम्पत्ति भी अब भारत की है। आप इसे पाकिस्तान नहीं ले जा सकते।" —सिपाहियों ने कहा।

"दीवान जी, हम पर रहम कीजिए। इसमें जो कुछ निकलेगा, वह आधा आपका और आधा हमारा।"—तुरंत दूसरा युवक बोला।

—" नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता।"

—"दीवान जी, हम बड़े गरीब हैं। बड़ी आस लगाकर यहां तक आए हैं। यहां जितना रुपया गड़ा बताया गया है, अगर उतना निकल आया, तो उससे हमारी और आपकी सारी उम्र बड़े ऐश-आराम से कट जाएगी।"

उसकी बात सुन, दोनों सिपाहियों के मन ललचा गए। पाकिस्तानी लड़के खुदाई करते गए और दोनों सिपाही बारी-बारी से उनकी देखभाल करने लगे। कई घंटे बीत गए। सात हाथ गहरा गड्ढा खुद चुका था। फिर भी खजाने का कुछ सुराग दिखाई नहीं दिया।

पाकिस्तानी लड़के बीच-बीच में सुस्ताते, पानी पीते, फिर आकाश की ओर दोनों हाथ उठाकर कहते— "या खुदा ! क्या हमारी सारी मेहनत बेकार जाएगी ?"

सिपाही भी बड़-बड़ करते । पर दोनों में से कोई भी वहां से न हिलता । यहां तक कि सुबह से रात हो गई । मन ही मन दोनों को डर था कि कहीं खजाने का अधिक हिस्सा दूसरा न हड़प ले ।

उधर थाने में उपस्थिति के समय उन दोनों की खोज हुई । संयोगवश उसी दिन एस.पी. साहब थाने का मुआयना करने आए । उन दोनों को अनुपस्थित पाकर थानेदार बहुत नाराज था । उसने निश्चय कर लिया था कि आते ही दोनों सिपाहियों को डिसमिस कर देगा ।

एक सिपाही रामदयाल ने देखा, तो इधर-उधर उन दोनों की खोज करने लगा । एक दिन पहले उसने उन दोनों को नदी किनारे,मकबरे के पास देखा था । आज भी दोनों उसे वहीं मिले ।

उनके पास जा,रामदयाल ने कहा— "गैर हाजिर रहने के कारण थानेदार साहब तुम दोनों से बहुत नाराज हैं । शायद तुम्हें नौकरी से निकाल दिया जाए ।"

सुनकर दोनों सिपाही बहुत घबराए— "खजाना अभी तक मिला नहीं था । भरोसा भी क्या था, मिले, न मिले । उल्टे सरकार को भनक लग गई, तो हमारे हथकड़ी पड़ जाएंगी ।"

"अब क्या करें ?" —दोनों ने पूछा ।

रामदयाल ने सुझाया— "जाकर अभी थानेदार को सारी बात बता दो । कहो, ये दोनों युवक खुदाई में लगे थे । ऐसे में हम उन्हें छोड़कर कैसे आ सकते थे ? तब तक तुम्हारी जगह, मैं इनकी निगरानी करूंगा ।"

बुदबुदाते हुए दोनों सिपाही वहां से थाने की ओर लपके । दोनों सोच-सोचकर परेशान थे कि अगर उनके पीछे खजाना निकल आया तो ? मगर नौकरी का सवाल था ।

एक घंटे बाद जब वे लौटकर आए, तो उनके साथ कई सिपाही लिए थानेदार भी था । उन्होंने आते ही मकबरे के चारों ओर घेरा डाल दिया ।

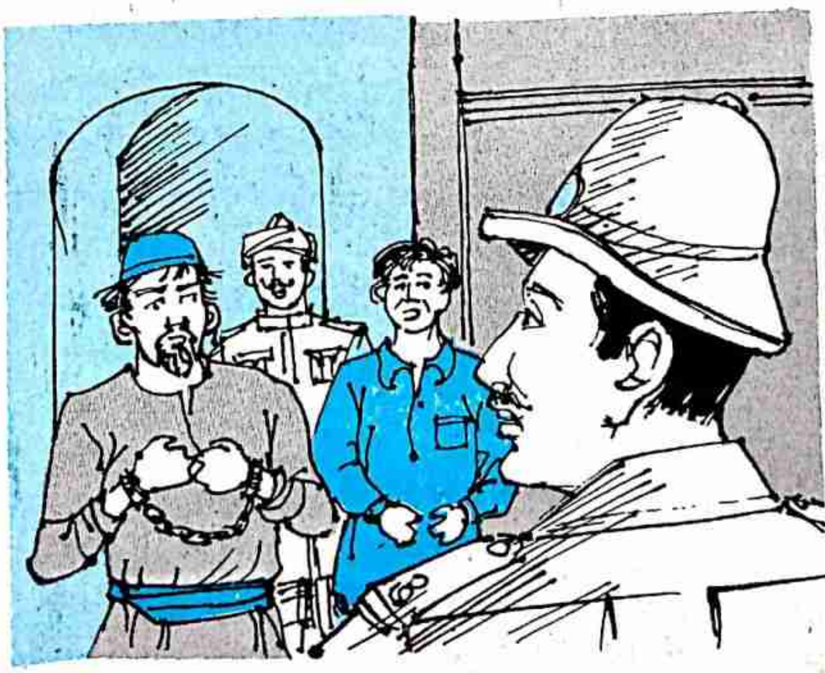
दोनों युवक गड्ढे में घुसे खुदाई कर रहे थे । सहसा उनके फावड़े मिट्टी में बरसों से दबे पीतल के घड़ों से टकराए । 'टन्न-टन्न' का शब्द सुन,थानेदार के साथ आए सिपाही उस गड्ढे में कूद पड़े । पाकिस्तानी युवकों के हाथों से फावड़े छीन, उन में हथकड़ियां पहना दी गईं ।

एक-एक करके सात घड़े सोने की अशर्फियों से भरे बाहर निकाल लिए गए । खबर पाते ही गांव के लोग सैकड़ों की संख्या में वहां उमड़ पड़े ।

थाने में खुदाई की सूचना देने वाले दोनों सिपाहियों ने गुस्से भरी निगाहों से सिपाही रामदयाल की ओर देखा । रामदयाल स्वयं फटी-फटी आंखोंसे अशर्फियों भरे घड़ों को देख रहा था ।

थानेदार की उपस्थिति में सारी दौलत सरकारी खजाने में पहुंचा दी गई । दोनों सिपाहियों ने रामदयाल से कहा— "अगर तुम चुप रहते, तो यह सारा खजाना हमारा होता ।"

"कैसे होता ?" —रामदयाल ने कहा— "यह खजाना जिसका था, उसका न हुआ, तो हमारा कैसे होता ?" ●



रंग जमाया

हुआ मिठाई का सम्मेलन,
संचालक था काला जामुन।
सजी-धजी थी खूब इमरती,
हंस-हंस सबसे बातें करती।
मचा रहा था हल्ला-गुल्ला,
लुढ़क-लुढ़क करके रसगुल्ला।
बर्फी आई थी इतराती,
साथ जलेबी रस टपकाती।
बालूशाही सोच रही थी,
बैठी खुद को कोंच रही थी—
'होगी कोई जुगत भिड़ानी,
बनूं मिठाई की मैं रानी।'
किंतु वाह ! गाजर का हलवा,
हलवे का था ऐसा जलवा।
उसने अपना रंग जमाया,
सबसे पहला नंबर पाया।

—अरविन्दकुमार

हमें सुनाओ

सुनो नदी जी, हमें सुनाओ अपनी राम कहानी तुम,
पापा-मम्मी बतलाते हैं, बहुत बड़ी हो दानी तुम।

सदा जागती, कभी न सोती
चलती दिन में, रात में,
क्या हो जाता तुम्हें—
बिफरती हो तुम क्यों बरसात में ?
कहो, कहां से भर लाती हो इतना सारा पानी तुम ?

गांव-गली, तहसील, डाकघर
बोलो, पता-ठिकाना जी,
कहो, कहां से आती, जाती
कहां, हमें बतलाना जी ?
कौन तुम्हारा राजा बोलो, कौन देश की रानी तुम ?

देखा तुम्हें कभी न रोते
तुम हर पल मुसकाती हो,
ताजा-दम दिखती हो हरदम
क्या पीती, क्या खाती हो ?
हुई न बूढ़ी क्यों, कहते सब काफी साल पुरानी तुम !

—कृष्ण शलभ

सोचा करता

मैं भी क्या था, पिछलग्गू था
सच मानो तो बस दब्बू था,
शुरू काम कब कर सकता था ?
कोई करता, तब करता था।

कितने ही थे काम जिन्हें मैं
इसीलिए न कर पाता था,
अब सोचा करता हूं कितनी
जल्दी मैं घबरा जाता था।

बात किसी से करनी पड़ती
अपनी तो नानी ही मरती,
अगर हंसो ना, तो बतलाऊं
सब कहते, बछिया का ताऊ !

—दिविक रमेश

महल-अटारी

आपस में जब जुड़तीं ईंटें,
महल-अटारी बनतीं ईंटें।
बातें करतीं आसमान से,
ऊपर-ऊपर उठतीं ईंटें।
कड़ी धूप हो या वर्षा हो—
नहीं किसी से डरतीं ईंटें।
आंधी, ओले, धूल, बवंडर—
सब मुसीबतें सहतीं ईंटें।
मेलज़ोल का पाठ पढ़ातीं,
मिलजुलकर ही रहतीं ईंटें।

—राजनारायण चौधरी

मेरा बगीचा

कैसा सुंदर सजा बगीचा,
अपने हाथों मैंने सींचा।
मैंने ही सब गड्ढे खोदे,
तरह-तरह के रोपे पौधे।
कितना सुंदर खिला अनार,
सेम, तुरई, मूली, कचनार।
मेथी, पालक, धनिया, जौ,
गेहूं, चना, लाई, सरसों।
ये आलू हैं, उधर मटर,
गेंदा, गुल मेंहदी, गुड़हल।
गाजर, गोभी और करेला,
फल-फूलों का लगा है मेला।

—शिवअवतार सरस

भूत उछला

— राज गिल

सरदार जी, बालम और हरींद्र चाचा शिकार से लौट आए थे। जसप्रीत पूछना चाहती थी कि इस बार शिकार कैसा रहा। वह अपने बड़े भाई बालम के इर्द-गिर्द घूम रही थी। पिता उसे टाल देते थे। एक बालम ही था जो उसे अपने रोमांचक अनुभव की पूरी कहानी सुनाता था।

बालम उसकी उत्सुकता भांप गया था। उसने चिढ़ाने के लिए कहा— "मेरे पीछे-पीछे क्यों घूम रही है ?"

"मैं तो यह पूछने आई थी कि क्या खाओगे ?"— जसप्रीत ने बात बनाई।

बालम ने मुंह चिढ़ाते हुए उसके शब्द दोहरा दिए। हंसकर बोला— "मैं जानता हूं, तू क्यों चक्कर काट रही है ?"

"अब जल्दी से सुना दो।"— कहकर जसप्रीत वहीं बैठ गई और उसने बालम के चेहरे पर आंखें टिका दीं।

बालम सरदार जी तथा हरींद्र चाचा के साथ मुजफ्फरनगर के पास गंगा नदी के थाले में शिकार खेलने गया था।

"आज तो खैर ही हुई। हमने भूत देखा।"— बालम ने बनावटी डर के साथ कहा।

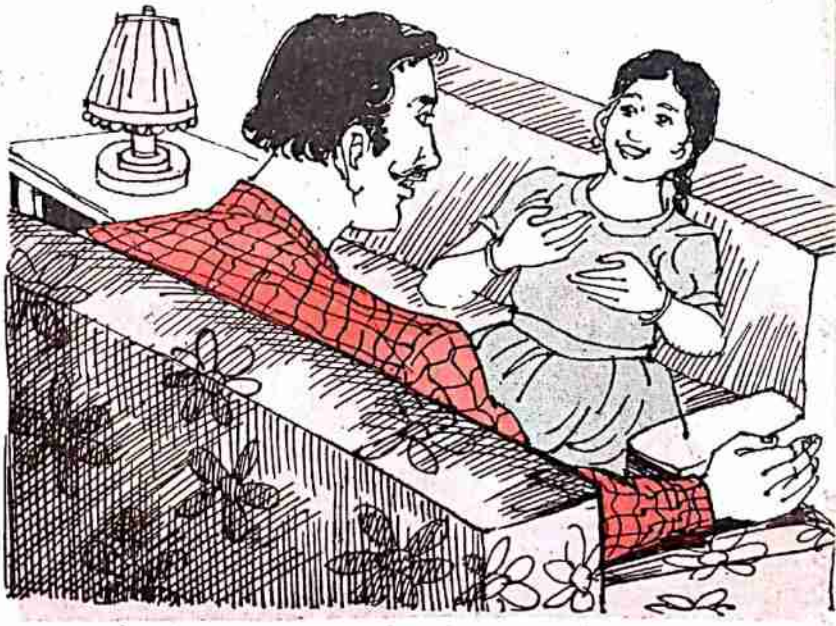
"भूत ! कैसा था भूत ?"— जसप्रीत ने उत्तेजित स्वर में पूछा।

"बहुत मोटा-ताजा, पैने दांत थे उसके।"— बालम ने कहा— "हम गलत जंगल में घुस गए थे।"

— "जंगल तो सारा एक ही होता है।"

— "नहीं, ऊपर से एक-सा दिखाई देने वाले जंगल के भी कई हिस्से होते हैं।"

"लेकिन आप लोग तो उस जंगल को अच्छी तरह जानते हैं, फिर भूत वाले जंगल में जाने की गलती कैसे कर गए ?"— जसप्रीत ने पूछा।



"धुंध के कारण पता नहीं चला। वहां हमारा सामना सूअर के भूत से हो गया। उसे देखकर हरींद्र चाचा ने जीप लट्टू की तरह घुमा दी। और हम जैसे-तैसे भूत वाले जंगल से बाहर आ गए। सच, मैं तो बहुत डर गया था।"— बालम डरने का नाटक करते हुए बोला।

यह देख, जसप्रीत खिलखिला उठी। उसने कहा— "भला कहीं सूअर का भी भूत होता है !"

"जब आदमी का भूत हो सकता है, तो सूअर का भूत क्यों नहीं हो सकता ?"— बालम कह रहा था। तभी हरींद्र चाचा वहां आ गए।

उन्होंने जसप्रीत से कहा— "बालम ठीक ही कह रहा है। जहां वह सूअर रहता है, वहां कोई शिकारी नहीं जाता। सब लोग उसे सूअर का भूत ही कहते हैं।"

"क्यों भला ?"— जसप्रीत ने विस्मय से आंखें गोल-गोल करके पूछा।

"मैं तुम्हें पूरी कहानी सुना देता हूं।"— हरींद्र ने चारपाई पर बैठते हुए कहा। वह सुनाने लगे—

"पुरानी बात है। एक बार कलक्टर जंगल में शिकार खेलने गया। उस जंगल में सूअर खरगोशों से भी अधिक थे। मौके की बात, जंगल में घूमते हुए सुबह से शाम हो गई, किंतु उस दिन एक भी सूअर

नजर नहीं आया । कार में घूमने वाला कलक्टर पैदल चल-चलकर परेशान हो चुका था । गुस्से से खीझ भी रहा था । बार-बार कह रहा था— 'मैं बेकार ही आया ।'

"इतने में आगे-आगे चल रहे शिकारी ने सीटी बजाई । इसका मतलब यही था कि उसने सूअर को देखा था । शिकारी के इशारे पर मैंने जो बाईं तरफ देखा, तो एक बहुत बड़ा सूअर नजर आया । वह एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में घुस रहा था । शिकारी के भगाने पर भी दूसरे सूअरों की तरह मैदान की तरफ नहीं भागा । सूअरों को अपने दौड़ने की ताकत पर बहुत घमंड होता है । वे समझते हैं कि उनकी गति गोली से भी तेज होती है । इसलिए गोली चलने पर भी वे सीधे भागते रहते हैं ।

"आगे घना जंगल था । सूअर उधर ही जा रहा था । मैं समझ गया अगर सूअर वहां घुस गया, तो फिर उसे कोई नहीं ढूंढ़ सकेगा । आखिर कलक्टर साहब ने निशाना साधा और गोली चला दी । गोली ठीक जगह लगी । सूअर कोई पांच-छह फीट ऊपर उछला और फिर पीठ के बल धरती पर आ गिरा । उसका हिलना-डुलना बंद हो गया ।

"कुछ देर बाद मृत सूअर को गाड़ी में लाद लिया गया । कलक्टर बहुत खुश था । वह बार-बार अपने निशाने की तारीफ कर रहा था । लेकिन वह बहुत थक भी चुका था । हमने सूअर के ऊपर घास डाल दी । कलक्टर उस पर ऐसे बैठ गया जैसे फोटो उतरवा रहा हो ।

"हम थोड़ी ही दूर गए होंगे कि एक भयानक चीख सुनाई दी । हमने देखा, कलक्टर हवा में उछलकर दूर जा गिरा और सूअर तेजी से भागा जा रहा है । इससे पहले कि हममें से कोई बंदूक उठाता, सूअर झाड़ियों में घुसकर गायब हो गया ।

"हमने दौड़कर कलक्टर को उठाया। उसे यों अचानक उछलकर गिरने से चोट आ गई थी । जल्दी ही यह खबर फैल गई । जितने मुंह उतनी बातें, लोग कह रहे थे–वह कोई जिन था जो कलक्टर को लेने आया था । किसी ने कहा, जहां सूअर को गोली लगी थी, वह पीर का स्थान था । वहां हिंसा हो ही नहीं सकती थी । एक ने कहा कि सूअर असल में भूत था । उसे शिकारियों को सताने में आनंद आता था ।"

"तो क्या आज आपका सामना उसी भूत सूअर से हुआ था ?"— जसप्रीत ने पूछा ।

— "हमने उसे देखा जरूर था, पर जंगल में रुके नहीं । क्योंकि वह विचित्र व्यवहार करता है । लगता है जैसे पागल हो गया हो । इसलिए शिकारी उससे दूर ही रहते हैं । कोई उसे छेड़ता नहीं । जंगल में खा-खाकर वह खूब मोटा हो गया है । ताकतवर भी खूब है । कई शिकारी उसके चक्कर में मारे जा चुके हैं ।"

"लोग उस सूअर के बारे में ऐसा क्यों मानते हैं चाचा जी ?" — जसप्रीत ने पूछा ।

"बात यह है कि कलक्टर की गोली सूअर की खोपड़ी के पिछले भाग में लगी । गोली की चोट से वह बेहोश हो गया । हम सबने उसे मरा समझ लिया था और कलक्टर उसके ऊपर जाकर बैठ गया था । जैसे ही सूअर को होश आया वह उछला और कलक्टर को गिराकर भाग निकला ।

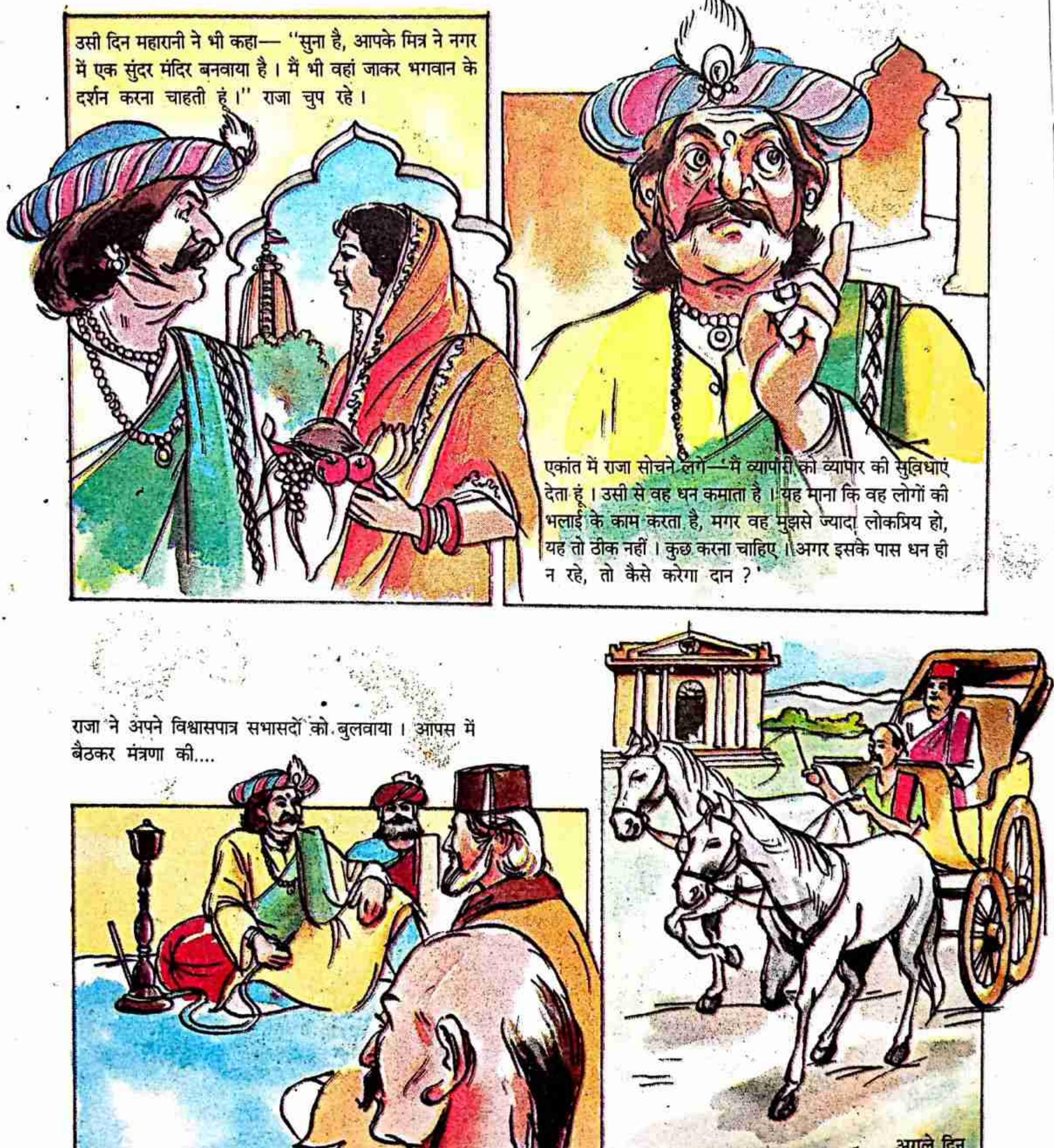
"गोली की चोट का उस पर विचित्र प्रभाव हुआ । सूअर ऊलजलूल हरकतें करने लगा । शिकारी उसकी ओर बंदूक तानते, तो वह दूर जाने की बजाए उन्हीं की ओर भाग पड़ता । चाहे जब जिस पर,बिन्ना बात हमला बोल देता । कोई नहीं जानता कि वह सूअर कब क्या कर बैठेगा !

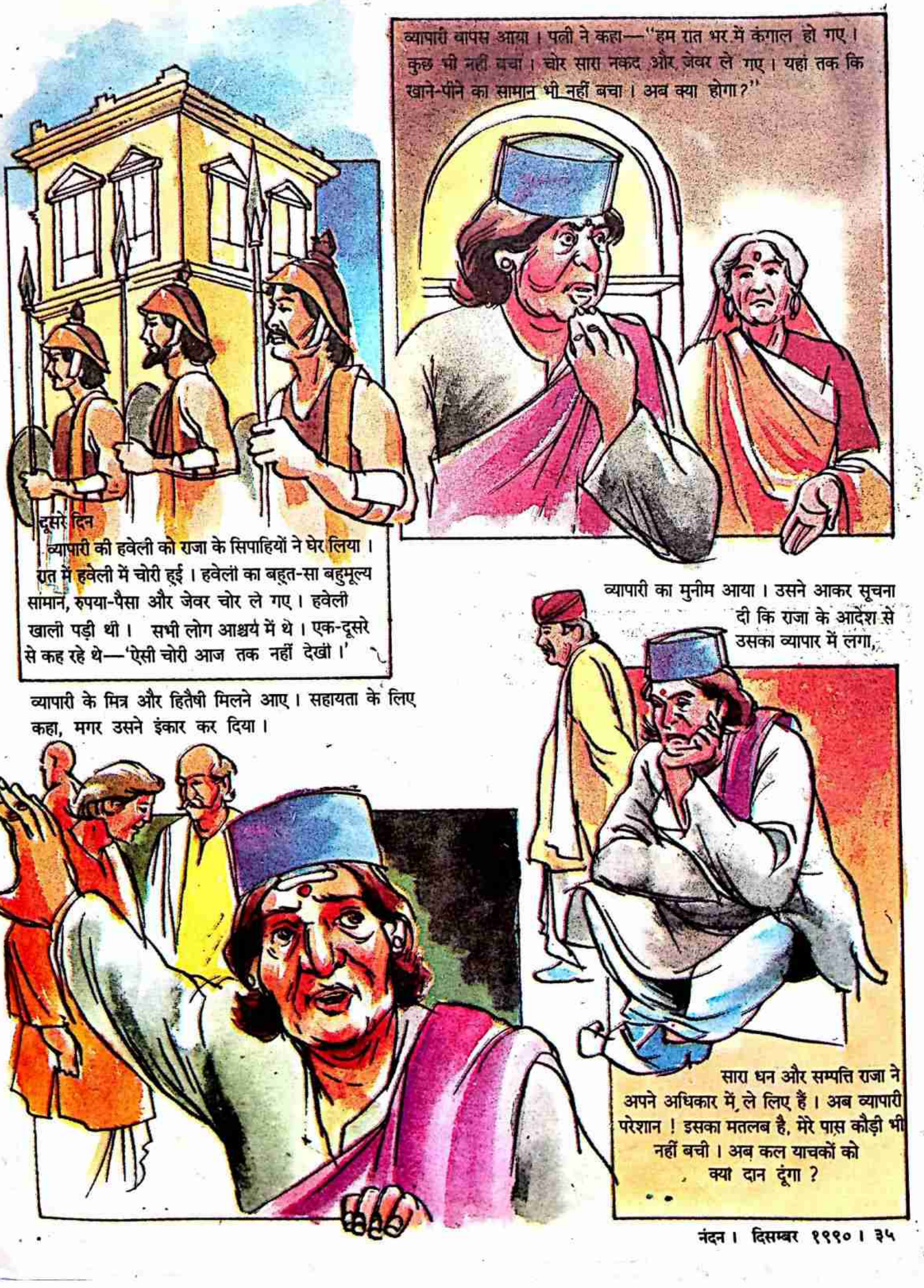
"बस, सब उससे बचकर चलने लगे । और उसके बारे में तरह-तरह की कहानियां प्रचलित हो गईं । इसीलिए वह भूत के रूप में मशहूर हो गया है ।"

"अगर वह आपकी तरफ आता, तो क्या आप उस पर गोली न चलाते ?"— जसप्रीत ने पूछा ।

"भूत पर गोली चलाकर क्या अपनी आफत बुलानी थी ?"— हरींद्र ने कहा और खिलखिला उठे । जसप्रीत भी हंस पड़ी । ●


सच्चा दानी
एक था व्यापारी । दूर दूर तक व्यापार फैला था । राजा का मित्र था वह । अक्सर राजा व्यापारी को महल में बुलाकर उससे राज्य के कल्याणकारी कार्यों के बारे में बातें करते थे ।
राजा के मित्र होने से व्यापारी का सम्मान बढ़ गया था ।
व्यापारी के पास धन की कमी नहीं थी । वह दानी भी था । जो उसके द्वार पर आता, खाली हाथ नहीं लौटता था । रोज सुबह वह गरीबों को अपने हाथ से अनाज-कपड़ा और रुपया-पैसा, जैसी, जिसकी जरूरत होती, बांटता था ।
चारों ओर उसके दान की कीर्ति फैली थी । नगरवासी इकट्ठे होते, तो व्यापारी के दान की चर्चा करते ।
एक दिन मंत्री ने राजा के कान भरे—"महाराज, आप राजा हैं, प्रजा पालक हैं, मगर आपके महान कार्यों से ज्यादा चर्चा राज्य में आपके मित्र व्यापारी के दान की हो रही है । यह ठीक नहीं ।"


उसी दिन महारानी ने भी कहा— "सुना है, आपके मित्र ने नगर में एक सुंदर मंदिर बनवाया है । मैं भी वहां जाकर भगवान के दर्शन करना चाहती हूं ।" राजा चुप रहे ।
एकांत में राजा सोचने लगे—"मैं व्यापारी को व्यापार की सुविधाएं देता हूं । उसी से वह धन कमाता है । यह माना कि वह लोगों की भलाई के काम करता है, मगर वह मुझसे ज्यादा लोकप्रिय हो, यह तो ठीक नहीं । कुछ करना चाहिए । अगर इसके पास धन ही न रहे, तो कैसे करेगा दान ?"
राजा ने अपने विश्वासपात्र सभासदों को बुलवाया । आपस में बैठकर मंत्रणा की....
अगले दिन व्यापारी किसी काम से बाहर जाने वाला था । वह अपनी दो घोड़ों की बग्घी में बैठकर चल पड़ा ।



दूसरे दिन
व्यापारी की हवेली को राजा के सिपाहियों ने घेर लिया । रात में हवेली में चोरी हुई । हवेली का बहुत-सा बहुमूल्य सामान, रुपया-पैसा और जेवर चोर ले गए । हवेली खाली पड़ी थी । सभी लोग आश्चर्य में थे । एक-दूसरे से कह रहे थे—'ऐसी चोरी आज तक नहीं देखी ।'
व्यापारी वापस आया । पत्नी ने कहा—"हम रात भर में कंगाल हो गए । कुछ भी नहीं बचा । चोर सारा नकद और जेवर ले गए । यहां तक कि खाने-पीने का सामान भी नहीं बचा । अब क्या होगा?"
व्यापारी के मित्र और हितैषी मिलने आए । सहायता के लिए कहा, मगर उसने इंकार कर दिया ।
व्यापारी का मुनीम आया । उसने आकर सूचना दी कि राजा के आदेश से उसका व्यापार में लगा,
सारा धन और सम्पत्ति राजा ने अपने अधिकार में ले लिए हैं । अब व्यापारी परेशान ! इसका मतलब है, मेरे पास कौड़ी भी नहीं बची । अब कल याचकों को क्या दान दूंगा ?

मुनीम चला गया, तभी व्यापारी को कोने में पड़ी माली की खुरपी और एक रस्सी नजर आई । तुरंत तय किया—'मैं दान करना नहीं छोड़ूंगा । थोड़ा ही सही, अपनी मेहनत की कमाई से जो बन पड़ेगा, दान करूंगा ।'



दूसरे दिन मुंह अंधेरे वेश बदलकर व्यापारी घास काटने चला गया । हाथों में छाले पड़ गए, मगर फिर भी घास काटकर रस्सी में बांधी और बाजार में बेच आया । घर आकर नहा-धोकर याचक की प्रतीक्षा करने लगा ।



फटे-चीथड़े पहने एक याचक आया । व्यापारी ने अपनी मुट्ठी के पैसे उसे देते हुए कहा—"भइया, क्षमा करना । आज इतने में ही संतोष करो ।" कहते हुए पैसे उसे दे दिए । याचक ने अपने फटे कपड़े उतार दिए ।



वह और कोई नहीं, राजा ही थे । व्यापारी बोला—"महाराज आप ! और वह भी इस वेश में ।"



राजा बोले—"हां, मित्र, तुम सचमुच में सच्चे दानी हो । जो अपनी मेहनत की कमाई पर विश्वास रखता है, वह किसी के आगे नहीं झुकता, इसीलिए मुझे स्वयं आना पड़ा । तुम्हारा सारा धन सुरक्षित है ।" पूरी बात जानकर व्यापारी मुसकराने लगा ।●

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २७, अंक २, नई दिल्ली; दिसम्बर '९०, कार्तिक-अगहन, शक सं. १९१२

वे रोते-रोते हंसते हैं

नई दिल्ली । हमारे यहां कठपुतलियां नाचती हैं, सर्कस में जोकरों के करतब देखते ही बनते हैं । लेकिन नाचती-गाती कठपुतलियां, सर्कस के तमाशे की जरूरत उन्हें अधिक है, जो मैदान में जाकर इसका आनंद नहीं उठा सकते । हमारे कलाकारों को अपना कुछ समय अनाथ और रोगियों के लिए भी रखना चाहिए । अमरीका के 'बिग एपल सर्कस' के कलाकार ऐसा करते हैं ।

लास एंजिल्स के एक अस्पताल में उसकी नाक के स्थान पर एक छोटा-सा गुब्बारा उग आया है । आंखों के किनारे दो बत्तखें बनी हैं । गाल लाल हो गए हैं और उसके मुंह से सैकड़ों बुलबुले निकल रहे हैं । वह उन बुलबुलों को पकड़ने दौड़ता है । उन्हें पकड़ने के चक्कर में कभी इधर गिरता है, तो कभी उधर । उसकी पकौड़ा नाक टूटकर नीचे गिर पड़ती है । यह देख बच्चे हंसने -खिलखिलाने लगते हैं । यह है बच्चों का अस्पताल । यहां बच्चे इतने बीमार हैं कि शायद उनमें से आधे ही घर लौट सकेंगे ।

जोकरों की टीम के नेता डा. स्टब्स हैं । डा. स्टब्स 'बिग एपल सर्कस'से जुड़े हैं । इस सर्कस के लोग शहर के सभी बड़े अस्पतालों में जाकर लोगों का मनोरंजन करते हैं ।

डा. स्टब्स कहते हैं—"मुझ जैसा नकली डाक्टर इन बच्चों का इलाज तो नहीं कर सकता । लेकिन कुछ देर के लिए इन्हें हंसा पाना ही बहुत बड़ी बात है । हमें देखकर ये बच्चे थोड़ी देर के लिए ही सही, अपना दुःख भूल जाते हैं ।

अस्पताल के डाक्टर इन जोकरों को बहुत पसंद करते हैं । उनका कहना है कि उनके इंतजार में बच्चे सब कुछ भूल जाते हैं । ये जोकर बच्चों के दिलों तक पहुंच गए हैं, जबकि कोई भी डाक्टर वहां तक नहीं पहुंच पाता ।

रिजर्व बैंक में हिन्दी

नई दिल्ली । रिज़र्व बैंक ने राजभाषा समारोह का आयोजन किया । नंदन के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती समारोह के मुख्य अतिथि थे । उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए । भारतीय रिजर्व बैंक के प्रबंधक श्री आर. वेंकटेसन ने समारोह की अध्यक्षता की । श्री वेंकटेसन ने कहा कि हिन्दी का प्रयोग और भी बढ़ना चाहिए ।

विश्व हास्य सम्मेलन

हैदराबाद । फरवरी'९१ में यहां विश्व हास्य सम्मेलन होगा । इसमें अमरीका, चीन, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि देशों के कवि-कलाकार भाग लेंगे । भारतीय कार्टूनिस्ट, कवि तथा फिल्मकार भी आएंगे । इस अवसर पर हास्य फिल्में, कहानियां, लेख तथा कविताएं पढ़ी जाएंगी । हास्य सम्बंधी एक प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी ।

मंगल पर जीवन

फ्लोरिडा । वैज्ञानिकों ने फिर से कहा है कि मंगल ग्रह पर जीवन रहा है और अब भी हो सकता है । मंगल ग्रह की स्थितियों का अध्ययन करके यह कहा गया है ।

सबसे बड़ा बाजा

बोहेमिया । पश्चिमी बोहेमिया के एक संगीत स्कूल में दुनिया का शायद सबसे बड़ा बाजा रखा है । इसकी लम्बाई २.६ मीटर और वजन पचास किलो ग्राम है । इसे १९२६ में विश्व संगीत प्रदर्शनी के लिए बनाया गया था ।

गुड्डा गोर्बाचोव

मास्को । सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचोव की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है । उनकी शक्ल से मिलते-जुलते खिलौनों की आजकल बाजार में भारी मांग है ।

अच्छे कार्यक्रम हों

मिआमी । अमरीका में यदि कोई व्यक्ति अठारह वर्ष का है, तो उसके पूरे दो वर्ष टी.वी. देखने में गुजर जाते हैं । इन टी.वी. कार्यक्रमों में दो लाख विज्ञापन होते हैं । बाल कल्याण से जुड़े लोगों ने राष्ट्रपति बुश को एक ज्ञापन दिया है । इसमें कहा गया है जार्ज बुश टी.वी. कार्यक्रम बनाने वालों को आदेश दें कि वे अच्छे कार्यक्रम बनाएं , जो बच्चों को गलत राह पर न ले जाएं ।

चिम्पांजी क्यों भेजा

पेरिस । पिछले दिनों प्रयोगों के लिए फ्रांस ने एक चिम्पांजी और एक ओरांगउटांग जापान भेजा । यह जानकर फ्रांस के लोगों का गुस्सा भड़क उठा । कहा गया कि जानवर अपने अधिकारों की मांग नहीं कर सकते, इसलिए हम उनकी आवाज उठाएंगे । सैकड़ों लोगों ने जुलूस निकालकर अपना विरोध प्रगट किया ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

हिंदी के द्वारा बिखरे हुए भारत में एकता की भावना भरी जा सकती है।
—गणेशशंकर विद्यार्थी

गणेश जी की याद

गणेशशंकर विद्यार्थी का नाम बहुतों ने नहीं सुना। विद्यार्थी जी बेजोड़ पत्रकार थे। कानपुर से 'प्रताप' अखबार निकालते थे। उन्होंने एकता के लिए अपना बलिदान दिया। आज वह होते, तो सौ वर्ष के होते। पर विद्यार्थी जी तो चालीस बरस ही जिए। उनकी याद में कोई स्मारक अभी नहीं बना।

लेखक, कवि, कलाकार और पत्रकारों का हमारे देश में वैसा मान-सम्मान नहीं है, जैसा होना चाहिए। लोग फिल्मों और फिल्मी कलाकारों के पीछे अधिक दौड़ते हैं। पर वहां छलावा अधिक है। आज जरूरत है, समाज और देश को आगे ले जाने वालों को हम याद करें। उनसे प्रेरणा लें।

दो सिर वाला दैत्य

नई दिल्ली। बलारिया दूतावास में 'दो सिर वाला दैत्य' पुस्तक का विमोचन किया गया। इसके लेखक श्री रमेश कौशिक हैं। पुस्तक में कई देशों की लोक-कथाएं हैं। इस अवसर पर डा. श्याम सिंह शशि ने कहा कि बच्चों की पुस्तकें सस्ती होनी चाहिएं। इस अवसर पर बलारिया दूतावास सूचना केंद्र के निदेशक श्री अलानास अतानास्सोव, श्री इलिया स्तोयानोव तथा लेखक वालेंतिन प्लामेनोव भी उपस्थित थे।

चालीस किलो दूध

श्रीगंगानगर। यहां की एक डेयरी में एक गाय चालीस किलो दूध रोज देती है। इस डेयरी से देश के हर हिस्से में पशु भेजे जाते हैं।

मूर्ति मिली

भुवनेश्वर। जगन्नाथपुरी के गुंडिचा मंदिर से पांच वर्ष पहले गरुड़ की मूर्ति चुरा ली गई थी। चोरों से बरामद करके यह मूर्ति मंदिर को लौटा दी गई है। इसमें रत्न जड़े हैं। कीमत करोड़ों रुपए है।

जहर और जीवन

बर्न। दुनिया में सबसे महंगी चीज क्या है? सबके मुंह से निकलेगा सोना। लेकिन नहीं, दुनिया में सबसे महंगा है —सांप का जहर। यही नहीं, अमरीका में पाई जाने वाली एक मकड़ी के एक औंस जहर की कीमत है— चौबीस लाख डालर। ये जहर दवाइयों में इस्तेमाल होते हैं। ये दवाइयां मनुष्य के जीवन के लिए बेहद जरूरी हैं।

डाक्टर रोबोट

लंदन। ब्रिटेन के ब्रिस्टल विश्वविद्यालय में प्रयोग किए जा रहे हैं। यदि इनमें सफलता मिली, तो जल्दी ही कठिन से कठिन आपरेशन रोबोट किया करेंगे। ऐसा होने से डाक्टरों का काम काफी घट जाएगा।

मोटापा घटाओ

बम्बई। यहां पुलिस कर्मियों का मोटापा घटाने की योजना बनाई गई है। यह योजना करीब छह हजार पुलिस वालों पर लागू होगी। उनके लिए व्यायाम, हलकी दौड़ अनिवार्य कर दिए जाएंगे।

पड़दादी की बुनाई

विलिनियस। सोवियत संघ के लिथुआनिया गणराज्य की बाखरा जसैटे की उम्र १३२ वर्ष है। इन्होंने पूरी जिंदगी अपने गांव में ही बिता दी। इस उम्र में भी वह घर का पूरा काम करती हैं। यहां तक कि स्वेटर भी बुनती हैं।

विशाल अजगर

ताइपै। तांइवान का राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ९५ मीटर के एक विशाल अजगर का प्रदर्शन किया गया। राष्ट्रपति भवन के सामने इस अजगर को देखने के लिए हजारों लोग जमा थे। इस नकली अजगर को पचासों खिलाड़ियों ने अपने कंधे पर उठा रखा था।

तोते मुसीबत में

सिडनी। दुनिया में तोते गायब हो रहे हैं। यदि मिट्ठू राम इसी तरह से गायब होते रहे, तो जल्दी ही उनके खत्म होने की आशंका है। बड़ी संख्या में तोते निर्यात किए जाते हैं। लेकिन उनके स्वास्थ्य और खान-पान की देखभाल नहीं की जाती। इससे पचास प्रतिशत तोते रास्ते में मर जाते हैं। बाकी में से दस प्रतिशत को पिंजरे में रहना पसंद नहीं आता और वे दम तोड़ देते हैं।

पांच हजार वर्ष बाद

रानीगंज। अजय खेतान नाम के इंजीनियर ने एक कैलेंडर विकसित किया है। इसमें पांच हजार साल तक की तिथियां देखी जा सकती हैं। कैलेंडर बहुत छोटा है। इसकी ऊंचाई तीन से.मी. और व्यास १.३ से.मी. है।

बच्चों की पुस्तक

लंदन। ब्रिटेन की एक किशोरी मुटेंट हेरो टर्टल्स ने एक पुस्तक लिखी है। बच्चों की इस पुस्तक की हाथोंहाथ दो लाख प्रतियां बिक गईं।



ये लो!

कैम्पको ट्रीट – ज़ायकेदार कैरमल मिल्क चॉकलेट बार, जिसका स्वाद है ज़्यादा मज़ेदार.



कैम्पको ट्रीट! ख़ुशियां मनाने का सबसे बढ़िया तरीका. कैरमल और चॉकलेट का ऐसा सरस मिलन कि खाए बिना रहा न जाए! कैरमल की मधुरता और मिल्क चॉकलेट की पौष्टिकता. दोस्तों को खिलाओ, ख़ुद भी खाओ. स्वादिष्ट ट्रीट...कैम्पको ट्रीट.

TOP QUALITY LOW PRICE

कैम्पको ट्रीट: हर अवसर को मधुर बनाए.

भारत के सबसे बड़े, सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित. कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर

Campco chocolates: Milk / White / Treat / TURBO / Eclairs / mega bite / Playtime / RUBIES / TOFFEE / Assorted Gift Box / Campco beverages: WINNER / COCOA

R K SWAMY/CL/8344/HIN


मैंगो

मैंगो से महान!



न्यूट्रीन के नेचुरो सदाबहार. मोटे-मोटे जूसी मैंगो बार.
आम के शुद्ध गूदे से तैयार.
मीठे-मीठे. रस की खान. वाकई! मैंगो से महान!

nutrine

Scanned with CamScanner



मनचाहे संगीत का केसियो पर आनंद उठाएं... बस परदों पर हाथ घुमाएं

लय की धुन पर बजाओ मनपसंद गीत ...और देखो, कैसे थिरकते हैं प्यारे तुम्हारे मीत!

तो आओ, केसियो की संगीतमय खूबी का असली आनंद उठाओ... सचमुच इसका जवाब कहीं न पाओ!



SA-20

● 32 मिनी की वाले ● 100 पी सी एम पहले ही सेट किए टोन ● 19 पी सी एम ऑटो रिद्म ● 13 "सुपर अकम्पनीमेंट" बेकिंग पैटर्न ● पहले सेट किए गए प्रदर्शनी ट्यून ● दुहेरी स्पीकर सिस्टम



PT-380

● 32 मिनी की वाले ● 100 पी सी एम पहले सेट किए गए टोन ● 12 पी सी एम ऑटोरिद्म ● मिनी माइक्रोफोन के साथ ● आर ओ एम पैक कंपेटिबल ● मेलोडी गाइड फंक्शन ● 5 बिल्ट-इन साउण्ड इफेक्ट पैड

CITY MUSIC CO., PTE LTD.
Singapore Tel: 3377058, 3377545

ONFLO MUSIC CO., LTD.
Hong Kong Tel: 722 4195

RAINBOW PHOTO FINISHERS PTE LTD.
Nepal, Kathmandu Tel: 221724

GENERAL ENTERPRISES COMPANY
U.A.E., Dubai Tel: 224131/2/3

MAHMOOD SALEH ABBAR CO.
Saudi Arabia, Jeddah Tel: (02)6473995

ARABIAN CAR MARKETING CO., LTD.
Oman Tel: 793741

CASIO COMPUTER CO., LTD.
Tokyo, Japan

SA-PT



एक ताली बढ़ चलो; दो ताली रुक जाओ

—सत्येन महापात्र

लखनऊ। आशीष पंवार ने एक करामाती रोबोट बनाया है। इस रोबोट को अंतर्राष्ट्रीय विश्व ओलम्पिक प्रतियोगिता में कांस्य पदक मिला।

आशीष सिटी मांटेसरी स्कूल, चौक शाखा, लखनऊ, का कक्षा ११ विज्ञान का छात्र है। वह ककड़ीपुर गांव (जिला मेरठ) के किसान का बेटा है। उसके स्कूल के अध्यापकों और प्रधानाचार्य साधना चूड़ामणि ने उसे बहुत सहयोग दिया। उसके स्कूल के साथियों ने अपना 'स्पोर्टस-डे' न मनाकर, वे पैसे आशीष को दिए।

आशीष के रोबोट का नाम 'सियास दि वाच मैन' है। इसके सभी कल-पुर्जे लखनऊ में ही मिल गए। रोबोट को तैयार करने में तीस हजार रुपए लगे। ग्लासगो में 'सियास' का मुकाबला १२ देशों से आए ६० रोबोटों से हुआ। 'व्यवहार' श्रेणी में इसे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। इसी श्रेणी में पहला स्थान ब्रिटेन को और दूसरा स्थान जर्मनी को मिला। 'सियास' चौकीदारी कर सकता है। फैक्ट्री में जितने लोग आए, उनकी कुल संख्या बता सकता है। सुबह के समय बत्ती बुझा और शाम को बत्ती जला सकता है। वर्षा की कुछ बूंदें पड़ने पर वह ऊंची आवाज से 'वर्षा अलार्म' देता है। ताली बजाकर बुलाने पर सियास आशीष की तरफ आ जाता है। दो ताली बजाने पर रुक जाता है।

पहलवान से परेशान

लंदन। आस्ट्रिया की एक विमान कम्पनी ने जायंट हेस्टेक्स नामक पहलवान की यात्राओं पर रोक लगा दी है। कम्पनी का कहना है कि पहलवान इतना मोटा है कि उसे बैठने के लिए एक नहीं, तीन सीटें चाहिएं। इससे कम्पनी को भारी नुकसान होता है।

विटामिन और चेतावनी

न्यूयार्क। अभी तक विटामिन स्वस्थ रहने के लिए खाए जाते हैं। लेकिन डाक्टरों का कहना है कि ज्यादा विटामिन खाना बेहद नुकसानदायक हो सकता है। विटामिन की बोतलों पर वैसी ही चेतावनी लिखी जानी चाहिए, जैसी अन्य दवाओं पर लिखी होती है।

कितने तारे

वाशिंगटन। अमरीका के खगोल शास्त्रियों ने अब तक खोजी गई सबसे बड़ी 'आकाश गंगा' का पता लगाया है। इसमें एक खरब तारे होने का अनुमान है। अब तक जिन आकाश गंगाओं के बारे में जानकारी है, उनसे यह साठ गुनी बड़ी है। इसकी पृथ्वी से दूरी भी साठ लाख प्रकाश वर्ष है।

साइकिल चलाइए

नई दिल्ली। दुनिया भर में पेट्रोल की कीमतें आसमान छू रही हैं। अमरीका की एक कम्पनी ने पेट्रोल बचाने के तीन तरीके सुझाए हैं— साइकिल चलाइए, पैदल चलिए और बसों की संख्या बढ़ाइए।

नन्हे समाचार

☐ तेरहवें एशियाई खेल थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में होंगे।

☐ उन्नीसवीं सदी के स्वतंत्रता सेनानी सिमोन बोलीवर की तलवार कोलम्बिया के संग्रहालय को लौटा दी जाएगी। इसे सोलह वर्ष पहले चुरा लिया गया था।

☐ पिछले दिनों दीवाली के अवसर पर बम्बई के एक होटल में मिठाई पांच सौ रुपए किलो बिकी।

☐ जापान में एक ऐसा रेस्तरां है, जहां चाय और काफी सोने के बर्तनों में पिलाई जाती हैं।

☐ भारतीय पुलिस फोर्स के ओमवीर सिंह और भारती सिंह को बीजिंग एशियाई खेलों में रजत पदक जीतने की खुशी में तरक्की दी गई है।

☐ पोषण विशेषज्ञों ने भारतीय खाने की एक सूची निकाली है। इसमें बताया गया है कि शाकाहारी भोजन सस्ता और अधिक स्वास्थ्यवर्धक होता है।

☐ गिनीज बुक के नए संस्करण में पंद्रह हजार ऐसे लोगों के नाम हैं, जिन्होंने किसी न किसी क्षेत्र में कीर्तिमान बनाया है।

☐ ब्रिटेन के एक मंत्री पेट्रिक निकोलस नशा करके कार चला रहे थे। उन्हें अपने पद से हाथ धोना पड़ा।

☐ पंजाब में आतंकवादी हिंसा के शिकार व्यक्तियों के परिवार वालों को राज्य सरकार पचास हजार रुपए देगी।

☐ १९९४ में विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता अमरीका में होगी।

☐ भारत में सर्कस की सबसे पहली शुरुआत महाराष्ट्र में हुई थी। उसके बाद केरल के तिलिचरी गांव में एक स्कूल खोला गया। इसे शुरू करने वाले थे—किलेरी कुंज।

☐ २० दृष्टिहीन व्यक्तियों ने दार्जिलिंग के हिमालय पर्वतारोहण संस्थान में दाखिला लिया है। ये सब पर्वतारोही बनना चाहते हैं।

सचित्र समाचार



↑ जब दुनिया में शांति होगी, तभी बच्चों का कल सुनहरा होगा। सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव : शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित।

स्पेनी भाषा के लेखक आक्टोविया पाज को उनके लेखन के लिए नोबेल पुरस्कार। →



स्कूल जाती नन्ही बारबी : बारबी के क़ई नए रूप बाजार में आए हैं। →





शोभित कुशारी को सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार : 'नंदन' में भी पुरस्कृत चित्र छप चुके हैं।

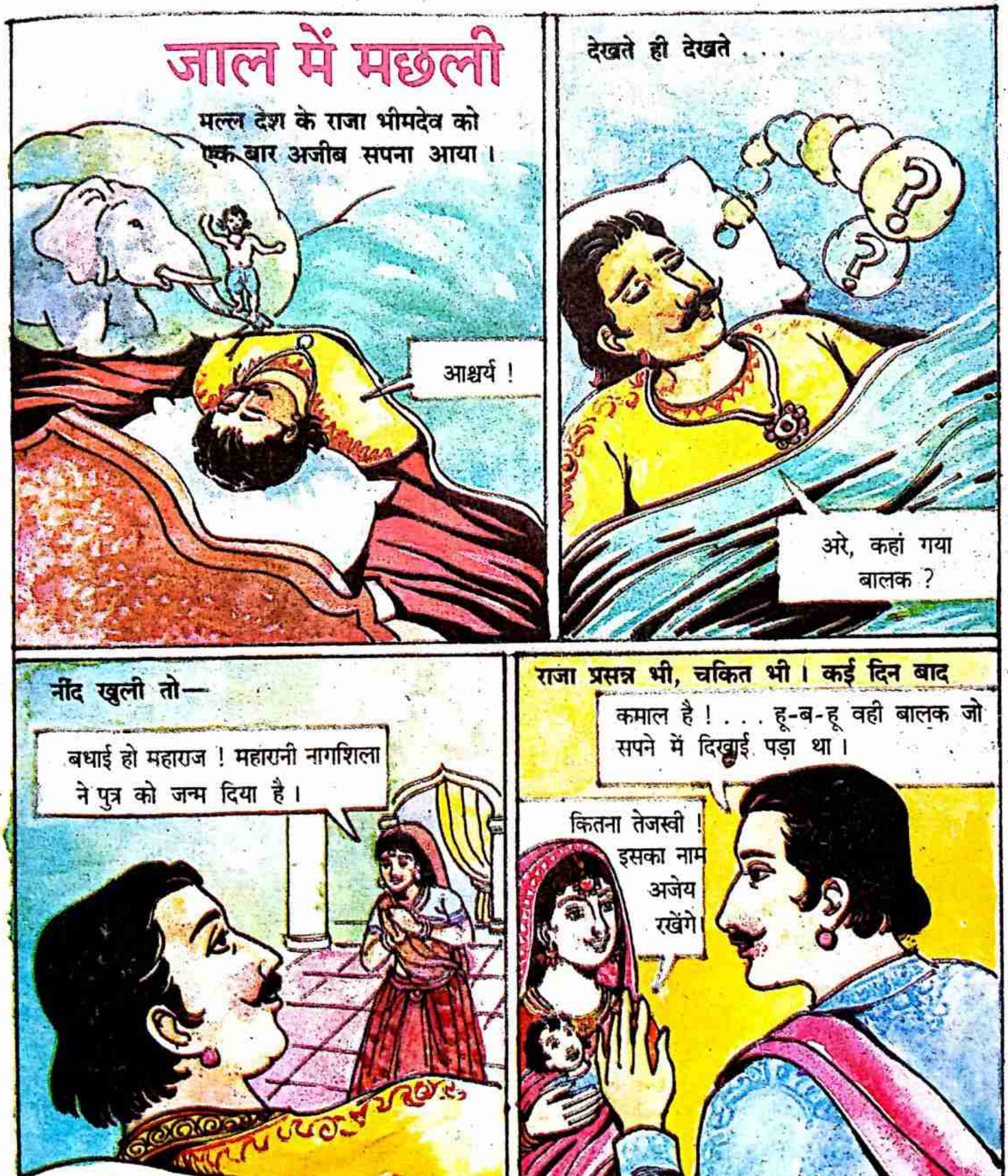


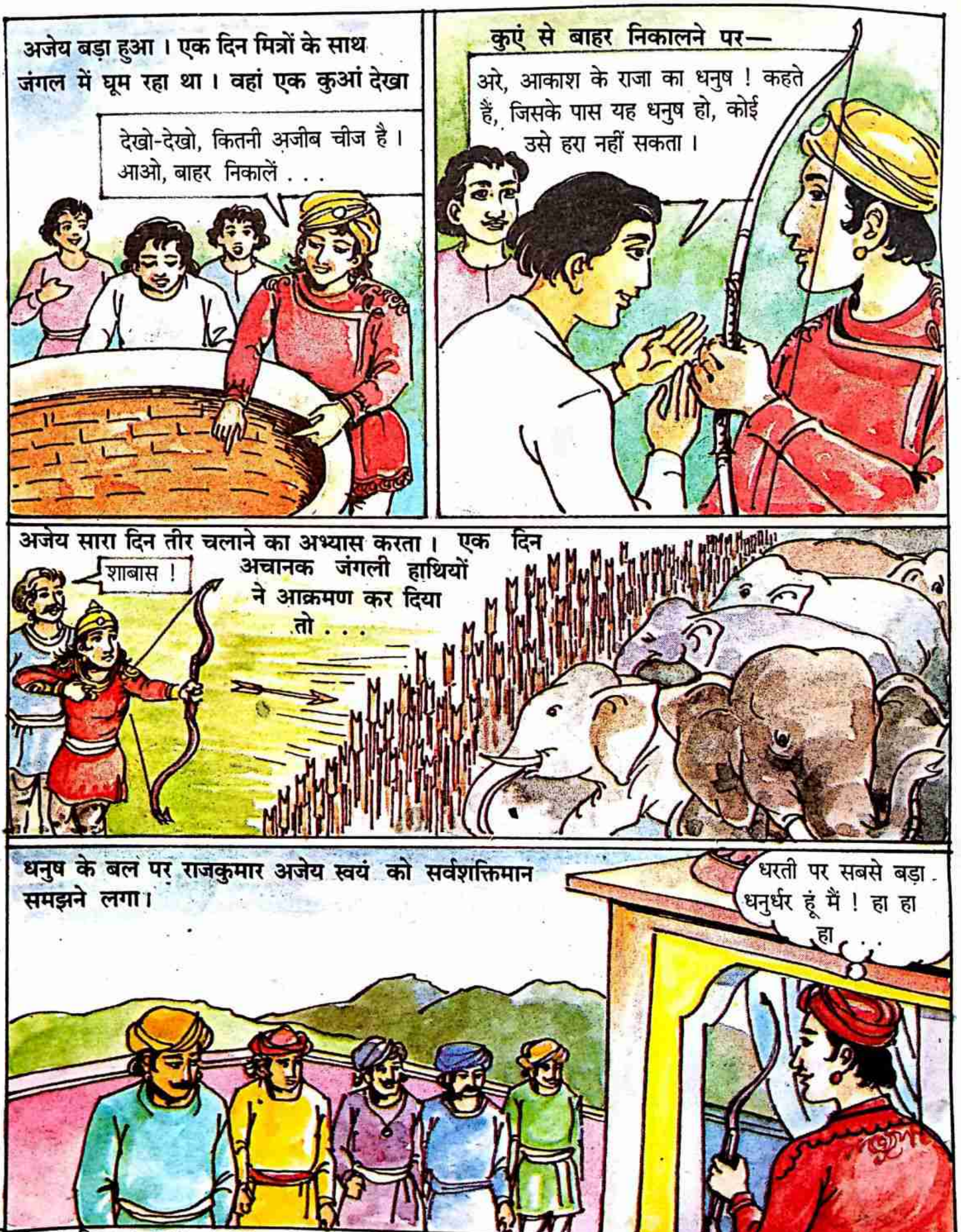
↑ श्रीराम कला केंद्र में तीन दिन का शरद चंद्रिका उत्सव : बालिकाओं के नृत्य विशेष सराहे गए। नृत्य की मुद्राःदस वर्ष की अपर्णा घोष।

जब यह गोरिल्ला नन्ही-सी थी, तबसे माइक ने इसे पाला है। वह अब भी इसे अपनी बच्ची की तरह प्यार करता है। →



नं. बा. स. ३६ ज


जाल में मछली
मल्ल देश के राजा भीमदेव को एक बार अजीब सपना आया।
आश्चर्य !
देखते ही देखते . . .
अरे, कहां गया बालक ?
नींद खुली तो—
बधाई हो महाराज ! महारानी नागशिला ने पुत्र को जन्म दिया है।
राजा प्रसन्न भी, चकित भी। कई दिन बाद
कमाल है ! . . . हू-ब-हू वही बालक जो सपने में दिखाई पड़ा था।
कितना तेजस्वी ! इसका नाम अजेय रखेंगे।



अजेय बड़ा हुआ । एक दिन मित्रों के साथ जंगल में घूम रहा था । वहां एक कुआं देखा
देखो-देखो, कितनी अजीब चीज है । आओ, बाहर निकालें . . .
कुएं से बाहर निकालने पर—
अरे, आकाश के राजा का धनुष ! कहते हैं, जिसके पास यह धनुष हो, कोई उसे हरा नहीं सकता ।
अजेय सारा दिन तीर चलाने का अभ्यास करता । एक दिन अचानक जंगली हाथियों ने आक्रमण कर दिया तो . . .
शाबास !
धनुष के बल पर राजकुमार अजेय स्वयं को सर्वशक्तिमान समझने लगा ।
धरती पर सबसे बड़ा धनुर्धर हूं मैं ! हा हा हा . . .


उन्हीं दिनों राज्य में भीषण अकाल पड़ा। लोग दाने-दाने को मोहताज हो गए . . .
ऐसा सूखा तो कभी नहीं पड़ा ज्योतिषी जी !
महाराज, देखिए आकाश में ! उस विशाल दानव पक्षी का वध हो। वध के समय उसके मुंह की मछली जीवित ही जल में गिरे . . . तो बारिश होगी।
राजा ने राजकुमार अजेय को बुलाया। सारी बातें बताकर दानव पक्षी का वध करने का आदेश दिया
यह तुम्हारी परीक्षा है राजकुमार !
मगर यह कैसे हो सकता है ?
अजेय को एक तरकीब सूझी। उसने दानव पक्षी की ओर तीन मायावी तीर छोड़े।
जैसे ही दानव पक्षी उड़ता हुआ झील के ऊपर पहुंचा, एक और तीर चलाया राजकुमार ने . . .
आश्चर्य ! दानव पक्षी धुआं बनकर उड़ गया।
पक्षी के मुंह की मछली जीवित ही नीचे गिरी। जंगली शिकारी वल्लोल के बिछाए जाल में उलझ गई
अद्‌भुत !


दौड़ा-दौड़ा राजकुमार वहां पहुंचा।
खबरदार जंगली युवक ! मछली को हाथ लगाया तो . .
तो क्या करोगे राजकुमार ?
वल्लोल भी कम न था। उसने अपना लोहे का धनुष और तीर उठा लिए। भीषण युद्ध छिड़ गया . . .
लो देखो . . .
संभलकर राजकुमार इसका भी जवाब है मेरे पास . . .
राजकुमार अजेय हांफने लगा। तभी वल्लोल ने मछली को जल में उछाल दिया।
एक मामूली से आदमी को हरा नहीं पाए। बस, इसी बात का घमंड था।
ओफ !
काश, जितनी वीरता है आप में, उतनी विनय भी होती। एक बार कहते तो सही। मैं खुद ही मछली को छोड़ देता।
मुझे माफ कर दो वीर युवक!
मछली के पानी में गिरते ही बादल छा गए। मूसलधार बारिश हुई। राज्य में फिर से खुशहाली छा गई।

चार आंखें

—मिर्जा इरफान बेग

पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में एक छोटा-सा कस्बा है—निजामाबाद। तामसा और कुंवर नदियों का संगम यहीं होता है । यह कस्बा प्राचीन काल से ही मिट्टी की सुंदर वस्तुओं के लिए बहुत प्रसिद्ध रहा है । अब तो यहां बने मिट्टी के गुलदस्ते, मूर्तियां आदि विदेशों को भेजे जाते हैं ।

किस्सा बहुत पुराना है । निजामाबाद में रामआसरे कुम्हार अपने परिवार समेत सुख-चैन का जीवन बिता रहा था । उसकी बनाई हुई मूर्तियां हाथोंहाथ बिक जाती थीं । उसका परिवार भी छोटा-सा ही था।कठोर परिश्रम करने वाली सुशील पत्नी बिंदो और दस बरस का इकलौता बेटा—परशु तथा वह स्वयं ।

रामआसरे और बिंदो परशु पर जान छिड़कते, उसकी हर मांग पूरी करते । अधिक लाड़-प्यार से परशु खिलंदड़ा और घुमक्कड़ हो गया । पाठशाला जाना तो वह कब का छोड़ चुका था । मां उसे बहला-फुसलाकर पाठशाला भेजना चाहती, तो वह मुंह फुलाकर बैठ जाता । रामआसरे उलटा बिंदो को समझाता— 'अरी भागवान ! क्या धरा है पोथियां पढ़ने में ? अभी तो उसके खेलने-खाने के दिन हैं।'

बेचारी बिंदो अपना-सा मुंह लेकर रह जाती । परशु दिन भर इधर-उधर भटकता फिरता, भूलकर भी अपने पिता के पास न बैठता, काम में हाथ बंटाना तो दूर की बात थी । वह दिन-ब-दिन आलसी और कामचोर होता चला गया ।

एक दिन रामआसरे तामसा में नहाने गया, तो कभी लौटकर नहीं आया । घर का सारा बोझ अब बिंदो पर आ पड़ा । घर-बाहर के काम के बोझ से बिंदो का स्वास्थ्य बिगड़ गया । कुछ महीनों की बीमारी में उसने खाट पकड़ ली । धीरे-धीरे घर की जमा पूंजी समाप्त हो गई ।

एक रात मां ने परशु से पानी पिलाने को कहा । वह करवट बदलकर सोने का नाटक करने लगा ।



तभी न जाने कहां से एक बुढ़िया प्रकट हुई । बोली —"देख बेटा, तेरी मां कब से पानी मांग रही है, उसे पानी पिला दे ।"

परशु रुखाई से बोला—"देखती नहीं बुढ़िया, मैं इधर सो रहा हूं । मेरी चार आंखें तो हैं नहीं ।"

"तू ठीक कहता है बेटा। यह ले, अब तेरी चार आंखें हैं।अब मां का पूरा ध्यान रखना । कहीं ऐसा न हो कि फिर तू कुछ भी न देख सके ।"—यह कहकर बुढ़िया लुप्त हो गई ।

परशु के सिर के पिछले हिस्से में दो आंखें और उभर आईं । उसे आगे-पीछे का एक साथ दिखाई देने लगा । कुछ देर तक इस चमत्कार पर खुश होता रहा, फिर डर गया । उसके साथ एक अजीब बात हो गई थी । सुबह जब वह घर से बाहर निकला, तो उसने सिर पर एक टोपी पहन ली । इससे पीछे की आंखें ढंक गईं ।

परशु मां की सेवा करने लगा । उसे डर था कि कहीं सचमुच वह नेत्रहीन न हो जाए, क्योंकि उस विचित्र बुढ़िया ने ऐसा ही कहा था ।

एक दिन मां ने उसे समझाया कि वह काम करे, तो कुछ कमाई हो । काम करना परशु ने सीखा नहीं था ।

मां ने कहा—"अच्छा, तू बस मिट्टी ला दे, शेष काम मैं कर लूंगी।"

किसी तरह परशु मिट्टी लाने को मान गया। मिट्टी लेकर वह लौट रहा था कि रास्ते में एक बूढ़े ने आवाज लगाई—"बेटा, जरा यह गट्ठर उठवा दे।"

परशु का पारा चढ़ गया—"देखता नहीं, मेरे दोनों हाथ फंसे हुए हैं। दर्जन भर हाथ तो हैं नहीं, जो अपना बोझ संभालूं और तेरा गट्ठर भी उठाऊं।"

—"बेटा, अपनी टोकरी उतारकर मेरा गट्ठर उठवा दे, फिर अपनी टोकरी उठाकर चला जा।"

"हुंह!"—कहता हुआ परशु आगे निकल गया। लेकिन घर पहुंचते-पहुंचते उसके एक दर्जन हाथ हो चुके थे।

गांव में सब परशु को राक्षस समझने लगे। साथी उसे देखते ही हवा हो जाते। अंततः परशु ने कहीं और चले जाने में ही अपनी भलाई समझी। सिर से नीचे तक चादर ओढ़कर वह गांव से निकल पड़ा। चलते-चलते रात हो गई। परशु ने पेड़ पर रात बिताने का निर्णय किया। आधी रात को उसी पेड़ के नीचे डाकुओं ने डेरा जमाया। उन्होंने आग जलाई और लूट का माल बांटने लगे। मारे डर के परशु और ऊपर चढ़ गया। अंधेरे में वह मधुमक्खियों के छत्ते से जा



भिड़ा। मधुमक्खियों ने उस पर धावा बोल दिया। धड़ाम से जमीन पर आ गिरा। डाकू बुरी तरह भयभीत हो गए। चार आंखों और बारह हाथों वाला विचित्र जीव उनके ठीक सामने था। वे सिर पर पैर रख कर भागे। परशु ने सारा माल समेटा और घर लौट आया।

कुछ महीने बड़े आराम से बीते। अब घर में किसी वस्तु की कमी न थी। पर घर में परशु उकता गया। उसका जी करता कि अपने पुराने संगी-साथियों के संग खेले, किंतु इस भयानक रूप में उसके पास कौन फटकता! अकेलापन उसे खाने लगा था। अपने ऊपर उसे क्रोध भी आता। 'क्यों न गुप्त रूप से लोगों की सेवा करूं। हो सकता है किसी का आशीर्वाद मुझे मेरा असली रूप लौटा दे।'— उसने विचार किया और अगले दिन से ही परोपकार में जुट गया।

गांव में एक बुढ़िया अकेली रहती थी। 'कितनी निर्धन और लाचार है बेचारी! क्यों न उसकी सहायता करूं?'—परशु ने सोचा। और रात को उसकी कोठरी में चांदी के कुछ सिक्के डाल आया। पर अगली सुबह बुढ़िया वही सिक्के उसकी मां को लौटाने आ गई। "तेरा बेटा जुग-जुग जिए बिंदो! उसने मुझ पर दया की। पर तू तो जानती है कि मैंने कभी भीख नहीं ली। सुख-दुःख तो जीवन की धूप – छांह है बेटी।" बुढ़िया ने कहा और चली गई। परशु को पता चला कि बुढ़िया के खेत बंजर हो गए हैं, क्योंकि जोतने-बोने वाला कोई नहीं था।

परशु ने उसी समय जाकर हल-बैल खरीदे और कई हलवाहों के साथ बुढ़िया के खेतों में काम शुरू कर दिया। इसी तरह वह गांव में लोगों की सहायता करने लगा। सब उसकी कहानी जान चुके थे। अब उससे कोई डरता नहीं था।

परशु का जीवन बदल चुका था। भोर से सांझ तक परशु कड़ी मेहनत करता। कभी-कभी तो रात में भी वह फावड़ा उठाकर चल पड़ता। गांव की नालियों की मरम्मत कर डालता। सड़क के किनारे लगे पौधों के चारों ओर थाले बनाकर पानी से भर देता। रास्ते में

पड़े रोड़े-पत्थरों को किनारे लगा देता। पड़ोसी राम चरण कुम्हार के लिए मिट्टी लाना, उसे छानना और गूंधना उसका नित्य का काम बन गया था। मां को तो वह कोई काम करने ही न देता।

एक दिन परशु ने मां से पूछा —"मैं और क्या करूं ?"

"बेटा, तेरे पिता यहां के माने हुए कुम्हार थे। क्यों न तू भी अपने रामचरण चाचा से मूर्तियां बनाना सीख ले !"—मां ने सुझाया।

"ठीक है मां ! कल से ही ले।"—परशु ने संकल्प लिया और अगले दिन से ही वह काम सीखने लगा। रामचरण चाचा ने भी सिखाने में कोई कोर-कसर न रखी। कुछ ही महीनों में वह मिट्टी की मूर्तियां बनाने में निपुण हो गया। उसकी बनाई हुई मूर्तियां व्यापारी तुरंत खरीद लेते। एक दिन, जब परशु खेत से लौटा, तो मां ने कहा—"बेटा, तेरे पिता जी की बड़ी इच्छा थी, बाजार में छोटी-सी एक दुकान लेने की। घर में इतना सारा सोना-चांदी पड़ा है। एक अच्छी-सी दुकान खरीद लें।"

परशु मुसकराया और बोला—"पिता जी की इच्छा अवश्य पूरी करूंगा। तेरे आशीर्वाद से शीघ्र ही हमारी अपनी दुकान होगी। पर इस धन से नहीं, अपनी कमाई से खरीदूंगा मां ! यह सारा धन हमें दान कर देना चाहिए। इस पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। इसमें से जितना हम निकाल चुके हैं, उतना मैं अपनी कमाई में से दान करूंगा।" और परशु ने किया भी यही।

अनहोनी ने फिर करवट बदली। एक दिन जब परशु सोकर उठा, तो उसकी केवल दो आंखें रह गई थीं। दस हाथों के निशान तक गायब थे।

यह कहानी निजामाबाद के पश्चिम में राय साहब सोंढरी, चन्ना भारी इलाके में बहुत प्रचलित है। परशु पट्टी गांव के बारे में कहा जाता है कि परशु इसी गांव का रहने वाला था। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने वालों को लोग 'परसुआ' कहकर पुकारते हैं।●

झुक गया सिर

—वीरकुमार अधीर

नक्कूमल की नाक काफी बड़ी थी और आंखें काफी छोटी-छोटी। शायद इसीलिए वह जरा नकचढ़े आदमी थे। नकचढ़े और गुस्सैल आदमी से सभी डरते हैं। तिस पर वह महाराजा के खास नौकर होने के कारण सिरचढ़े भी थे। अर्थात करेला और नीम चढ़ा। राजा साहब के पुराने नौकर के बेटे होने का लाभ उन्हें इस रूप में हुआ था कि अपने पिता के बाद उनका स्थान उन्हीं को मिला। महाराजा के खास महल के अंदर का सारा इंतजाम उन्हें सौंप दिया गया था। किसी और की इतनी मजाल कहां जो उस खास महल में झांक भी सके। मगर नक्कूमल थे कि उसे अपना ही घर समझते थे। कहा जाता है, राजा साहब उनकी छोटी-मोटी गुस्ताखियों पर ध्यान भी नहीं देते थे, जबकि अन्य लोगों को मौत के घाट उतरवा देना उनके लिए मामूली बात थी। शायद इसीलिए नक्कूमल की चाल-ढाल में भी शाही अकड़ आ गई थी।

एक दिन नक्कूमल ने महाराजा से कहा—"हुजूर, एक निवेदन करना चाहता हूं।"

"हां-हां, कहो।"—महाराज बोले।

—"हुजूर, मुझे लगता है, मंत्री महोदय राज-काज ठीक से नहीं देख पाते हैं। कभी सेवक को अवसर देकर देखें।"

महाराज ने नक्कूमल की यह बात सुनी, तो हैरत में पड़ गए। उन्हें समझते देर न लगी कि ज्यादा मुंहलगे होने के कारण नक्कूमल जरा ऊंचे सपने देखने लगे हैं। उन्हें नक्कूमल का कथन बहुत बुरा लगा। फिर भी गुस्से को पीकर बोले—"अच्छा, इस बारे में फिर कभी बात करेंगे।"

इधर राजमहल के नौकरों में यह कानाफूसियां होने लगीं कि महाराज पुराने मंत्री को निकालकर उसके स्थान पर नक्कूमल को मंत्री बनाने जा रहे हैं। यह सुन, महाराज को बड़ी चिंता हुई। कहीं मंत्री महोदय के कानों तक यह खबर चली गई, तो उनके मन पर बुरा

असर पड़ सकता है।

एक दिन महाराजा ने नक्कूमल और मंत्री महोदय को बुलाया।

उन्होंने नक्कूमल से कहा—"देखो, हम तुम्हें एक काम सौंपना चाहते हैं। यदि तुमने पूरी तरह कर दिखाया, तो हम तुम्हें राज्य का मंत्री बना देंगे।"

"आज्ञा हो अन्नदाता ?"—खुशी से फूलते हुए नक्कूमल ने पूछा।

—"तुम्हें अटलपुर जाकर वहां के सामंत जयसिंह से मिलना है। उसे हमारे यहां दावत में शामिल होने के लिए निमंत्रण देना है। अपने साथ अंगरक्षकों को ले जाओ।"

नक्कूमल मन ही मन हंसे—'क्या जरा-सा काम बताया है महाराज ने। यह तो चुटकी बजाते निपटा दूंगा।'

उसके बाद महाराज ने मंत्री महोदय से कहा—"आप पटलपुर चले जाएं। वहां के सामंत तेजबहादुर को हमारा निमंत्रण दें। आप भी अंगरक्षक घुड़सवारों को साथ ले जाएं।"

"जो आज्ञा महाराज !"—कहकर नक्कूमल और मंत्री महोदय अपनी-अपनी राह पर चल दिए।

नक्कूमल ने महाराज की ओर से इनाम में मिली कीमती पोशाक पहन ली। फिर अपने अंगरक्षक दस्ते के साथ घोड़े पर सवार होकर चले, तो महल के कर्मचारियों की आंखें फटी की फटी रह गईं।

नक्कूमल इस चिंता में थे कि महाराज का काम जल्दी से जल्दी निपटाना चाहिए, विशेषकर मंत्री से पहले। काम निपटा और मंत्री का पद मिला। यह सोचते हुए उन्होंने घोड़े की रास थामी और तेजी से अटलपुर की ओर चल दिए। वहां के सामंत को आमंत्रित करके दो ही दिन में वापस आ गए। महाराजा को सूचित करके अपने काम-धंधे में लग गए। यह जानकर वह प्रसन्न हो उठे कि मंत्री महोदय अभी तक नहीं लौटे हैं, जबकि पटलपुर अटलपुर से कुछ कम दूरी पर था। नक्कूमल खुश थे—'महाराज मंत्री पर देर से आने के कारण बिगड़ेंगे और क्रोध में आकर उन्हें मंत्री पद से हटा देंगे। तथा मुझे काम संभालने का आदेश दे देंगे। ज्यों-ज्यों मंत्री जी के वापस आने में देरी होती जा रही थी उन्हें अपना सपना साकार होता नजर आ रहा था।'

आखिर एक दिन मंत्री महोदय के वापस आने की सूचना मिली। इस अवसर पर महाराजा ने नक्कूमल को भी बुलवा लिया। उनके सामने ही मंत्री महोदय से पूछा—"आपने पटलपुर के सामंत को हमारा निमंत्रण दिया ?"

—"जी हां, महाराज ! उन्हें निमंत्रण दे दिया और रास्ते के अन्य स्थानों से मालगुजारी भी वसूल करता आया हूं।"

"अच्छा !"—महाराज ने मुसकराकर नक्कूमल की ओर देखा।

मंत्री कहते गए—"और महाराज, उधर ही एक क्षेत्र में प्रजा की हालत बहुत बुरी थी। किसान असंतुष्ट थे। मैंने राज्य की ओर से उनकी सहायता की व्यवस्था करवा दी है।"

"और ?"—महाराज ने पूछा।

"और महाराज, एक स्थान पर गांव वाले पानी की कमी के कारण परेशान थे। मैंने उस इलाके से एक नहर निकालने का प्रबंध करा दिया है।"—इसी प्रकार मंत्री महोदय ने अपनी यात्रा के दौरान किए गए अन्य कामों का पूरा ब्यौरा दे डाला।

महाराज ने नक्कूमल से कहा—"देखा ?"

—"क्या, हुजूर ?"

—"मंत्री होने के लिए कितने दिमाग की जरूरत होती है। तुम काम पर गए तो तुरंत लौट आए। मंत्री महोदय गए, तो एक के साथ कई अन्य काम पूरे हो गए !"

"लेकिन हुजूर, आपने मुझे कोई ऐसा हुक्म नहीं दिया था !"—आश्चर्य से नक्कूमल ने कहा।

—"हुक्म तो मैंने मंत्री को भी नहीं दिया था।"

अब नक्कूमल निरुत्तर हो गए। उसके बाद महल में उनकी ऐसी हंसी उड़ी कि शर्म के मारे महीनों तक सिर लटकाए घूमते रहे। ●

अंगूठी में हाथी

—अनवर आलम

किसी शहर में एक धनवान व्यक्ति रहता था। उसका व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा था। आलीशान हवेली, दर्जनों नौकर-चाकर। उसका ठाठ-बाट देखते ही बनता था। धनवान की हवेली के पास ही एक गरीब परिवार रहता था। वे लोग बड़ी मुश्किल से गुजारा करते थे। उनके रहन-सहन से गरीबी टपकती थी। लेकिन गरीब परिवार पूजा-पाठ में बहुत बढ़ा-चढ़ा था।

एक देवदूत हर रोज पृथ्वी पर आया करता था। वह दोनों परिवारों पर नजर रखे हुए था। उसने देखा कि गरीब परिवार की स्थिति और भी बिगड़ती जा रही है। वह समझ न पाया कि ऐसा क्यों है ? आखिर एक दिन देवदूत ईश्वर के सामने जा पहुंचा।"

"क्या बात है ?"—ईश्वर ने कहा।

देवदूत बोला—"भगवन, मैंने पृथ्वी पर दो परिवार देखे हैं। एक परिवार हर समय आपकी भक्ति करता है, पर फिर भी परेशान है। दूसरी तरफ एक धनवान है जिसे मैंने कभी आपका नाम लेते नहीं सुना। पर फिर भी उसका जीवन अत्यंत सुखी है। वह दिनोंदिन, अधिक धनवान होता जा रहा है। ऐसा क्यों है प्रभु ?"

ईश्वर मुसकराए। उन्होंने कहा—"तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।" उन्होंने देवदूत को एक अंगूठी दी। कहा—"इसे लेकर परिवारों के पास जाओ। और जो मैं कहूं वह बात उनसे पूछो।"

पहले देवदूत गरीब आदमी के पास गया। वह पूजा कर रहा था। देवदूत उसके सामने प्रकट हुआ। उसे अपना परिचय दिया। बताया—"मैं तुम्हारे लिए शुभ समाचार लाया हूं। तुम्हारी साधना से प्रसन्न होकर भगवान ने तुम्हारे लिए स्वर्ग में एक स्थान सुरक्षित कर दिया है।" फिर अंगूठी दिखाकर कहा—"अब एक प्रश्न का उत्तर दो। क्या इस अंगूठी में से एक हाथी पार हो सकता है ?"

देवदूत की बात सुनकर भक्त ने कहा—"देवदूत, तुम्हारी बात सुनकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। हम तो समझ रहे थे पूजा से प्रसन्न होकर ईश्वर हमें स्वर्ग में विशेष स्थान प्रदान करेंगे। यह कैसा ईश्वरीय न्याय है ! और अंगूठी से हाथी गुजरने की बात पर तो मुझे हंसी आ रही है। भला यह भी कहीं हो सकता है ! तुम्हीं सोचो, इतनी छोटी अंगूठी में से इतना बड़ा हाथी भला कैसे गुजर सकता है।"

गरीब भक्त की बार सुनकर देवदूत हक्का-बक्का रह गया। उसे कल्पना नहीं थी कि वह व्यक्ति इस तरह की बात करेगा।

वहां से देवदूत धनवान की हवेली में पहुंचा। धनवान से कहा—"मैं देवदूत हूं, तेरे लिए ईश्वर का संदेश लेकर आया हूं। ईश्वर ने तेरे लिए नरक में स्थान सुरक्षित कर दिया है।"

इतना सुनते ही धनी व्यक्ति देवदूत के पैरों पर गिर पड़ा। बोला—"धन्य हो तुम। ईश्वर कितना दयालु है। वह मेरे जैसे पापी का भी ध्यान रखता है। ईश्वर कृपा से नरक भी मुझे स्वीकार है।"

देवदूत ने अंगूठी दिखाकर पूछा—"क्या इसमें से हाथी गुजर सकता है ?"

देवदूत का प्रश्न सुनकर धनी व्यक्ति हंस पड़ा। बोला—"हाथी की भी खूब कही, अगर ईश्वर चाहे तो इस छोटी-सी अंगूठी के घेरे में से पूरी दुनिया पार हो सकती है।"

ईश्वर में उसका अटूट विश्वास देखकर देवदूत चकित रह गया। वह समझ गया, गरीब की पूजा केवल दिखावा है। धनी के मन में ईश्वर के प्रति गहरा विश्वास है।

देवदूत लौटकर ईश्वर के सामने पहुंचा। ईश्वर ने पूछा—"क्या तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर चाहिए ?"

"नहीं, प्रभु, मेरी शंका मिट चुकी है। मुझे उत्तर मिल चुका है।"—कहकर देवदूत ने सिर झुका लिया। ●

चल बेटा

—प्रमिला

गांव में सबसे पहला घर सहजो का था। उसकी दो बेटियां थीं और दो बेटे। बेटियों की शादी हो चुकी थी। घर में बहुएं थीं, नाती-पोते थे यानी भरा-पूरा परिवार था। नाम सहजो जरूर था, पर किसी भी बात को वह सहज ढंग से नहीं लेती थी। बात-बात में मीन-मेख निकालना उसकी आदत थी।

आज गाय को सानी लगाने में देर क्यों की? साग में हल्दी का रंग तो आया ही नहीं आदि, कोई न कोई कमी निकालकर बात का बतंगड़ बना देती थी सहजो। घर वाले परेशान थे उससे।

बेटे कहते—"अम्मां, अब तुम क्यों इन पचड़ों में पड़ती हो। घर का काम तुम्हारी बहुएं देखें। तुम तो बस अपने नाती-पोतों के साथ खुश रहो। मन करे, तो तीर्थ यात्रा कर आओ।"

बेटों की बात सुनकर एक दिन सहजो भड़क उठी—"ठीक है, अब तुम्हारी घर वाली क्या आ गईं, तुम्हें यह बूढ़ी मां बोझ लगने लगी। आज के बाद, कान पकड़ती हूं, जो तुम्हारे घर के बारे में बोलूं।" कहती हुई वह पैर पटकती घर के चबूतरे पर जा बैठी। वहां अपने आप से न जाने क्या-क्या कहती रही।

कुछ देर बाद बड़ा पोता नारायण आकर बोला—"अम्मां, खाना तैयार है। यहीं ले आऊं या अंदर चलोगी?"

—"मुझे नहीं खाना। ज्यादा भूख लगेगी, तो मंदिर में जाकर किसी से मांगकर खा लूंगी। भगवान के घर में किसी के लिए खाने की कोई कमी नहीं है।"

तभी नारायण की मां और सहजो की बड़ी बहू आ पहुंची। बोली—"अम्मां, तुम हमसे क्यों नाराज होती हो? तुम्हारे बेटों ने जो भी कुछ कहा, हम उसके लिए जिम्मेदार कैसे हो सकती हैं? तुम्हारे बेटे-पोते सब भूखे हैं। आज वैसे भी तुम्हारा मनपसंद खाना बना है।"

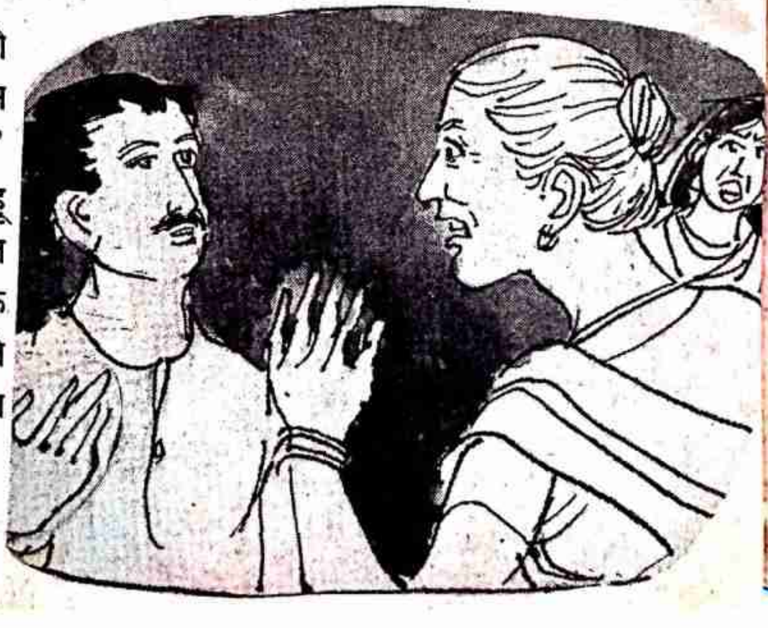
सहजो को जोर से भूख लगी थी, इसलिए बहू के साथ वह अंदर चली गई। लेकिन खाना खाने के तुरंत बाद फिर चबूतरे पर आ पहुंची। तभी दूसरे मोहल्ले का एक लड़का चरणदास वहां से गुजरा। चरणदास अपने ही ध्यान में खोया था। उसने बाहर बैठी सहजो को नहीं देखा।

वह जोर से बोली—"आजकल के लड़कों को देखो। जरा-सा पढ़-लिख क्या गए, दिमाग सातवें आसमान पर जा पहुंचा। बड़े-बूढ़ों से राम-राम करना भी छोड़ दिया।" सहजो ने बात इतनी जोर से कही थी कि चरणदास ठिठक गया। बोला—"माफ करना ताई, मैंने आपको देखा नहीं।"

—"हां, भइया, जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तब उन्हें बड़े-बूढ़े दिखाई कहां देते हैं।" बेचारा चरणदास अपना-सा मुंह लेकर चला गया।

अब सहजो को घर के अंदर रहने के मुकाबले बाहर बैठने में आनंद आने लगा। बाहर बैठने से बहू-बेटों से झगड़ा तो बंद हुआ ही, आसपास वालों पर फब्तियां कसने का भी मौका मिलता। कभी कोई बहू गुजरती, तो वह तपाक से कहती—"देखो तो, कैसे मटक-मटककर चल रही है।" कभी कोई बच्चा गंदे कपड़े पहनकर आ जाता, तो वह कहती—"क्यों रे, क्या तेरी मां के हाथों में मेंहदी लगी रहती है।"

इस तरह की बातों से यह हुआ कि आए दिन झगड़े होने लगे। अड़ोसी-पड़ोसी जब सहजो को भला-बुरा कहते, तो मजबूरन बेटे-बहुओं को भी



झगड़ना पड़ता। बेटे सोचते—'मां ने अच्छा बाहर बैठना शुरू किया ! जो सारे लोग पहले मित्र थे, शत्रु बन गए।'

बेटों ने बहुत कोशिश की कि उनकी मां तीर्थ यात्रा पर चली जाए, पर वह न मानी।

सहजो के घर के सामने वाला घर बहुत दिनों से खाली पड़ा था। वहां रहने वाले लोग बहुत दिन पहले शहर में जाकर बस गए थे।

एक सुबह सहजो ने उस घर का ताला खुला देखा। घर की सफाई करते हुए भी उसे एक स्त्री, कुछ बच्चे और एक आदमी दिखाई दिए।

"अरे, रामप्रसाद ! जरा इधर तो आना।"—उसने बड़े बेटे को आवाज दी। रामप्रसाद दौड़ा-दौड़ा आया। सहजो बोली—"देख तो, यह बाबूलाल का परिवार तो है नहीं ?"

"नहीं मां, यह मकान तो कब का बिक चुका। अब तो इसमें नए लोग रहने आए हैं।"—कहता हुआ रामप्रसाद अंदर चला गया।

धीरे-धीरे शाम घिर आई। तभी सामने वाले घर की स्त्री ने मुसकराते हुए सहजो के घर में प्रवेश किया। कहा—"नमस्ते, माता जी ! हम आपके सामने वाले घर में रहने आए हैं। खीर बनाई थी। थोड़ी-सी आपके लिए ले आई हूं।"

जब तक उसकी बहू कुछ बोलती, सहजो बोली—"वाह जी, तुमसे न जान न पहचान। हम ऐसे किसी के यहां की चीज नहीं खाते।"

घर के सभी लोग अवाक उसका मुंह देखते रह गए। सामने वाली स्त्री आंखों में आंसू भरे, खीर का कटोरा वहीं छोड़कर चली गई। घर के लोगों को सहजो पर बड़ा गुस्सा आया, पर करते क्या !

उसी रात सहजो के बेटे को तेज बुखार आ गया। रोज-रोज की चिक-चिक से वह तंग आ चुका था। अगले दिन सहजो ने सामने वाली स्त्री को घर के पास वाले पीपल की पूजा करते देखा। वह वहां सूत बांध रही थी। बस, फिर क्या था ! वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी—"अरे, करमजली ! अब मुझे पता चला। कल तू खीर खिलाने आई थी, आज पीपल पर सूत बांध रही है। मेरे बेटे पर ऐसा टोना किया है कि बेचारा रात से बुखार में तप रहा है।"

सहजो की बात सुन आसपास के बहुत-से लोग जमा हो गए। सामने रहने वाली स्त्री पूजा की थाली लिए घर के अंदर घुसी और दरवाजा बंद कर लिया। सहजो बहुत देर तक चीखती-चिल्लाती रही।

अगले दिन सहजो जैसे ही चबूतरे पर आई, सामने वाली स्त्री बाहर निकली और उसने सहजो को देखकर मुंह बिचका दिया। शायद उसने सहजो को जवाब देने का यह आसान रास्ता निकाला था।

जैसा कि होना था, सहजो अनाप-शनाप बकने लगी। लोग फिर जमा हुए, लेकिन उसकी बात पर सब हंसने लगे। वह जितनी गालियां देती, लोग उतना ही हंसते।

अगले दिन फिर यही हुआ। सामने वाली स्त्री उसे अंगूठा दिखा गई। वह फिर चीखी-चिल्लाई, लेकिन आज उसकी आवाज सुनकर कोई न आया। रोज यह होने लगा। जिस दिन वह चुपचाप दिखाई देती, कोई न कोई उससे पूछ बैठता—"क्यों अम्मां, आज चुप कैसे बैठी हो ?"

एक दिन ऐसा भी आया, जब उसने चबूतरे पर बैठना छोड़ दिया। अब वह चुपचाप रहती। एक रात उसने अपने बेटे रामप्रसाद से कहा—"चल बेटा, मेरी तीर्थ यात्रा का प्रबंध कर दे।"

रामप्रसाद को मां की बात पर आश्चर्य हुआ। वह बोला—"मां, तुम अकेली क्या जाओगी इस उम्र में ! मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। तुम्हारे साथ-साथ मैं भी कुछ पुण्य कमा लूंगा।"

अगले दिन जब सहजो चलने लगी, तो सामने वाले घर का दरवाजा खुला। वह स्त्री घर से बाहर निकली। पास आकर उसने सहजो के चरण छुए। बोली—"अम्मां, मुझे माफ कर देना।"

सहजो ने उसे सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया। फिर कहा—"चल बेटा रामप्रसाद, पहले ही बहुत देर हो चुकी है।" ●

चटपट

- एक मुसाफिर—यह सड़क पहले पहाड़ पर चढ़ती है, फिर घाटी में उतरती है। ऐसा क्यों ?
  दूसरा मुसाफिर—तुम्हारी शिकायत सड़क से है। मेरे सिर पर क्यों चढ़-उतर रहे हो ?
- गाइड—वह बुर्ज देखो, जिस पर कबूतर बैठा है।
  सैलानी—कबूतर तो उड़ गया। अब आगे... !
- चित्रकार—मैंने इस चित्र को बनाने में दस वर्ष लगाए हैं।
  दर्शक—क्या चित्र बनाते समय सो गए थे ?
- अटल—सड़क के सारे बल्ब टूट जाएं तो ?
  चमन—क्या तुमने उन्हें तोड़ने का इरादा कर लिया है ?
- अविनाश—मैंने सपना देखा कि मैं गाड़ी से जा रहा हूं। गाड़ी नदी में गिर गई और मेरी नींद खुल गई।
  सुनील—यानी तुम्हारी नींद खोलने के लिए गाड़ी को नदी में गिरना पड़ा।
- एक सैनिक—क्या समझे, मैंने अब तक दस लड़ाइयों में भाग लिया है।
  दूसरा सैनिक—और ग्यारहवीं लड़ाई में मैदान से भाग आए !
- घड़ीसाज—इस घड़ी में बीस बार से ज्यादा चाबी मत देना, नहीं तो....
  ग्राहक—नहीं तो क्या २१वीं सदी में चली जाएगी ?
- यात्री—बाप रे, चारों ओर गहरा समुद्र। उसमें छोटी-सी नाव !
  नाविक—और छोटी-सी नाव, जिसके पेंदे में बड़ा-सा छेद। अब क्या होगा ?
- संगीतकार—अगर आपको संगीत पसंद नहीं है, तो कान बंद कर लीजिए।
  श्रोता—इतने लोगों को तकलीफ देने के बजाय, कृपया आप ही मुंह बंद कर लें.....
- मुन्नू—यह कैसा दर्पण है, इसमें तो कुछ दिखता ही नहीं।
  चुन्नू—दिखेगा कैसे, तुम दीवार के सामने जो खड़े हो।
- अखिल—मैंने तुम्हें कई बार कहा है, इतनी दूर से आवाज न दिया करो।
  अनूप—तो क्या पत्थर फेंका करूं ?
- नानी—अरे, बेटा ! मान भी जा, कब से कान खा रहा है !
  रमेश—कान बचाने हैं, तो जल्दी से कुछ खाने को दे दो।
- मछली—आज तो उड़ने का मन कर रहा है।
  चिड़िया—उड़ते-उड़ते थक जाओ, तो मेरे घोंसले में आ जाना।
- एक शिकारी—मैं तो चला, हाथी इधर ही दौड़ा आ रहा है।
  दूसरा शिकारी—हां, जल्दी से जाओ, आज हाथी को ही फैसला करने दो कि हममें से कौन बहादुर है ?



तेनालीराम (२७२)

काम किसे ?



एक बार राजा कृष्णदेव राय कुछ दरबारियों के साथ शिकार पर गए। जंगल में रास्ता भटककर जा पहुंचे एक बस्ती में। वहां थी घोर गरीबी। राजा उनकी गरीबी देखकर उदास हो गए। आसपास के कई गांवों में घूमे। सभी ओर एक-सा हाल।

राजधानी आकर उन्होंने मंत्री से कहा—"राज्य के गांवों के गरीब युवकों का जीवन स्तर सुधारने के लिए तुरंत कुछ करो।"

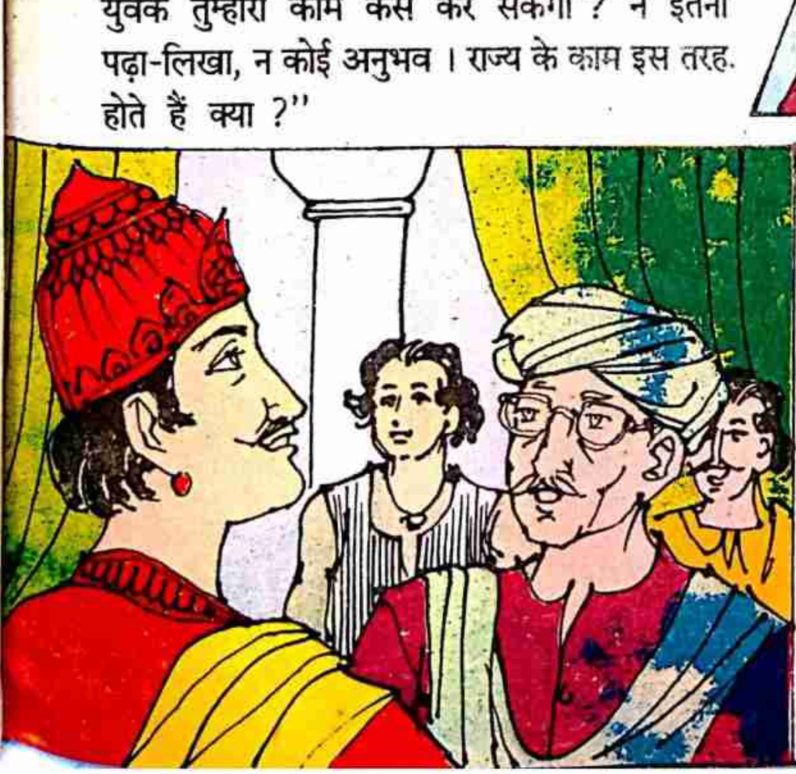


मंत्री ने राजा की आज्ञा मान, उन सबको अच्छे वेतन पर नौकरियां दिलवा दीं। वे सब राजा का जय-जयकार करने लगे। मगर जो काम उनको सौंपे गए, उल्टे-सीधे होने लगे। शिकायतें राजा तक पहुंचीं, किंतु उनके विरुद्ध कुछ करने की बजाय, राजा ने दरबारियों और राज्य के अधिकारियों को ही डांटना-फटकारना शुरू कर दिया। उनसे कहा कि वे काम लेना नहीं जानते।

परेशान दरबारी तेनालीराम के पास गए। सारी बात बताकर, सहायता करने की प्रार्थना की। तेनालीराम मान गया। अगले दिन एक युवक को ले, तेनालीराम दरबार में आया। सिर झुकाकर बोला—"महाराज, मैंने एक वर्ष तक भ्रमण करने का निश्चय किया है। जब तक मैं न आऊं, यह युवक मेरी जगह आपकी सेवा में रहेगा।"



सुनकर राजा चकित रह गए। बोले—"यह युवक तुम्हारा काम कैसे कर सकेगा? न इतना पढ़ा-लिखा, न कोई अनुभव। राज्य के काम इस तरह होते हैं क्या?"



—"महाराज, गांव के दूसरे युवक भी तो जैसे अपनी नौकरियां चला रहे हैं, वैसे यह भी चलाएगा काम।"

राजा कृष्णदेव राय चुप हो गए। सारी बात उनकी समझ में आ गई। तुरंत आदेश दिया—"युवकों को कोई काम देने से पहले उन्हें राज्य की ओर से शिक्षित और योग्य बनाना जरूरी है। जो योग्यता की कसौटी पर खरा उतरे, उसे ही काम दिया जाए।" तेनालीराम की बुद्धिमत्ता से सारे दरबारियों ने चैन की सांस ली।


Vital tips for colouring
Luxor Mickey Mouse Colours
Enter the fairyland of colours.
Luxor Bambino colour set
An adventure with colours.
Luxor Colour Pens
Sing a rainbow, paint a song.
Luxor Disney fun set
For fun, frolic and fantasy.
Luxor Sign Pen
To make your little dreams come true.
Donald Duck Magic Colours
For the magician in you.
Disney Inoxcolor Plastic Crayons
Colourful times ahead.
Bestsellers
PENNED BY LUXOR
Luxor®
LUXOR PEN CO., 229, Okhla Industrial Estate, Phase III, New Delhi-110020, India.
Tel: 633318, 6833372, 6835607. Tlx: 031-75069 SIGN IN. Fax: 011-6847602. Tel: Delhi (Sales): 522956, Bombay: 6730251, Calcutta: 250407
CLARION D 254



बच्चे मॉर्टन के स्वाद पर मोहित और बड़े हैं इसकी शुद्धता के कायल। वर्षों से पूरे परिवार का मनपसंद है मॉर्टन।

चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मजेदार स्वादों में उपलब्ध।

और अब केसर बाइट।
केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।

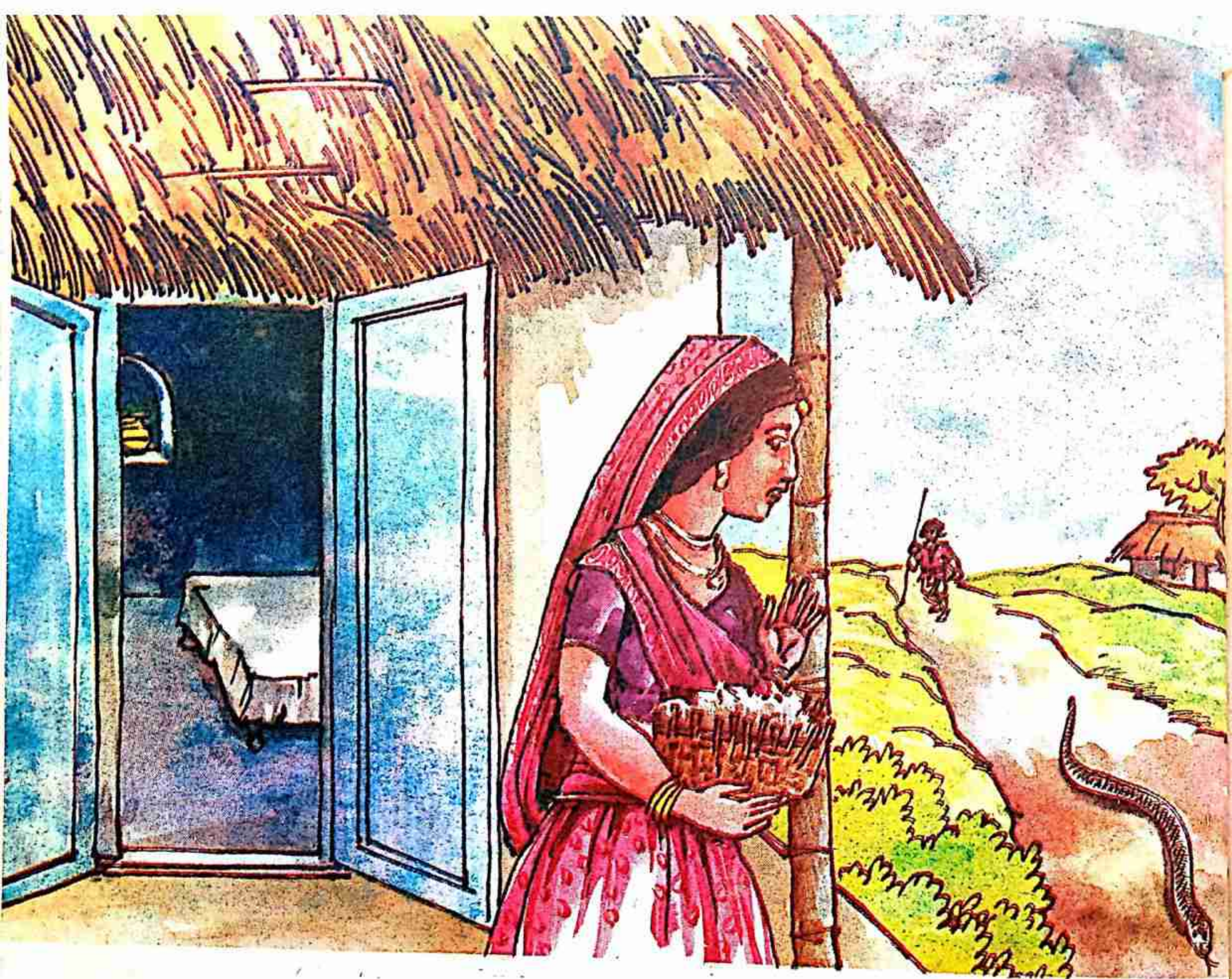


MORTON
SWEETS

CC/M-1/90 HIN.

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री।

पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार



पेड़ पर दुशाला

—राधेश्याम प्रगल्भ

कमला का विवाह अच्छे घर में हुआ था। पति उसे बहुत मानता था। पर उसको सास-ननद हमेशा ताने देती रहतीं, क्योंकि कमला का कोई भाई नहीं था। भाई ही क्या, मैके के नाम पर उसका कोई भी नहीं था। उसके माता-पिता बचपन में ही सिधार चुके थे। कमला का विवाह उसके दूर के रिश्ते के मामा ने किया था।

यों ससुराल में हर बात का पूरा आराम था, पर सास-ननद के तानों से वह दुखी थी। उसकी सास और ननद जब उसे कलमुंही कहती थीं, तब उसे बेहद तकलीफ होती। उसकी सास अक्सर कहती— "तू तो कलंकिनी है। जन्म के कुछ दिन बाद ही माता-पिता को खा गई। न कोई भाई, न भतीजा। तुझे तो बारहों महीने यहीं बने रहना है। पीहर होता, तो कुछ दिन के लिए वहां चली तो जाती।"

असहाय कमला चुपचाप सब सह लेती। एकांत में फूट-फूटकर रोती। कभी-कभी सोचती —'सास ठीक ही तो कहती हैं। मैं सचमुच बहुत अभागिन हूं। मेरा भी एक भाई होता, तो ईश्वर का क्या बिगड़ जाता।'

सावन का महीना था। कमला का मन बहुत खिन्न था। उसे रह-रहकर यही सोच हो रहा था— 'काश! मेरा भी भाई होता। मैं भी पीहर जा पाती!'

ऐसे जाने कितने सावन आए और कमला को दुखी करके चले गए।

एक सुबह वह घर की झाड़ू-बुहारी कर कूड़ा बाहर

फेंकने गई । टोकरी से कूड़ा फेंकने को थी कि उसकी नजर तेजी से रेंगते सांप पर पड़ी । उसके पीछे-पीछे एक आदमी भागा चला आ रहा था । उसके हाथ में लाठी थी । जाहिर था कि वह आदमी सांप को मारना चाहता था ।

कमला सोचने लगी— 'किस प्रकार सर्प की रक्षा की जाए ?' वह सोच ही रही थी कि सर्प दरवाजे के सामने से होकर निकला । कमला ने तुरंत कूड़े की टोकरी सर्प के ऊपर डाल दी । सर्प उस टोकरी के नीचे छिप गया । उसका पीछा करने वाला आदमी दौड़ता हुआ आगे निकल गया । उसके चले आने के बाद कमला ने वह टोकरी उठाई । सर्प ने एक बार कमला को देखा और चुपचाप एक ओर चला गया ।

सावन शुरू हो चुका था । हमेशा की भांति इस बार भी कमला का मन दुखी था ।

एक दिन एक आदमी कमला के यहां आया । उसने उसकी सास से कहा —"मैं अपनी बहन को विदा कराने के लिए आया हूं । कृपया उसे एक महीने के लिए पीहर भेज दीजिए ।"

कमला की सास बोली— "कमला का तो कोई भाई ही नहीं है । तुम कहां से उसके भाई बन कर आए हो ?"

उस आदमी ने कहा— "माता जी, मुझे मेरे मां-बाप ने बचपन में अपने एक रिश्तेदार के साथ व्यापार के लिए भेज दिया था । मैं परदेस गया हुआ था । अभी लौटा हूं । लौटने पर ही मुझे मालूम हुआ कि मेरे माता-पिता मर गए हैं और कमला का आपके यहां विवाह हो गया है । जब मैं गया था, कमला बहुत ही छोटी थी । ठीक प्रकार से बोल भी नहीं पाती थी । इसलिए वह भी मुझे पहचानेगी नहीं । आप मुझ पर भरोसा कीजिए और बहन को मेरे साथ भेज दीजिए ।"

कमला की सास ने कमला को सारा किस्सा बताया । कमला को भी विश्वास नहीं हुआ । पर जब उस आदमी ने बहुत जोर दिया, तो उसे मान लेना पड़ा । निश्चय हुआ कि लगभग एक माह बाद कमला का भाई कमला के पति को अपने साथ ले जाएगा । फिर कमला का पति कमला को वापस विदा करा लाएगा ।

कमला का भाई उसे अपने साथ लिवा ले गया ।

जब वे दोनों एक जंगल में पहुंचे, तो उस आदमी ने कमला से कहा— "बहन, तुम थोड़ी देर के लिए अपनी आंखें बंदकर लो ।"

कमला सोच में पड़ गई— 'यह ऐसा क्यों कहता है ? क्यों मैं एक अजनबी को अपना भाई मानकर उसके साथ अकेली चली आई ?'

उस आदमी ने कमला की घबराहट को जान लिया । तुरंत बोला— "बहन, तुम किसी प्रकार की चिंता न करो । वास्तव में मैं वही सर्प हूं, जिसे तुमने टोकरी डालकर बचाया था । तुम्हारे जीवन में भाई का अभाव था । इसलिए मैंने उसे पूरा करने का निश्चय किया । अब तक हम धरती पर थे, अब मैं तुम्हें पाताल लोक में अपने घर ले जाना चाहता हूं । इसीलिए तुमसे आंखें बंद करने को कहता हूं ।"

कमला ने आंखें बंदकर लीं । थोड़ी देर बाद उसने आंखें खोलीं, तो स्वयं को एक आलीशान महल में पाया । कमला को एक बहुत ही शानदार कमरे में ठहराया गया । उसकी सेवा में दो दासियां लगा दी गईं । कमला ने देखा, वहां सब का शरीर सर्प का था, केवल चेहरा मानवों का था । वे मनुष्यों की भांति आपस में बातें भी करते थे । इसलिए कमला को किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं हुई । कमला को अब तक यह पता चल गया था कि उसका भाई सांपों का राजा है ।



कमला अपने भाई की पत्नी और मां से भी मिली। सर्पराज की माता को वह मां कहने लगी थी। उसकी पत्नी को भाभी कहकर पुकारती थी।

कमला के भाई को हर समय फिक्र रहती कि उसकी बहन को कोई कष्ट न हो। अनेक नौकर-चाकर होते हुए भी वह स्वयं दिन में दो-तीन बार कमला से उसकी राजी-खुशी पूछता। कमला वहां बहुत खुश थी। सच पूछो, तो इतना अच्छा भाई पाकर वह मन ही मन फूली नहीं समाती थी।

वहां एक नियम था— हर रोज एक बहुत बड़े कड़ाह में दूध गरम किया जाता था। फिर उसे ठंडा करते थे। एक बहुत बड़ा घंटा था। दूध ठंडा हो जाने पर घंटे को बजाया जाता था। घंटे की आवाज सुनते ही सारे सर्प चले आते थे और एक साथ उस कड़ाह से दूध पीते थे। जब से कमला यहां पहुंची थी, सर्पराज ने सर्पों को दूध पिलाने का काम उसी को सौंप दिया था।

एक दिन कमला ने दूध गरम हो जाने के तुरंत बाद घंटा बजा दिया। दूध बहुत गरम था। सारे सर्प दौड़े-दौड़े आए और कड़ाह से दूध पीने लगे। सर्पों की जीभ जल गई। अब तो वे बड़े नाराज हुए। अपनी नाराजगी भयंकर फुफकारों से प्रकट करने लगे। सब कहते थे— 'हम इस लड़की को जीवित नहीं छोड़ेंगे।' आखिर सर्पराज की माता के समझाने-बुझाने पर सर्प शांत हुए। बेचारी कमला तो डर ही गई थी।

पाताल लोक में कमला का समय बहुत हंसी-खुशी से बीत रहा था। सुख के दिन बीतने में कितना समय लगता है। उसे वहां रहते एक महीना हो चला था। कमला को दिन जाते पता ही नहीं चला।

एक दिन सर्पराज जाकर अपने जीजा जी को लिवा लाया। अपने महल में उनका खूब सत्कार किया। अगले दिन अपनी बहन और जीजा जी को धन-धान्य, मणियां आदि देकर विदा किया। कमला ने हंसी-खुशी भाई, भाभी और मां से विदा ली। सर्पराज उन्हें पाताल महल में नहीं ले गया था। उनके लिए ऊपर ही एक महल खड़ा कर दिया था।

जब वे दोनों जंगल में आ निकले, तो उसके पति ने कहा— "अरे मैं अपना कीमती दुशाला तो वहीं भूल आया। तुम यहीं रुको। मैं अभी लेकर आता हूं।"

कमला का पति लौटकर वहां पहुंचा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। न वहां महल था, न राजसी उद्यान। उसकी पत्नी का भाई, उसके सम्बंधी भी नजर नहीं आए। बस, एक पेड़ पर उसे अपना दुशाला लटका हुआ मिल गया।

वह नाराज होता हुआ लौटा। कमला के पास पहुंचकर उसे बहुत बुरा-भला कहा। बोला— "तू तो मायाविनी मालूम देती है। कहां गया तेरा भाई! बता, नहीं तो मैं तुझे हमेशा के लिए त्याग दूंगा।"

पति की बातें सुनकर कमला बहुत घबरा गई। फिर साहस बटोरकर उसने कहा— "देखिए, मेरा कोई सगा भाई नहीं है। यह तो सर्पराज है। एक दिन मैंने इसी सर्प की जान बचाई थी। उसी एहसान के बदले में वह मेरा भाई बनकर यहां आया था।"

इस पर उसके पति ने कहा— "मुझे विश्वास नहीं होता।"

पति की जली-कटी सुनकर कमला रो पड़ी। उसने सच्चे मन से सर्पराज को याद किया। मन ही मन कहा— 'हे सर्पराज, अगर आप वास्तव में मेरे भाई हैं, तो प्रकट होकर मेरे पति का भ्रम दूर कीजिए।'

बहन की पुकार पर भाई को आना पड़ा। वह सर्प के रूप में ही आया। कमला और पति के सामने सर्प ने मनुष्य का रूप धारण किया। उसने कमला के पति से कहा—"मेरी बहन, जो कुछ कह रही है सत्य है। मैं हमेशा इसे अपनी बहन मानूंगा और इसकी रक्षा करूंगा।" फिर बोला— "जो पुरुष इस कहानी को पढ़ेगा उसे बहन अवश्य मिलेगी। जो लड़की इसे पढ़े-सुनेगी, उसे जीवन में भाई का स्नेह अवश्य प्राप्त होगा।"

सर्प अदृश्य हो गया। कमला के पति का भ्रम दूर हो गया था। वह कमला के साथ सुख से रहने लगा। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर,पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा,कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. मैंने गौर से देखा,— कहीं नजर नहीं आया। (तारा/ताला)

२. — कमीज पहने वह बूढ़ा, चुपचाप चला आ रहा था। (मैली/काली)

४. आश्चर्य ! पलक झपकते— गायब हो गया और राजा परेशान ! (हाथी/हार)

६. कहा था न,— पर लात मत मारो। (पेड़/पेट)

७. — हाथ में हो, तो मुझे कुछ नहीं सूझता। (पैन/पैसा)

९. —, यह तो ठीक है। (हां/जी)

१०. और— को खोजता मैं यहां तक आ गया। (घड़ी/लड़ी)

११. अजब— था, जो भी देखता, ताज्जुब में पड़ जाता। (देश/वेश)

१२. भीनी-भीनी गंध वाला भारतीय फूल।

ऊपर से नीचे

३. भला— से कैसा डर ? (चील/चीते)

५. — ओर देखो, जोकर खड़ा है। (इस/उस)

८. कभी सुना है यह राग ?

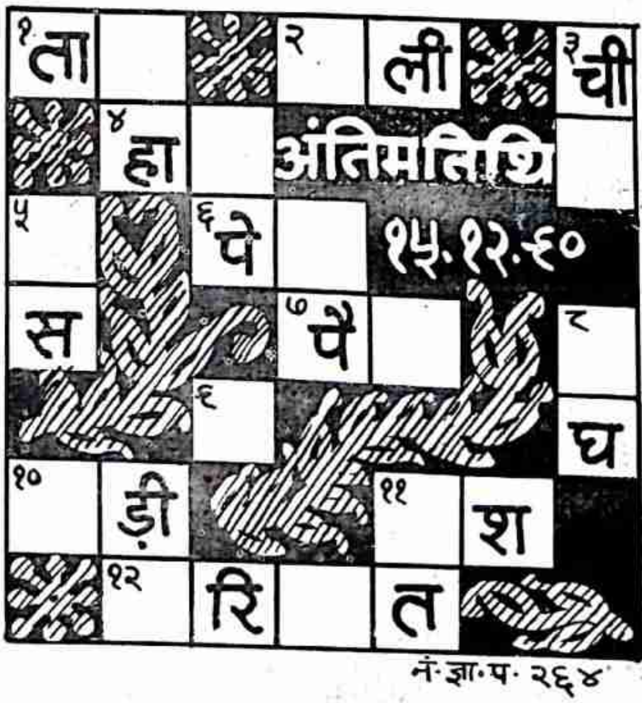
काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २६४

नाम ——————————

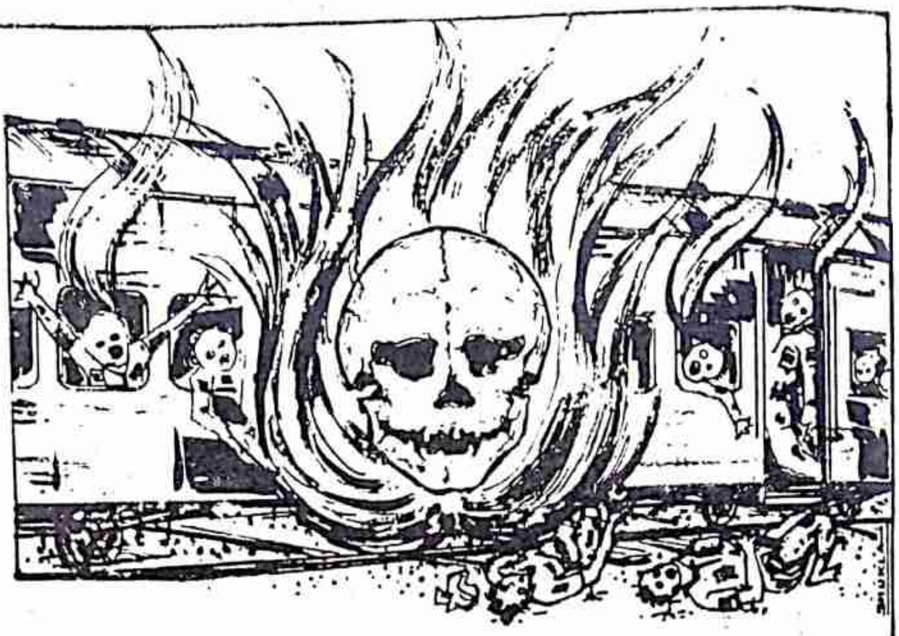
आयु ———— पता ——————————

——————————



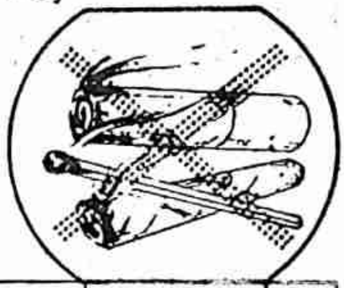
नं.ज्ञा.प. २६४

आग से सावधान

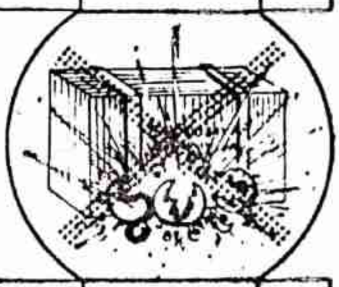


आग प्राय: व्यक्ति की भूल के कारण लगती है,

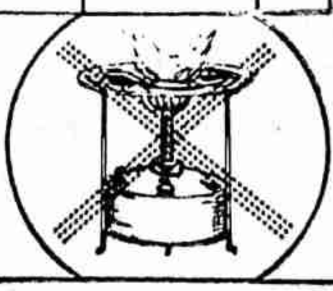
यदि आप :



- जलती हुई दियासलाई की तीली और सिगरेट के टुकड़े डिब्बे के अन्दर न फेंके,



- ज्वलनशील पदार्थ या खतरनाक सामान जैसे पटाखे, विस्फोटक, तेज़ाब आदि लेकर न चलें,



- डिब्बे के अन्दर स्टोव न जलायें,

तो आग लगने की रोकथाम हो सकती है।

भारतीय रेल अधिनियम के अन्तर्गत यात्री गाड़ियों में विस्फोटक पदार्थ, ज्वलनशील और खतरनाक सामान लेकर यात्रा करने की सख्त मनाही है। कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध अभियोग चलाया जा सकता है।

सकुशल यात्रा के लिये रेलवे की सहायता करें।

उत्तर रेलवे



तोता बोला

—साबिर हुसेन

एक राजा था । उसका नाम था परमानंद । वह अत्यंत क्रोधी और अत्याचारी था । उसके अत्याचार से जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी । राज्य के बहुत-से अधिकारियों ने राजा के नाम से खूब धन बटोर लिया था । तरह-तरह के करों के नाम पर जनता को तंग भी कर रहे थे । राजा अपने घमंड में चूर, किसी की नहीं सुनता था ।

उसी राज्य में गोकुलदेव नाम का एक विद्वान रहता था । वह कई विद्याओं में पारंगत था । लोग उसे गुरु जी कहते थे । गुरु जी के पास बहुत से विद्यार्थी पढ़ने आते थे । उन्हीं में राजा का पुत्र रामानंद भी था । राजा जितना कठोर था, राजकुमार उतना ही दयालु, नम्र और सरल स्वभाव का था । देश की हालत गुरु जी से भी छिपी नहीं थी । वह राजा को सही रास्ते पर लाने की युक्ति सोचते रहते थे ।

एक दिन गुरु जी आम के वृक्ष के नीचे बैठे थे । पास ही राजकुमार रामानंद धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था । अचानक एक तोते का बच्चा वृक्ष से गुरु जी की गोद में आ गिरा । गुरु जी ने उसे उठा लिया । तभी राजकुमार रामानंद गुरु जी के पास आकर मचलते हुए बोला—"गुरु जी, यह तोते का बच्चा मुझे दे दीजिए । मैं इसे राम-राम कहना सिखाऊंगा ।"

राजकुमार की बात सुनकर गुरु जी के दिमाग में एक बात आई । उन्होंने उस तोते के बच्चे को बिल्कुल अलग रखा और उसे 'मानुष से पक्षी हुए' रटाना शुरू कर दिया ।

अब राजकुमार की शिक्षा समाप्त होने का समय निकट आ रहा था । दूसरी ओर वह तोता भी बड़ा होता जा रहा था । वह सारा दिन 'मानुष से पक्षी हुए' रटता रहता ।

धीरे-धीरे वह दिन भी आ गया, जब राजा स्वयं गुरु जी से राजकुमार रामानंद को लेने आ पहुंचा । अब तक गुरु जी ने राजकुमार को सब कुछ बता दिया था । वह जाकर कहीं छिप गया । गुरु जी ने राजा का खूब आदर-सत्कार किया । राजा बार-बार छात्रों में अपने पुत्र को खोजता, लेकिन पुत्र कहीं दिख ही नहीं रहा था । तब राजा ने गुरु जी से पूछा—"राजकुमार कहां है ?"

सुनते ही गुरु जी उदास हो गए । राजा घबरा गया । उसने फिर पूछा—"राजकुमार को क्या हुआ । वह कहां है ?"

"क्या बताऊं महाराज, उसने ज्यों ही अपनी शिक्षा पूरी कर एक मंत्र का जाप किया, वह मनुष्य से तोता बन गया । मैंने मना किया था, इस मंत्र का जाप न करो । कारण यह है कि आपको बहुत-से लोगों का शाप है । किंतु वह न माना और तोता बन गया ।"—गुरु जी ने बताया ।

राजा को बड़ा क्रोध आया, किंतु बेटे के कारण वह शांत रहा । गुरु जी के कहने पर एक लड़का उस तोते को ले आया । गुरु जी ने जैसे ही तोते को पुचकारा, वह 'मानुष से पक्षी हुए. . . मानुष से पक्षी हुए' रटने लगा ।

"देखा महाराज, इसे मानव होने की बात अभी

तक याद है।"—गुरु जी बोले।

"यह ठीक कैसे होगा ?"—राजा चिंतित स्वर में बोला।

"यह तभी ठीक होगा, जब आप दयालु हो जाएं। सदैव दूसरों की सहायता करें। वरना यह तोता ही बना रहेगा।"—गुरु जी ने बताया।

राजा परमानंद वहां से खाली हाथ लौट आया। उसने किसी को नहीं बताया कि राजकुमार तोता बन गया है। लेकिन उसी दिन से उसका स्वभाव बदल गया। वह अत्यंत नम्र और दयालु हो गया। स्वयं प्रजा के दुःख-सुख की जानकारी लेने के लिए रात में वेश बदलकर घूमने लगा। उसने राज्य के भ्रष्ट अधिकारियों को पद से हटा दिया। चारों ओर राजा का जय-जयकार होने लगा।

एक दिन राजा शिकार के लिए जंगल में गया। साथ में सैनिक और प्रमुख दरबारी थे। गुरु जी भी वेश बदलकर जंगल में जा पहुंचे। राजा घोड़ा दौड़ाता हुआ जंगल के बीचों-बीच पहुंचा। सामने एक हिरनी खड़ी थी। पास ही उसका छोटा-सा बच्चा था। हिरनी प्यार से मृगछौने की ओर देख रही थी। तीर चलाते हुए राजा का हाथ एकाएक रुक गया। मंत्री ने कहा—"जल्दी कीजिए, वरना शिकार हाथ से निकल जाएगा महाराज।" पर राजा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने वापस लौटने का आदेश दिया। साथ ही घोषणा की—"मैं अब शिकार नहीं खेलूंगा। निर्दोष पशुओं की हत्या ठीक नहीं।"

राजा महल में वापस आया ही था कि उधर से गुरु जी भी लौट आए। साथ में राजकुमार था। राजा ने राजकुमार को गोद में उठा लिया। उसकी आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे।

"गुरु जी, मैं आपका आजीवन ऋणी रहूंगा।"—राजा बोला।

"नहीं महाराज, राजकुमार तो आपके कारण तोते से मनुष्य बना। मैंने तो सिर्फ मंत्र पढ़ा, सिद्धि तो आपने की है।"—गुरु जी बोले और मुसकराने लगे। ●

समय बीत गया

— सुरंजन

भगवान राम चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे, तो प्रजा ने प्रेम से उनका स्वागत किया। कुछ समय बाद गुरु वशिष्ठ ने कहा— "राम, अब तुम्हें अपने पिता, महाराजा दशरथ की आत्मा की शांति के लिए, गया धाम में पिंडदान देने जाना चाहिए।"

यह सुनकर राम प्रसन्न हुए। गया धाम और फल्गु नदी के अपार सौंदर्य और धार्मिक महिमा के बारे में वह जानते थे। सीता और लक्ष्मण की भी फल्गु के निर्मल जल में स्नान करने की इच्छा थी। राम ने उन्हें भी अपने साथ चलने की अनुमति दे दी।

रथ में बैठ, तीनों फल्गु नदी के तट पर आ पहुंचे। मंद-मंद बहती फल्गु की शांत, स्वच्छ धारा देखकर मुग्ध हो उठे। सुंदर वेश धारण कर श्वेत वस्त्रों में लिपटी फल्गु राम के पास आई। मुसकराते हुए बोली— "हे राम, मैं आपके दर्शन से धन्य हुई।"

"नहीं देवी, धन्य तो हम हुए हैं तुम्हारे तट पर आकर। बस एक ही अनुरोध है, पिंडदान अपनी उपस्थिति में स्वीकार करो।"— राम ने कहा।

"मैं इसीलिए आई हूं प्रभु। इससे मेरी महिमा और बढ़ेगी। मेरी सुंदरता का सभी बखान करेंगे।"— फल्गु ने कहा। उसकी बातों में कुछ अहंकार भी था।

पिंडदान का समय पहले से निश्चित था। गया के विद्वान और आचार्य तैयारी में जुटे थे। अचानक आचार्य ने नम्रवाणी में राम से कहा— "हे श्रीराम, पान के पत्ते तो आए ही नहीं हैं। इसके बिना तो पिंडदान सम्भव नहीं है।" "आप तैयारी कीजिए, आचार्य ! मैं अभी लेकर आया।"— कहकर राम पान के पत्ते लाने चले गए। फल्गु, सीता, केतकी, कामधेनु और आचार्य पिंडदान स्थल पर बैठ गए।

बहुत समय बीत गया, लेकिन राम नहीं लौटे। लक्ष्मण से रहा नहीं गया। वह सीता जी से अनुमति लेकर राम को ढूंढ़ने चल पड़े।

पिंडदान का समय और भी नजदीक आ गया था। तभी फल्गु की बहती धारा में से दो हाथ निकले और सीता से तर्पण मांगने लगे— "हे पुत्री सीता, मैं तुम्हारा श्वसुर राजा दशरथ पिंडदान मांग रहा हूं। शुभ समय बीत जाने पर पिंडदान का फल मुझे नहीं मिल पाएगा। मेरी विनती स्वीकार करो पुत्री! मुझे मुक्ति दिलाओ! मुझे फल्गु के बालू से पिंड दो।"

राजा दशरथ की वाणी में तड़प थी। सीता व्याकुल हो उठीं। राम-लक्ष्मण को गए काफी समय बीत गया था। सीता उठीं और फल्गु नदी के बालू का पिंड बनाकर कातर स्वर में बोलीं— "हे फल्गु! हे केतकी! हे कामधेनु और गया के श्रद्धेय आचार्य! मैं आप सबको साक्षी मानकर अपने श्वसुर राजा दशरथ को पिंडदान देती हूं।"

इतना कहकर सीता ने राजा दशरथ के हाथों में बालू का पिंड तर्पण कर दिया। पिंडदान मिलते ही राजा दशरथ को प्रेतयोनि से मुक्ति मिल गई। देखते-ही-देखते अद्भुत पक्षी का रूप धारणकर वह आकाश की ओर बढ़ चले। और फिर अंतर्धान हो गए।

सीता और सभी ने एक साथ यह चमत्कारिक दृश्य देखा। फिर उन्हें नतमस्तक होकर प्रणाम किया। कुछ समय बाद राम और लक्ष्मण पान के पत्ते लिए पहुंचे, तो देखा—सीता सहित सभी वहां खड़े, आकाश की ओर देख रहे हैं।

"सीते, मैं आ गया। लीजिए आचार्य, पान के पत्ते। जल्दी पिंडदान कराइए। देर मत कीजिए। क्षमा कीजिए, मेरे आने में बहुत विलम्ब हुआ।"— आचार्य के हाथों में पान के पत्ते सौंपते हुए राम ने कहा।

"हे नाथ, पिंडदान तो हो गया। आपके आने में बहुत विलम्ब हुआ। शुभ घड़ी बीतती जा रही थी। उधर फल्गु की धारा में दो हाथ निकले और मुझसे फल्गु के बालू का पिंडदान मांगने लगे। मैंने बालू का पिंडदान दे दिया। हम महाराजा दशरथ की मुक्ति का अद्भुत दृश्य आकाश में देख रहे थे।"— कहती हुई सीता भाव-विभोर हो उठीं। राम ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप फल्गु की ओर देखा, फिर केतकी, कामधेनु और आचार्य पर दृष्टि डाली। चारों ओर अंधेरा छा गया। सभी एक स्वर में बोले— "नहीं प्रभु, नहीं! पिंडदान नहीं हुआ। सीता जी झूठ बोल रही हैं।" झूठ बोलने वालों में पहला स्वर फल्गु नदी का था।

सीता जी का चेहरा क्रोध से लाल हो उठा। कठोर निगाहों से फल्गु की ओर देखती हुई बोलीं— "मैं इस एक झूठ के लिए तुझे शाप देती हूं। जा, अंतः सलिला हो जा। सदैव रेत के नीचे बहती रहेगी। पर देखने वाले रेत ही देखेंगे। तू कहीं नहीं दिखाई पड़ेगी।"

फिर सीता ने बारी-बारी से केतकी, कामधेनु और गया के आचार्य को भी शाप दिया। सीता जी की निगाह अब उस वट वृक्ष की ओर गई, जिसके नीचे पिंडदान होने वाला था। तभी वृक्ष एक पुरुष आकृति धारण करके सामने आया। हाथ जोड़कर राम से कहने लगा— "हे राम, देवी सीता ने बालू का पिंड देकर आपको पितृ-ऋण से मुक्त कर दिया है। मैं इसका साक्षी हूं। सीता धरती की पुत्री हैं। कभी झूठ नहीं बोल सकतीं।"

सीता जी बोलीं— "आपको अक्षयवट होने का वरदान देती हूं।"

राम के मुख पर प्रसन्नता झलक उठी। लेकिन उन्होंने एक बार फिर से पिंडदान किया। सीता और लक्ष्मण भी इस कार्य में हाथ बंटाने लगे। सीता जी के मन में रह-रहकर प्रश्न उठ रहा था— 'आखिर एक बार पिंडदान हो चुका, तो दोबारा क्यों?'

राम सीता जी के मन की बात समझ गए। बोले— "पुत्र के मन की शांति के लिए यह पिंडदान भी जरूरी था।"

बस, तभी से फल्गु अंतः सलिला हो गई। ऊपर से देखने पर रेत, लेकिन बालू को हटाने पर नीचे से निर्मल जल छलछलाता निकल आता है। ●

(मगध की लोक कथा)

मयन

—गोपाल चतुर्वेदी

बहुत वर्ष पहले नगरिया नामक स्थान पर मयन नामक एक युवक रहा करता था । वह मातृभक्त था । कुछ समय बाद उसका विवाह धारऊ गांव की एक सुंदर कन्या के साथ होना तय हुआ । निश्चित समय पर जब उसकी बारात जा रही थी, तो रास्ते में बारातियों को इस बात की याद आई कि विवाह की अति आवश्यक वस्तु 'सिंधोरा' तो घर पर ही रह गया । वह कहां रखा है, इसकी जानकारी केवल मयन को ही थी । यह लेने के लिए मयन दूल्हा अपने घर वापस लौटा । घर पर उसने देखा, उसकी मां कठौती में अपने दोनों हाथों से खीर खा रही है । जब मयन ने मां से इस तरह खाने का कारण पूछा, तो मां ने कहा—"बेटा, आज जो कुछ खा लेंगे, सो खा लेंगे । बहू के आ जाने पर फिर खाने को मिला या न मिला ।"

मां की यह बात सुनकर मयन को बहुत वेदना हुई । उसके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी । वह उसी समय विवाह का परित्याग कर, संन्यासी बन गया और जंगल की ओर चला गया । मार्ग में ठहरी बारात ने जब यह समाचार सुना, तो पूरी बारात और विवाह सम्बंधी सारी वस्तुएं पत्थरों में तब्दील हो गईं ।

इस घटना से प्रभावित होकर किसी राजा ने मयन और बारातियों के रूप में अनेक प्रस्तर प्रतिमाएं बनवाईं जो नगरिया और धारऊ में वर्षों इधर-उधर पड़ी रहीं । दैव योग से कुछ वर्ष बाद मयन की प्रतिमा धरती में समा गई, किंतु अन्य प्रतिमाएं सतह पर ही पड़ी रहीं । जब अश्यौली के राजा वीरसिंह ने सन् १३९१ में किला बनवाने के लिए उत्खनन करवाया, तो उन्हें उत्खनन में एक विशालकाय प्रतिमा मिली । इसे पुरातत्वविदों ने महर्षि मयन की प्रतिमा बतलाया । इस प्रतिमा को राजा वीरसिंह ने एक चबूतरे पर विधिवत् स्थापित करा दिया । उसने मयन की प्रतिष्ठा में किले के आसपास बसी बस्ती को 'मयनपुरी' नाम दिया, जो बाद में मैनपुरी हो गया । ●

खाली घड़ा

—अभिषेक

एक बार विश्वकर्मा ने मन में विचार किया—'चलो, पृथ्वी पर जाकर देखा जाए, वहां कैसा चल रहा है ।' विश्वकर्मा के मन का विचार ब्रह्माजी को मालूम पड़ा ।

अगले ही दिन उन्होंने विश्वकर्मा को बुलवाकर कहा—"तुम भू लोक जाना चाहते हो, तो अवश्य जाओ, पर साथ में ये दोनों घड़े लेते जाना ।"

"इन में है क्या ?"—विश्वकर्मा ने पूछा ।

"एक घड़े में सुख है, जो पूरा ऊपर तक भरा हुआ है । दूसरा घड़ा ज्ञान का है ।"—ब्रह्माजी ने कहा । विश्वकर्मा तुरंत बोले—"मगर यह तो बिलकुल खाली है !"

"हां, बिलकुल खाली है ।"—ब्रह्माजी बोले—"इसे भरकर लाना है ।"

"वह कैसे ?"—विश्वकर्मा ने पूछा ।

"सुख बांटना और ज्ञान अर्जित कर, इसे भरना ।"—ब्रह्माजी ने समझाया ।

विश्वकर्मा दोनों घड़ों को लेकर पृथ्वी पर आ गए । सबसे पहले उन्होंने ज्ञान अर्जित कर, घड़ा भरना शुरू कर दिया । जब ज्ञान का घड़ा पूरा भर गया, तो सोचा—'अरे, यह क्या किया ! मुझे सुख बांटकर ज्ञान का घड़ा भरना था । चलो, कल से सुख बांटना शुरू करेंगे ।'

अगले दिन दोनों घड़ों में—किस में सुख है और किस में ज्ञान, विश्वकर्मा भूल गए । गलती से उन्होंने सुख के स्थान पर, ज्ञान बांटना शुरू कर दिया ।

कहते हैं, तब से यह गलती मनुष्य आज भी दोहराता चला आ रहा है । वह भी विश्वकर्मा की ही तरह ज्ञान बांटता है, सुख नहीं । ●


चीटू नीटू
इस बार बड़े दिन पर अपने मित्रों को घर बुलाते हैं...आओ कमरे की कुछ सफाई कर लें
इस दीवार पर सीलन का धब्बा है..यहां कील लगा कर तस्वीर टांग देते हैं
अब इस तस्वीर से काम नहीं चलेगा अब तो बड़ी तस्वीर...एक कील कुछ ऊंची लगाओ तब तक मैं गुलदस्ता साफ करती हूं
बचाओ.. छिपकली
..और मम्मी भी
यहां से फूल खरीद कर ही मित्रों के घर जा कर बधाई दे आते हैं



पुरस्कृत चित्र

प्रांजल, केन्द्रीय विद्यालय, पो. बड़ागुलाई, जि. तिनसुकिया (असम)

इनके चित्र भी पसंद किए गए —राजलक्ष्मी . तियुअंलोदुवा, मयूरभंज (उड़ीसा); मनीष दतवानी, रतलाम; चंचला कुमारी, बोकारो स्टील सिटी; वंदना गुप्ता, कलकत्ता; स्नेहा मान सिंह, मेरठ ।

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर, १५ दिसम्बर '९० तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : फरवरी '९१ अंक

चित्र : आर. के. वधवा





आरती सारिका शुभांगी काजल

पुरस्कृत कथा :

मगरमच्छ और हार

रामो पश्चिम बंगाल के एक छोटे-से गांव का चरवाहा था। एक शाम रामो गाय चराकर लौट रहा था। उसके गांव का एक लड़का दौड़ते हुए उसके पास आया। बोला—"दौड़ो रामो, दौड़ो। तुम्हारी मां को मगरमच्छ ने निगल लिया है।" यह सुनते ही रामो तेजी से नदी की ओर भागा। जब वह वहां पहुंचा, तो बड़ी देर हो चुकी थी। सभी गांव वाले वहां इकट्ठा होकर रो रहे थे। किंतु रामो ने हिम्मत न हारी। वह पास खड़ी एक नाव में बैठकर हाथ में भाला लिए, नदी में आगे बढ़ता गया। तभी उसने सामने मगरमच्छ को तैरते देखा। अपनी मां की मृत्यु का बदला लेने के लिए रामो ने अपने हाथ का भाला मगरमच्छ की ओर फेंका। भाला मगरमच्छ के दोनों जबड़ों के बीच में फंस गया। मगरमच्छ के मुंह में भाला फंसा देख रामो डर गया। उसका खुला मुंह भयानक नजर आ रहा था। तभी रामो ने कराहने की आवाज सुनी। उसने देखा कि उसकी मां अभी तक मगरमच्छ के जबड़ों के बीच में फंसी हुई है। उसने अपनी मां को गांव वालों की मदद से, मगरमच्छ के मुंह से बाहर निकाला।

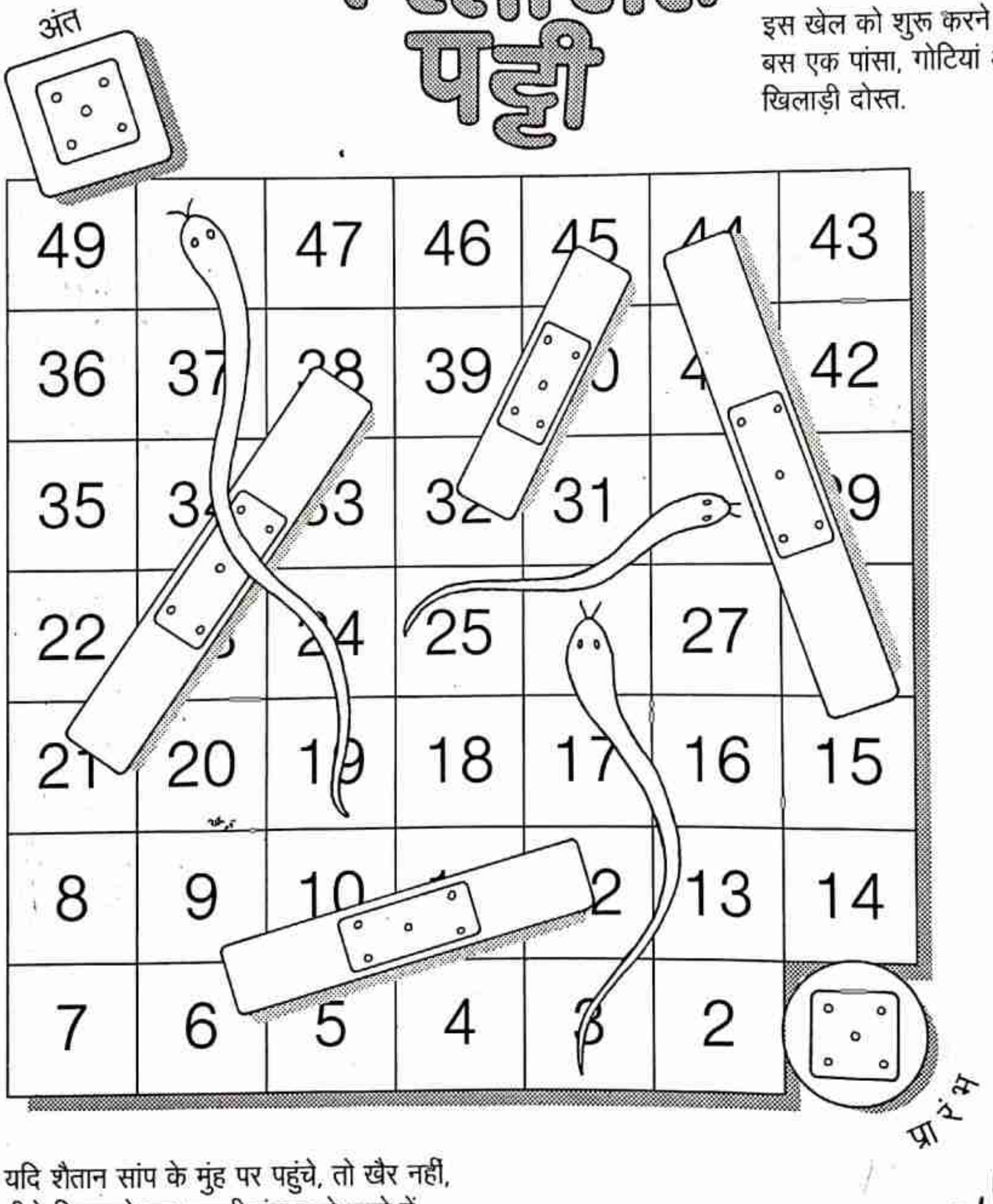
मां बुरी तरह से घायल थी। गांव वालों ने उसे किनारे पर लिटा दिया और वैद्य को बुला लाए। उधर रामो को अपने भाले की चिंता थी। मां को निकालने से पहले उसने भाला निकाल लिया था। मगर वह वहीं पानी में रह गया था। रामो भाला लेने गया, तो उसने देखा, मगरमच्छ का मुंह जस का तस खुला है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मगरमच्छ के मुंह में एक बड़ा नुकीला पत्थर फंसा था। रामो ने भाले की मदद से पत्थर निकाल दिया। मगरमच्छ बोला—"धन्यवाद रामो, इस नुकीले पत्थर की वजह से मैं दर्द से परेशान था।" कहकर मगरमच्छ ने पानी में डुबकी लगाई। रामो तट पर आया, तो वहां एक बहुमूल्य हार पड़ा था।

—ज्योति चौधरी, कलकत्ता

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं— विश्वमोहन श्रीवास्तव, बलरामपुर; सुरेंद्रकुमार गुप्ता, कैमला।

शैतान सांप और दोस्तीभरी पट्टी

इस खेल को शुरू करने के लिए चाहिए बस एक पांसा, गोटियां और एक खिलाड़ी दोस्त.



बिन्दु वाली रेखा पर काटें

यदि शैतान सांप के मुंह पर पहुंचे, तो खैर नहीं, नीचे खिसकते हुए उसकी पूंछ वाले खाने में उतरना होगा.

किस्मत के धनी हो और दोस्तीभरी पट्टी के नीचे आ गए तो सीधे पहुंचोगे दोस्तीभरी पट्टी पर चढ़ते हुए उसके ऊपरी खाने पर.



HTA 2886

एक अनोखी प्रतियोगिता

'नंदन' के पाठकों के लिए

दो सौ पुरस्कार

□ लिखो कुछ नया— बनाओ कुछ ऐसा, जिसमें हो कोई अनूठी बात... जो भी कुछ लिख सकते हो लिखो।

बना सकते हो बनाओ,
'नंदन' में नाम छपाओ,
भरपूर इनाम भी पाओ।

□ इस प्रतियोगिता का उद्देश्य ही है बाल लेखकों/कलाकारों में छिपी हुई प्रतिभा को जगाना। उन्हें प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाना। प्रतियोगिता में आठ से सतरह वर्ष के बच्चे भाग ले सकते हैं। अपना नाम, पता, आयु अवश्य लिखें।

□ आप कहानी, कविता, चुटकुले, मनोरंजक संस्मरण, जैसी रोचक सामग्री लिखकर भेज सकते हैं। कहीं यात्रा पर गए हों, तो उसका मजेदार वृत्तांत लिख डालिए या कोई आपबीती, आसपास की कोई घटना, किसी का शब्द-चित्र, पूरी स्वतंत्रता है आपको। लेकिन हां, रचना आपकी अपनी लिखी हुई, मौलिक होनी चाहिए— नकल की हुई नहीं। रचना ५०० शब्दों से बड़ी न हो।

□ चित्र बनाने में रुचि हो, तो अपना बनाया कोई रंगीन चित्र भेजिए, विषय भी आप खुद तय करें कि वह किसी झील का दृश्य हो या स्कूल का वार्षिक उत्सव, कोई मेला हो या फिर कहीं की यात्रा। कोई चुलबुला कार्टून भी भेज सकते हैं।

□ हर विषय की श्रेष्ठ प्रविष्टि पर पुरस्कार दिए जाएंगे। दो सौ पुरस्कार इस प्रकार होंगे—

५० प्रथम पुरस्कार	— प्रत्येक १०० रु.
५० द्वितीय पुरस्कार	— प्रत्येक ५० रु. (पुस्तकें)
१०० प्रशंसा पुरस्कार	— प्रत्येक ३० रु.

रचना या चित्र को भेजते समय लिफाफे पर यहां प्रकाशित 'नंदन पाठक प्रतियोगिता' का पता काटकर चिपका दें।

अंतिम तिथि : २० दिसम्बर १९९०

'नंदन पाठक प्रतियोगिता'
सम्पादक : नंदन
हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१





तत्वों, जड़ी-बूटियों तथा विटामिनों का अनोखा मिश्रण

न कोई दबाव, न कोई तनाव

दैनिक जीवन की कठिनाईयां अथवा उलझी हुई समस्याओं का बोझ, और उस पर सुबह से शाम तक कामों में जुटे रहना आपके लिये मानसिक दबाव और असाधारण थकावट का कारण बनते हैं।

सिंकारा सदा प्रत्येक दशा में आपकी थकान तथा तनाव को दूर करता है। और ख़र्च हुई शक्ति को तेजी से लौटाता है। यह रक्त संचार को ठीक करता है, बढ़ी हुई चर्बी से यकृत को बचाता है। और पाचन शक्ति को ठीक रखने में सहायता करता है। सिंकारा द्वारा चुस्त और शक्तिशाली रहकर ज़िन्दगी का सफ़लता से सामना कीजिये।

स्त्रियों के लिये वरदान

आप घरेलू कामकाज और परिवार की देखभाल में अपना सारा समय बिताती हैं, परन्तु आप अपने लिये क्या करती हैं? क्या आप अपने-आप को थकी-हारी महसूस करने लगी हैं?

सिंकारा लेना अपना दैनिक नियम बनाइये। यह आपको फिर से चुस्ती तथा शक्ति देगा। गर्भवती तथा दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिये सिंकारा विशेषकर लाभदायक है। क्योंकि इसमें फ़ोलिक एसिड, विटामिन बी. 12 तथा आयरन होते हैं। फिर से शक्ति प्राप्त करके अपने रोज़ाना के कामों में जुट जाइये।

छात्रों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण

कक्षाओं की व्यस्तता, होम-वर्क में वृद्धि, परीक्षाओं की बोझल तैयारी तथा कठिन परिश्रम वाले खेल-कूद के कारण छात्र बहुत अधिक थक जाते हैं। मानसिक तथा शारीरिक शक्ति के असाधारण ख़र्च से वह सुस्त हो जाते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि सिंकारा इस अप्रिय स्थिति को बदल देता है। इसमें शामिल शक्तिदायक तत्त्व (विशेषकर जिंक तथा आयोडीन) मस्तिष्क की कोशिकाओं को अनिवार्य शक्ति प्रदान करते हैं। तथा छात्रों में सीखने और याद रखने की योग्यता को बढ़ाते हैं।

सबके लिये प्रत्येक ऋतु में लाभदायक

सिंकारा में आपके परिवार की शक्ति के लिये सभी अनिवार्य शक्तिदायक तत्त्व, विटामिन, तथा बहुत सी जड़ी-बूटियां शामिल हैं।

सिंकारा अल्कोहल, कैफ़ीन और लेपाटोज़ोल जैसे हानिकारक पदार्थों से मुक्त है। इस तरह इसमें नशीले पदार्थ बिल्कुल नहीं हैं। और न ही इसकी आदत पड़ती है। कमज़ोरी तथा निर्बलता, कठिन परिश्रम वाले काम, विटामिन की कमी, भूख की कमी, वजन कम होना, पौष्टिकता की कमी और तनाव तथा रोगावस्था, छात्रों की मानसिक तथा बुद्धि के विकास, बढ़ते हुए बच्चों के लिये और गर्भवती तथा दूध पिलाने वाली महिलाओं के लिये विशेष रूप से सिंकारा पीने का परामर्श दिया जाता है।

हमदर्द

सिंकारा

विश्व-प्रसिद्ध फ़ैमिली टॉनिक, प्रत्येक ऋतु में उपयोगी

HTA 67:2

बातें रंग-बिरंगी

स्कूली छात्र का कमाल : १४ अगस्त, १९९० को ओल्ड ट्रैफर्ड (मानचेस्टर) में क्रिकेट मैच खेला जा रहा था। भारत और इंग्लैंड के बीच मुकाबला था। भारत की टीम में एक स्कूली छात्र भी खेल रहा था। उसका नाम सचिन तेंदुलकर था। उसने जैसे ही ११९ रन (और आउट नहीं) बनाए, सचिन का नाम भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। भारत में ही नहीं,इंग्लैंड के समाचार पत्रों में भी उसका नाम सुर्खियों में छापा गया। दुनिया में सबसे छोटी उम्र में शतक जमाने वाला, वह दूसरा खिलाड़ी बना। पाकिस्तान के मुश्ताक मोहम्मद ने १९६०-६१ में १७ साल और ८२ दिन की उम्र में शतक लगाया, सचिन ने १७ साल और ११२ दिन की उम्र में। अंतर केवल ३० दिन का है। दुनिया में सबसे कम उम्र में शतक बनाने वाले यदि मुश्ताक हैं, तो भारत में सबसे कम उम्र में शतक बनाने वाला है सचिन।

भारतीय क्रिकेट का 'कर' परिवार : भारतीय क्रिकेट में 'कर' परिवार का अपना ही महत्व है। भारतीय क्रिकेट इतिहास में एक दर्जन से अधिक ऐसे खिलाड़ी हैं जिनके नाम में 'कर' है। जैसे डी.डी. हिंडलेकर, एम. रैंगनेकर, दत्तू फडकर, विजय मंजरेकर, एम.एस. हार्डिकर, सी.टी. पाटनकर, अजित वाडेकर, एकनाथ सोल्कर, सुनील गावस्कर, रामनाथ पारकर, हेमंत कर्तिकर, दिलीप वैंगसरकर, मनोज प्रभाकर, संजय मांजरेकर, और सचिन तेंदुलकर।

जान है जहान है : जिस प्रकार बम्बई को क्रिकेट का, बंगाल को फुटबाल का, पंजाब को हाकी का, केरल को एथलेटिक्स का, सेना को मुक्केबाजी का गढ़ माना जाता है, वैसे ही कुश्ती का गढ़ दिल्ली है। कुश्ती के गुरु हनुमान भी दिल्ली में रहते हैं। उनकी उम्र ९० वर्ष है। जन्म १५ मार्च, १९०१ को चिड़ावा (राजस्थान) में हुआ।

उनका कहना है—"पाकिस्तान में एक पहलवान था भोलू। उसके पुट्ठों में इतनी ताकत थी कि उसे दुनिया का कोई भी पहलवान दबोच नहीं पाया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई,उस समय मैं भी वहां पहुंचा था। लाहौर की बात है। जब उसे दफनाया जा रहा था, तो एक चादर मैंने भी डाली।

वह कहते हैं—"जो पहलवान अखाड़े के बाहर लड़ाई-झगड़े या बुरे धंधे करते हैं,वे कुश्ती कला को बदनाम करते हैं। पहलवानों को चाहिए कि वे अपना सारा जोर और ताकत कुश्ती के अखाड़े में ही दिखाएं, अखाड़े से बाहर नहीं। यों तो मरने के लिए लाखों रोज पैदा होते हैं, लेकिन जीना तो उसका है जिसको मरने के बाद भी लोग याद करते हैं।"

ओलम्पिक खेलों का १००वां वर्ष : ओलम्पिक की शुरूआत १८९६ में एथेंस में हुई। इसका इतिहास अपने १०० साल पूरे करने के कगार पर है। जहां भी इन खेलों का आयोजन होता है,वह नगर रातोंरात दुनिया में मशहूर हो जाता है। कल तक अमेरिका के दक्षिणी हिस्से में बसे अटलांटा का नाम बहुत कम लोग जानते थे। अब इस नाम से दुनिया का बच्चा-बच्चा परिचित है। यहां १९९६ के ओलम्पिक खेल होंगे। बहुत-सी ऐसी खेल प्रतियोगिताएं हैं जिनका आयोजन चार वर्ष बाद होता है। लेकिन ओलम्पिक का आयोजन हमेशा लीप वर्ष में होता है। १९९२ के ओलम्पिक खेलों का आयोजन बार्सीलोना में होगा। उसके बाद १९९६ में इन खेलों का १००वां जन्म दिन अटलांटा में मनाया जाएगा।

वह स्कूल मास्टर था : एक थे स्कूल मास्टर। वह फ्रांस के रहने वाले थे। नाम था : 'बैरन पियर द कार्बर्टिन'। उन्होंने ओलम्पिक खेलों की नींव रखी। उन्होंने ही कहा—"खेलों में हार-जीत का उतना महत्व नहीं होता,जितना कि उनमें भाग लेने का होता है।" १९२८ में ओलम्पिक खेलों के पिता 'कार्बर्टिन' को विश्व शांति के लिए किए गए प्रयासों के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। कार्बर्टिन ने ओलम्पिक खेलों का जो नन्हा पौधा लगाया था, उसने आज विशाल वट-वृक्ष का रूप धारण कर लिया है।

—योगराज थानी

पत्र मिला

☐ अक्तूबर अंक में 'मछली ने कहा', 'दूध की नदी', 'बहन जीत गई' और 'नीम के नीचे' कहानियां अच्छी बन पड़ी थीं। 'चित्र कथा', 'चीन की झांकी' तथा भारत के प्रमुख खिलाड़ियों का परिचय अविस्मरणीय था।

—विकी, जालंधर (पं.)

☐ इस अंक का मुख पृष्ठ आकर्षक था। सभी कहानियां शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्धक थीं। एलबम में डा. भीमराव अम्बेडकर का चित्र देखकर मन श्रद्धा से भर उठा।

—वीणा वेंकटेश, चिकमंगलूर

☐ प्रतियोगी युग को देखते हुए हमारी इस प्रिय पत्रिका में कई नए स्तम्भ शुरू किए जाने चाहिएं, जिनसे बच्चों को ज्ञान के साथ-साथ उन्हें अपने भविष्य की दिशा भी मिल सके।

—भानुशंकर, गुवाहटी

☐ इस अंक में 'चित्र-कथा', 'तेनालीराम' तथा 'चीटू-नीटू' प्रमुख आकर्षण का केंद्र रहे। कहानियों की बात क्या कहूं, वे तो हमेशा ही रोचक होती हैं।

—दीपक गुप्ता, शामली

☐ 'नंदन' अर्थात् एक ऐसी पत्रिका, जिसे श्रेष्ठ कहना, इसके साथ अन्याय करना होगा। क्योंकि इसका स्तर तो सर्वश्रेष्ठ से भी ऊपर है। बातें रंग-बिरंगी में योगराज थानी ने अच्छी जानकारी दी।

—ऋषिकुमार खदरिया, हनुमानगढ़

☐ मैं देहात में रहता हूं। एक बार अखबार वाले की साइकिल पर रंग-बिरंगा 'नंदन' देखकर उठा लिया। बस तभी से मैं इस पत्रिका को नियमित रूप से पढ़ता हूं।

—ललितकुमार साहू, बलौदा बाजार

☐ 'नंदन बाल समाचार' में मैंने पढ़ा कि एक इंजीनियर ने पानी से चलने वाली कार बनाई है, तो मेरा मन भी इंजीनियर बनने को करने लगा। बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए पत्रिका को बधाई।

—अमित पाहवा, कुरुक्षेत्र

☐ अक्तूबर '९० अंक में अच्छी कहानियों का चयन किया गया था। चित्र-कथा 'बगल में रावण' विशेष अच्छी लगी। देश और विदेश में होने वाली तरह-तरह की रामलीलाओं के बारे में भी जानकारी दिया करें।

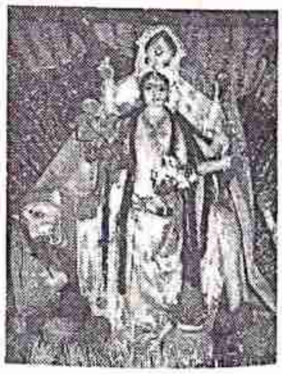
—सुनंदा पटवर्धन, राउरकेला

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे—अनिलकुमार गुप्ता, होशंगाबाद; भारती वर्मा, मधेपुरा; बालकिशन केडिया, झुंझनूं।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. हाथ में जाल वाले आदमी का दायां जूता छोटा है।
२. दरवाजे पर लगी घुंडी गायब हो गई है।
३. सीढ़ियों पर लगी रेलिंग का एक सरिया गायब है।
४. अटैची के पास खड़े आदमी के हैट से अधिक बाल बाहर निकले हैं।
५. उसका कोट नीचे से कम चौड़ा है।
६. सीढ़ी थामे खड़ी नर्स की टोपी छोटी है।
७. उसके पीछे शेल्फ में एक बोतल अधिक है।
८. सीढ़ी का ऊपरी हिस्सा अधिक चौड़ा है।
९. कोने में रखा पालने का एक भाग काला हो गया है।
१०. दाएं कोने में खड़े आदमी की नाक नुकीली है।

शीर्षक बताइए परिणाम



हजारों पाठकों ने बढ़िया-बढ़िया शीर्षक भेजे। अक्तूबर '९० में छपे चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए—

जय जगदम्बा मैया की, पार करो मेरी नैया भी।
—वीना टहिल्यानी, आर.आर. फ्लैट्स, फ्लैट नं.-८, ८, वारेन रोड, मायलापोर, मद्रास।

शक्ति के रूप अनेक, दुर्गा मां भी उनमें एक।
—अनुराधा मित्तल, आर-७४५, न्यू राजेंद्र नगर, नई दिल्ली।

जय हो, जय हो तेरी माता, सारा जग तेरे ही गुण गाता।
—हरीश आर्य, ९०७/ए, डी-साईट, दाहोद, गुजरात।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : ममता भल्ला, सुंदरनगर (उड़ीसा); हेमंतकुमार महादुले, गोंदिया (महाराष्ट्र); रामजीलाल अग्रवाल, दुमदुमा (असम); महाराज कृष्णलाल, लुधियाना; ऋचा बत्रा, अम्बाला (हरियाणा)।

Scanned with CamScanner

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. रविशंकर पाठक, १६ वर्ष, एस.पी.एम. गढ़हारा, बेगूसराय; २. सुजानसिंह जावलिया, १४, भूपाल सागर, चित्तौड़गढ़; ३. नीरजकुमार भट्ट, १६, भभुआ, रोहतास (बि.); ४. पवन कोहली, १०, नकुड़, जि. सहारनपुर; ५. संजय पीटर सरेन, ८, मिशन कम्पाउंड, जोड़ा फाटक, धनबाद; ६. अबेसिंह, १३, मदन बेग सेंटर, के.एफ.सी. काम्पलेक्स, मैसूर; ७. मनोज तिवारी, १०, ज्योत्सना कुंज, साहूकारा, उझानी (उ.प्र.); ८. पूजा भाटिया, ११, २६, जटवारा, गाजियाबाद; ९. अशोककुमार, १३, ३३२६, सैनिक स्कूल, कपूरथला; १०. सुनीता गुप्ता, १३. सी.टी. ४७, यमुना कालोनी, देहरादून; ११. विशाल मल्होत्रा, ११, ३२१, विवेक विहार कालोनी, हरिद्वार; १२. अमित दुआ, १५, के.बी.-१०३, पुराना कविनगर, गाजियाबाद; १३. राजीवकुमार, १६, एल.सी.टी. घाट, विक्रमशिला नगर (बि.); १४. पवनकुमार सक्सेना, १५, मो. केला बाग, क्वार्टर नं. ९, बरेली; १५. संतदेवकुमार राय, १५, एफ-१२, डी.डी.ए. फ्लैट्स, माडल टाउन, दिल्ली।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. ललितकुमार बस्नेत, १६ वर्ष, हिमलू डेयरी फार्म, पो. माटिगाढ़ा, दार्जिलिंग; २. महेश कालड़ा, १६, ७०, लाजपत नगर, मल्दहिया,वाराणसी; ३. फाल्गुनी वाजपेयी, ८, साह रजब रोड, कलकत्ता; ४. कुतबुद्दीन खां, १६, ग्रा. रिथट, पो. पिगांव, गुड़गांव; ५. अभिजित महाजन, १४, सालमारी, कटिहार।

६. सैयद अदिबुज्जमा, १३, न्यू कालोनी धर्मपुर, वार्ड नं. १०, समस्तीपुर; ७. आशु माहेश्वरी, ५३, गगन विहार, दिल्ली; ८. प्रदीपकुमार, १६, द्वारा प्रह्लादराम पो. प्रचम्बा, गिरिडीह (बि.); ९. अबु अबैदा,१४, आसिम बिहारी नगर, सोह सराय, नालंदा (बि.); १०. राहुल शर्मा, १६, ४/१ सुभाष पार्क, रेस्ट कैम्प, ईस्ट-१, देहरादून; ११. प्रेमशंकर बड़गोती, १२, पो. सेमरी हरचंद, जि. होशंगाबाद (म.प्र.); १२. राजू रंजन सिन्हा, १६, शंकर मेडिकल हाल, गढ़वा, पलामू (बि.); १३. दीपक अग्रवाल, १६, म.नं. २, अट्टा वाला मौहल्ला, फिरोजाबाद (उ.प्र.); १४. राकेशकुमार बूबना, १६, द्वारा सांवरलाल बूबना, सोनैली, कटिहार

डाक टिकट संग्रह तथा भ्रमण में रुचि :

१. मुकेश, १२ वर्ष, निकट-कोल्ड स्टोरेज, डालमियानगर, (बि.); पंकज कोठारी, १६, एच-३, आनंद कालोनी, रतलाम (म.प्र.); ३. माला पाल, १२, राजगंज, जि. धनबाद; ४. राजीव रंजन, १६, नकछेद टोला, गोशाला रोड, मोतिहारी (बि.); ५. सौरभ अस्थाना, १५, १२२/५४० सिंधी कालोनी, शास्त्रीनगर, कानपुर; ६. सुशीलकुमार वर्मा, ११, रामचंद्र लेन, अपर बाजार, रांची (बि.); ७. त्रिदीप अग्रवाल, १४, एम-३६, डब्लू.जेड,-९८, हरिनगर, दिल्ली; ८. प्रीतेश सौरभ, ११, द्वारा प्रभातकुमार सिन्हा, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड, बुद्ध कालोनी, पटना; ९. सौरभ वार्ष्णेय, १६, पुराना बाजार, सुनार गली, बहजोई, मुरादाबाद; १०. धीरज अग्रवाल, १५ डी. ११, सैक्टर-१०, कोयलानगर, बी.सी.सी.एम. धनबाद (बि.)।

नंदन ज्ञान पहेली : २६२

परिणाम



इस बार सर्वशुद्ध हल किसी प्रतियोगी का नहीं आया। शायद मेहनत में कुछ कसर रह गई। एक और दो गलती वाले विजेताओं में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

एक गलती : २ : प्रत्येक को १०० रुपए।

१. तमन्ना, विकासपुरी, नई दिल्ली; २. नागेश पांडेय, खुटार, जि. शाहजहांपुर।

दो गलती : १६ : प्रत्येक को ५० रुपए।

१. सिद्धार्थ तुंगारे, इंदौर; २. नीरजकुमार गुप्ता, झांसी; ३. हेमलता मोदी, कटक; ४. गजानन खैरनार, मंडलेश्वर (म.प्र.); ५. मक्खनलाल गुप्ता, बस्ती; ६. मीना बावने कोठा, खंडवा; ७. सीमा शर्मा, जयपुर; ८. निशाकुमारी, धनबाद; ९. महिमा अग्रवाल, मुरादाबाद; १०. हिमांशुकुमार, सिवान; ११. हिमांशु जौहरी, देहरादून; १२. मीशू अग्रवाल; अलीगढ़; १३. विकास गुप्ता, कलकत्ता; १४. कमलकिशोर, लखीमपुर खीरी; १५. मनीषकुमार, रायपुर; १६. प्रवीणकुमार अरोड़ा, मुजफ्फरनगर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


RADEUS/AMC/036/90-HIN
Amul MILK CHOCOLATE
बदमाश मोटू के लिए
Amul CRISP MILK CHOCOLATE
रोती पिंकी के लिए
Amul FRUIT & NUT MILK CHOCOLATE
शैतान घोटू के लिए
Amul MILK CHOCOLATE ORANGE FLAVOURED
प्यारी प्रीति के लिए
Amul Badambar
चम्चे चिंटू के लिए
Amul CRUNCH
मेरी टीचर के लिए
Amul MILK CHOCOLATE ORANGE
Amul CRISP
Amul MILK CHOCOLATE
यह सारे मेरे लिए
अमूल चॉकलेट–प्यार की मीठी भेंट
वितरक–
रात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
शन लिमिटेड,
३८८ ००१.

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

